वहाबी, देवबंदी और तबलीगी जमाअत के

हकीमुल उम्मत मौलाना थानवी साहेब की

इल्मी सलाहियत

:: लेखक ::

मुनाज़िरे अहलेसुन्नत, माहिरे रज़वीयात

अल्लामा अब्दुस्सतार हमदानी 'मसरूफ' (बरकाती-नूरी)

वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के

हकीमुल उम्मत मौलाना थानवी की

इल्मी सलाहिय्यत

: मुसन्निफ :

मुनाज़िरे एहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात,

अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी " मस्रूफ "

(बरकाती, नूरी)

: नाशिर :

मरकज़े एहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अहमद रज़ा रोड, पोरबन्दर - गुजरात

मोबाइल : 9879303557

किताब का नाम	:	वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलाना थानवी की इल्मी सलाहिय्यत
मुसन्निफ	:	मुनाज़िरे एहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात, अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी " मस्रूफ "
तख़रीज व तस्हीह	:	मुफ्ती अन्वार अहमद साहब बगदादी
कम्पोज़िग	:	हाफिज़ इमरान हबीबी. (अहमदआबाद)
प्रुफ रीडींग	:	हाजी शब्बीर अब्दुस्सत्तार हमदानी
ता'दाद	:	११०० (ग्यारह सौ)
सने इशाअत	:	अप्रेल. २०१०
नाशिर	:	मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा. पोरबन्दर
बा एहतमाम	:	हाजी तौसीफ अब्दुस्सत्तार हमदानी. पोरबन्दर

किताब हासिल करने के मक़ामात

(1) दारूल उलूम गौषे आज़म, पोरबन्दर - 360575

(2) मुहम्मदी बुक डिपो, मटिया महल, दिल्ली - 6

(3) कुतुबखाना अमजादिया, मटिया महल, दिल्ली - 6

(4) अरशी सारी सेन्टर, हैदराबाद (A.P)

फहेरिस्ते मज़ामीन

नम्बर		
1	अर्ज़े नाशिर - अज़ अल्लामा अरशद अली जीलानी, बरकाती.	
2	इब्तिदा - अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी, बरकाती, नूरी.	
3	" तक़दीम ".	
4	थानवी साहब ने दर्सी किताबों के सिवा और कोई किताब नहीं पढी थी.	
5	कुछ याद न रहता था, इसी लिये मुतालआ नहीं किया.	
6	इल्मे फिक़्ह से कभी मुनासेबत व महारत हुई ही नहीं.	
7	नमाज़ में سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ गलत पढना.	
8	नमाजे ईद में तर्के वाजिब का मस्अला याद नहीं था.	
9	अपने ख़लीफ़ए ख़ास को भी मस्अला न बताया.	
10	मसाइल याद नहीं, मैं ख़ुद ओलमा से पूछ कर अमल करता हूँ.	
11	नमाज़े जनाज़ा में जा नमाज़ (मुसल्ला) माँगना.	
12	मेरी लिखी हुई इबारतें ख़ुद मेरी ही समझ में नहीं आतीं.	
13	पीछला लिखा हुवा याद नहीं.	
14	मफ्क़ूदुल ख़बर के मुतअल्लिक़ एक साल तक रिसाला तैयार न हो सका.	
15	ज़हेन भी ज़ईफ हाफिज़ा भी ज़ईफ.	
16	इल्मे फिक़्ह सब से ज़ियादा मुश्किल - डरना.	
17	बम्बई में हज क्यूं नहीं होता ?	
18	देहात में जुम्आ के मुतअल्लिक़ अजीब जवाब.	
19	नाक मुँह पर क्यूँ है ? पुश्त पर क्यूँ नहीं ?	
20	मैं आपको इम्तिहान देना नहीं चाहता.	
21	सूद क्यूँ हराम है ? का जवाब ज़िना क्यूँ हराम है ?	

फहेरिस्ते मज़ामीन

नम्बर		
22	इतनी तरी न चाहिये कि उस में डूब जाए.	
23	कलेक्टर से मस्अला पूछो, मुझ से ज़ियादा मोअज़्ज़ज़ वोह है.	
24	सवाल अनिल हिक्म में क्या हिक्मत है ?	
25	एक मज़ीद हवाला.	
26	क्या कव्वा खाओगे ?	
27	जाहिल मुजद्दिद को हुज़ूरे अक़्दस के फज़ाइल याद न थे.	
28	सवाल करने वाले को डाँटना और ज़लील करना.	
29	कव्वे की क़िस्में पूछने वाले से केहना कि तुम कौन सी क़िस्म के हो, येह	
	मालूम है.	
30	क्या रिसाला तस्नीफ करना है ?	
31	मेरे फे'ल की दलील क्यूँ दरयाफ्त करते हो.	
32	मेरे मुजद्दिद होने की दलील नहीं, लिहाज़ा मुजद्दिद हूँ.	
33	ब हैसियत मुजद्दिद ऐसा कारनामा अन्जाम दिया है कि अब सदियों तक	
	मुजद्दिद की ज़रूरत नहीं !!!	
34	एक अहम और गौर तलब सवाल.	
35	अगर हनफी मज़हब में जाइज़ नहीं, तो शाफई मज़हब पर जाइज़ होने का	
	फत्वा !!!	
36	उम्र कम दिखा कर नौकरी हासिल करने के लिये ख़िज़ाब लगा कर धोका	
	देना जाइज़ है !!!	
37	हालते नमाज़ में उगालदान उठा कर थूकना.	
38	तुम्हारी औरतें बे पर्दा आ सकती हैं.	

फहेरिस्ते मज़ामीन

नम्बर		
39	वज़ीर ज़ादी को बे पर्दा आने दो, मैं अपनी आँखें नीची रखूँगा.	
40	अगर ज़रूरत समझो तो रिश्वत ले लो, इजाज़त है.	
41	नुक़्सान से बचने के लिये झूट बोलना जाइज़ है !!!	
42	सूद ले लो, फिर आ कर मस्अला पूछो.	
43	बक़ौल गंगोही साहब थानवी साहब को बिदअत का मफ्हूम ही मालूम नहीं.	
44	मसादिर व मराजेअ.	

अर्ज़े नाशिर

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ وَ نُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم

तहरीर व क़लम की अहमिय्यत व इफ़ादियत हर दौर में मुसल्लम रही है. और वहीए इलाही की इब्तीदाई आयात में "علّم بالقلم" फरमाकर क़लम की अज़्मत व वकअत की तरफ इशारा फ़रमाया है. और इस्लाम की इशाअत व फरोग में भी **''जिहाद बिल क़लम''** को असासी हैसियत हासिल है. हत्ताकि आज हमारे पास भी इस्लाम की ता'लीमात फक़त तेहरीरी शक्ल में मौजूद है, हमारे अस्लाफ सहाबए किराम से लेकर माज़ी क़रीब के मुअज़्ज़ज़ उलमाए किराम ने आखरी साँस तक जिहाद बिल क़लम फरमाकर हम सब के लिए लाइक़े तक़्लीद कारनामा अन्जाम दिया है. गुज़श्ता हिजरी के **मुजद्दिदे बरहक़ इमामे एहले सुन्नत, आ'ला हज़रत मोहद्दिसे बरैल्वी** अलहिर्रहमा ने अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्हात को लौहो क़लम के ज़रीए हज़ारों सफहात पर तस्नीफात व तहरीरात का ईमान अफरोज़ सरमाया उम्मते मुस्लिमा को अता फरमाकर पूरी उम्मत पर एहसाने अज़ीम फरमाया. उन का येह कारनामा रहती दुनिया तक क़ाइम रहेगा, انشاءاللہ.

आज चहार जानिब दुश्मनाने इस्लाम व सुन्नियत अपनी अपनी बातिल तहरीरों को आम करके उम्मते मुस्लिमा को गुमराहियत की घटाटोप तारीकी में पहुँचाने की कोशिश में सरगर्मे अमल हैं. इन हालात से निमटने के लिए ज़रूरी है कि आ'ला हज़रत मोहक़्क़िक़े बरैल्वी अलहिर्रहमा और एहले सुन्नत व जमाअत के अज़ीम उलमा और मुहक़्क़ीन की ता'लीमात व तस्नीफात को नीज़ अस्लाफे किराम के अफ्कार व नज़रियात को आम कर दिया जाए.

सूबए गुजरात के शहर पोरबन्दर में इनही हालात के पैशे नज़र **''मर्कज़े एहले सुन्नत बरकाते रज़ा''** की दाग बेल डाली गई. जिस के बानी व मुअस्सिस **मुनाज़िरे एहले सुन्नत, अल्लामा अब्दुस्सत्तार हमदानी** हैं, जो खुद भी एक अज़ीम मुसन्निफ, शो'ला बयान मुक़र्रिर और मुनाज़िर की हैसियत से अवाम व खवासे एहले सुन्नत के मा बैन मुतआरिफ हैं. आप **सय्यदी सरकार मुफ्तीए आ'ज़मे हिन्द** अलैहिर्रहमा से बैअत व इरादत और खिलाफत रखते हैं, सय्यदी आ'ला हज़रत से सच्ची अक़ीदत व महब्बत के साथ आपके मस्लक और मिशन को फैलाने की जद्दो जहद में लगे रहते हैं.

मर्कज़े एहले सुन्नत मुख़्तसर अरसे में **265** किताबें शाएअ करके दसियों मुल्क में पहुँचा चुका है, जो ज़ियादातर अरबी ज़बान में हैं, और इसके अलावा उर्दू, अंग्रेज़ी, फारसी, हिन्दी, गुजराती और मलयालम ज़बान में भी हैं. इन किताबों में ज़ियादा तर वोह किताबें हैं जो या तो आ'ला हज़रत की अरबी तस्नीफात थीं या फिर आपकी उर्दू तस्नीफात को अरबी जामा पहनाया गया, फिर उनको तहक़ीक़ व तख़रीज से आरास्ता किया गया, इसके अलावा अस्लाफे किराम की अरबी तस्नीफात को जदीद कम्पोज़िंग और दीदहज़ेब टाइटल से मुज़य्यन करके अरब शुयूख़ तक पहुँचाया गया जिसके ख़ातिरख़्वाह नताइज काफी हद तक सामने आ चुके हैं.

मर्कज़े एहले सुन्नत के मत्बूआत में मुन्दरजए ज़ैल किताबें क़ाबिले ज़िक्र हैं :

(١)الفتاوى الرضوية (٣٠ جلدیں)(٢)الدولة المكية(٣) انباء الحى(٤) شرح فتح القدير(زمخشرى)(٥) الشفاء بتعريف حقوق المصطفى(٦) نسيم الرياض(٧) تفسير الكشاف(٨) شرح صحيح مسلم(٩) تفهيم البخارى شرح صحيح البخارى(١٠) أخطأ ابن تيميه(١١) فتاوى ابن تيميه فى الميزان(١٢) تبيين الحقائق شرح كنز الدقائق(١٣) تجلى اليقين بأن نبينا سيد المرسلين(١٤) فتح المغيث(١٥) بدائع الصنائع فى ترتيب الشرائع(١٦) الزبدة الزكية لتحريم سجود التحية(١٧) الصواعق الإلهية فى الرد على الوهابية(١٨) كتاب الفقه على المذاهب الأربعة(١٩) المقاصد الحسنة، (٢٠) صفوة المديح (حدائق بخشش کا عربی منظوم ترجمہ)(٢١) الهاد الكاف فى حكم الضعاف (٢٢) المدح النبوى بين الغلو الإنصاف (٢٣) المنظومة السلامية(٢٤) النصيحة لاخواننا علماء نجد، وغيره

मर्कज़े एहले सुन्नत की इस अज़ीम ख़िदमत अन्जामदेही के लिये आलमे इस्लाम की अज़ीम दानिशगाह ''**अज़हर यूनिवर्सिटी, मिस्र**'' के उलमा और फारिगीन हमारे शाना ब शाना हैं, हम उन के तहे दिल से शुक्र गुज़ार हैं.

मर्कज़े एहले सुन्नत जहां एक तरफ मस्लके आ'ला हज़रत की तरवीजो इशाअत में हमातन मस्रूफ है, वहीं दूसरी जानिब इमामे एहले सुन्नत आ'ला हज़रत पर चस्पाँ किये जाने वाले हर हर ए'तेराज़ का दन्दाँ शिकन जवाब भी दे रहा है, और मुम्किन हद तक मस्लकी देफा व तहफ्फुज़ में कोई कसर बाक़ी नहीं रखी जा रही है।

ज़ेरे नज़र किताब ''**वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत थान्वी साहब की इल्मी सलाहिय्यत**'' भी इसी

सिल्सिले की एक मज़्बूत कडी है, जो अल्लामा हम्दानी साहब की मस्लकी देफा में एक बेहतरीन तस्नीफ है, जिस में आपने अशरफ अली थान्वी साहब को एक बे इस्ति'दाद मौलवी ज़ाहिर किया है, और येह بحمداللہ देवबन्दी मक्तबए फिक्र की किताबों और इबारतों से मुबरहन है. और दूसरी जानिब येही दुश्मनाने एहले सुन्नत थानवी साहब को अपना इमाम व पेश्वा यहाँ तक कि इस सदी का मुजद्दिद तस्लीम करते हैं.

आप इस किताब में मुलाहेज़ा फरमाएँगे कि अशरफ अली थान्वी साहब किस क़दर इल्म व फज़्ल से कोरा थे, और हज़रत हम्दानी साहब ने उनके मुत्तबईन के दा'वए मुजद्दिदियत को किस क़दर खोखला कर दिया है.

मौलाए करीम उनके इल्म व फज़्ल और उम्र व सहत में मज़ीद बरकतें अता फरमाए. और हम सबको बाहमी इत्तेफाक़ और इख़्लास के साथ दीनो सुन्नियत और क़ौमो मिल्लत की ख़िदमत करने की तौफीक़े रफीक़ मर्हमत फरमाए. आमीन

तालिबे दुआ
अर्शद अली जीलानी
मर्कज़े एहले सुन्नत बरकाते रज़ा
इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमनवाड
पोरबन्दर (गुजरात)

मुअर्रिखा : 24/ रजबुल मुरज्जब 1429 हि.
मुताबिक़ : 28/ जुलाई 2008 ई.
बरोज़ : पीर

इब्तिदा

بسم الله الرحمن الرحيم نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ وَ نُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْم

الصلاة والسلام عليك يا رسول الله الصلاة والسلام عليك يا حبيب الله

الحمدلله! आज मुअर्रिखा 26 सफरुल मुज़फ्फर 1429 हि. मुताबिक़ 5 मार्च 2008 ई. बरोज़ सेह शम्बा अफ्ज़लुल बेलाद व ख़ैरुल बेलाद फिल हिन्द अजमेर मुक़द्दस हाज़िर हुवा. हाज़री का सबब एहले सुन्नत व जमाअत के मर्कज़ी इदारे **''दारुल उलूम रज़ाए ख़्वाजा''** के लिये ख़रीदी गई ज़मीन की रजिस्ट्री के सिल्सिले में रजिस्टार ऑफिस में दस्तख़त करने के लिये था. इन तमाम उमूर से फारिग होने के बाद सब से पहले मैंने शहज़ादए सरकार अहसनुल उलमा, गुलिस्ताने बरकात के शादाब फूल, रहबरे शरीअत व तरीक़त, शैख़ुल मशाइख़, **हज़रत क़िब्ला डॉक्टर मुहम्मद अमीन मियाँ साहब** दामत बरकातुहुमुल आलिया, सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे आलिया क़ादरिया बरकातिया, मारेहरा मुतह्हरा से ब ज़रीयए टेलीफोन राब्ता क़ाइम करके ज़मीन की रजिस्ट्री के कागज़ात के तकमील की इत्तिलाअ दी और येह अर्ज़ मज़ीद की कि आज मेरा इरादा **सुल्तानुल हिन्द, भारत के शहेनशाह, मम्बए फ़ुयूज़ो बरकात, अताए रसूल, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती सन्जरी, सरकार गरीब नवाज़** रदियल्लाहु अन्हु व अरदाहु अन्ना के मुक़द्दस आस्तानए जन्नत निशान में बैठ कर अपनी नई तस्नीफ की इब्तिदा करने का है, लिहाज़ा आप अपनी मख़्सूस दुआओं के साथ इजाज़त मर्हमत फरमाएँ, फक़ीर की गुज़ारिश को शरफे क़बूलियत से नवाज़ते

हुए हज़रत क़िब्ला सरकार अमीने मिल्लत ने दुआओं से नवाज़ते हुए दिली मसर्रत का इज़हार फरमाया.

बा'दहू शहज़ादए हुज़ूर अहसनुल उलमा, गुले गुलज़ारे ख़ानदाने बरकात, रफीक़े मिल्लत, मुर्शिदे इजाज़त, **हज़रत क़िब्ला सय्यद नजीब हैदर साहब** दामत बरकातुहुमुल आलिया से भी ब ज़रीए टेलीफोन यही इत्तेलाअ दी और यही गुज़ारिश की. जवाबन हज़रत की दुआओं की मूसलाधार बारिश और तन मन नहा उठे.

लिहाज़ा ! बाद नमाज़े इशा **सरकार ख़्वाजा गरीब नवाज़** रदियल्लाहु तआला अन्हु व अरदाहु अन्ना के आस्ताने के इहातए ख़ैरो बरकत व नूर में आपकी पाएँती की तरफ **हज़रत क़िब्ला सय्यद साबिर मियाँ चिश्ती** गद्दी नशीन की **''गद्दी शरीफ''** में हज़रत के साहबज़ादे हज़रत सय्यद चिश्ती हसन और हज़रत शाह महमूद चिश्ती के दामन के ज़ेरे साया मअ हज़रत अल्लामा जान मुहम्मद साहब नक़्शबन्दी ख़तीबो इमाम सन्दली मस्जिद, इहातए दरगाह मुअल्ला, अजमेर शरीफ मेरी नई तस्नीफ या'नी एक सौ सत्तरहवीं तस्नीफ ब नाम **''वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलाना थानवी की इल्मी सलाहिय्यत''** की इब्तिदा करदी है और आक़ाए ने'मत, सरापा लुत्फो इनायत, सुल्तानुल हिन्द, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रदियल्लाहु तआला अन्हु के फैज़ो करम से सिर्फ उम्मीद ही नहीं बल्कि यक़ीने कामिल है कि इन्शाअल्लाह तआला व इन्शा हबीबी صلی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیٰ آلہ واصحابہ येह किताब बहोत ही जल्द पायए इख़्तिताम को पहुँच कर नफा बख़्श आमो ख़ास और मक़्बूल इन्दल्लाह व रसूलुह वन्नास होगी.

अल्लाह तबारक व तआला अपने हबीबे आज़म व अकरम

सल्लल्लाहु तआला अलयहि वसल्लम के सदके़ व तुफ़ैल तमाम मुसलमान एहले सुन्नत व जमाअत को ईमान की पुख़्तगी के साथ तसल्लुब फिद्दीन का जज़्बए सादिक़ अता फरमाए और इसी राहे मुस्तक़ीम पर ज़िन्दगी की आखरी साँस तक मज़बूती से क़ाइम रखते हुए ईमान की मौत अता फरमाए.

आमीन - सुम्मा आमीन

फक़त वस्सलाम

खानक़ाहे आलिया क़ादिरिया बरकातिया-मारेहरा मुतह्हरा
और
ख़ानक़ाहे आलिया रज़विया नूरिया, बरेली शरीफ
का अदना सवाली
अब्दुस्सत्तार हम्दानी ''मस्रूफ'' बरकाती, नूरी

नज़ील अजमेर शरीफ
मुअर्रख़ा : 26- सफरुल मुजफ्फर
1429 हि.
मुताबिक़ : 5 मार्च 2008 ई.
बरोज़ : सेह शम्बा

दस्तख़त बतौरे तबर्रुक :

(1) ख़ाक नशीन आस्तानए गरीब नवाज़ सय्यद चिश्ती हसन

(2) शाह महमूद

(3) ख़ान मुहम्मद नक़्शबन्दी, इमामे मस्जिद सन्दलख़ाना, अजमेर शरीफ

" तक़दीम "

दुनिया की हर क़ौम का ज़मानए क़दीम से येह दस्तूर रहा है कि वोह अपने पेश्वा की ता'रीफ व तौसीफ में हद दरजा कोशाँ रह कर किसी क़िस्म की कसर बाक़ी नहीं रहने देती बल्कि कभी कभी सिद्क़ो सदाक़त के दामन से हाथ झटक कर गुलू की आ'ला से आ'ला मन्ज़िल तक पहुँच कर किज़्बे सरीह और सरासर गलत बयानी के गहरे समन्दर में गोताज़नी करने में भी किसी क़िस्म की आर व हया महसूस नहीं करती, बल्कि बे शर्मी और बे हयाई की जदीद से जदीद तर मिसालें पैश करने में फख़्र करती है. ऐसी कई मिसालें पैश की जा सकती हैं कि फासिक़ व फाजिर को मुत्तक़ी व परहेज़गार, रहज़न व ख़ाइन को अमानतदार, ज़ालिम व जाबिर को हमदर्दे क़ौम, बद अख़्लाक़ व बद किरदार को अख़्लाक़े हसना का पैकरे जमील, फाहिश को पाकदामन, रहज़न को रहबर, अनपढ़ को आलिम, जाहिल को फाज़िल, अजहल को अल्लामा, शैतान को इन्सान, दज्जाल को मज़हब का ठेकेदार, कम अक़्ल को दाना, रज़ील को मुहज़्ज़ब और कमज़र्फ को बुर्दबार साबित करने की कोशिश व सई में सच और रास्ती को बालाए ताक़ रखकर **''अन्धा बांटे रोटियाँ हिरफिरके अपनों ही को दे''** वाली मिस्ल पर ख़ूब अमल किया गया है.

हैरत और तअज्जुब की बात तो येह है कि अपने पेश्वा की झूट पर मब्नी ता'रीफ के पुल बाँधने के लिये ऐसी ऐसी मुज़हिक दलीलें पेश की जाती हैं कि सुननेवाला हँसते हँसते लोट हो जाता है. ऐसी बे महल व बे मौक़अ दलील होती है कि अक़्ल भी हैरत में पड जाती है. जब इस क़िस्म का तर्ज़े अमल मज़हबी पेश्वाओं के मआमले में अपनाया जाता है, तब ऐसा सदमा पहुँचता है कि उसके तदारुक की सबील नज़र नहीं आती.

हाल ही में मेरे मुतालए में वहाबी, देवबन्दी, तब्लीगी जमाअत के मशहूर मुसन्निफ डॉक्टर मौलवी ख़ालिद महमूद, एम-ए, पी-एच-डी, की तस्नीफ कर्दा किताब "**मुतालए बरैलवियत**" आई, आठ मब्सूत जिल्दों में कसीरुत्ता'दाद सफहात पर मुश्तमिल डॉक्टर ख़ालिद महमूद की इस वसी काविश को देख कर ऐसा लगता है कि **शायद देवबन्दी फाज़िल ने किज़्ब व दरोग गोई में ही डॉक्टरियत की डिग्री हासिल की है.** क्यूँकि इमामे इश्क़ो महब्बत, आ'ला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, मुजद्दीदे दीनो मिल्लत, इमामे एहले सुन्नत, शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, **इमाम अहमद रज़ा मोहक़्क़िक़े बरैल्वी** अलैहिर्रहमतु वर्रिदवान की ज़ाते सतूदा सिफात को दागदार करने के लिये उन्हों ने झूट, किज़्ब, फरेब, दरोग, छल, मुगालज़ा, मक्र, इल्ज़ाम, इत्तिहाम, बोहतान, तोहमत और इफ्तिरा का जिस कसरत से कीचड़ उछाला है, येह उनकी विरासती मिल्क की फनकारी की शान है. इमाम अहमद रज़ा मोहक़्क़िक़े बरैल्वी अलैहिर्रहमतु वर्रिदवान की शख़्सियत को मजरूह करने के साथ साथ मुसन्निफ ने वहाबी, तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत व पेश्वा मौल्वी अशरफ अली साहब थान्वी की इल्मी सलाहियत का लोहा मन्वाने के लिये अपने किज़्ब बयानी के फनकी महारत के भी जल्वे दिखाए हैं.

किताब "**मुतालए बरैलवियत**" ऐसे ख़तरनाक अन्दाज़ में तस्नीफ की गई है कि वहाबी देवबन्दी मक्तबए फिक्र और एहले सुन्नत व जमाअत बरैल्वी मक्तबए फिक्र के मा बैन उसूली अक़ाइदी इख़्तिलाफ की कामिल मा'लूमात न रखनेवाला और कम पढ़ा लिखा शख़्स मुसन्निफ के किज़्ब बयानी के जादू से धोका खा जाएगा. क्यूँकि मुसन्निफ ने बे महल व मौक़ा इबारत नक़्ल करके उस का मन चाहा

मतलब व मफ्हूम बयान करके, उस के ज़िम्न में बुग्ज़ो इनाद पर मुश्तमिल अपनी राय लिखने के बाद इफ्तिरा परदाज़ी और इत्तिहाम तराज़ी की ऐसी बोछाड की है कि पढ़ने वाले का ज़हन ऐसा बे हिस और माओफ हो जाता है कि दौराने मुतालेआ आरज़ी तौर पर सिद्क़ व किज़्ब के इम्तियाज़ का एहसास मफ्क़ूद हो जाता है और वोह ना दानिस्ता बद गुमानी का शिकार हो जाता है.

"**मुतालए बरैलवियत**" किताब के मुसन्निफ ने इमामे इश्क़ो महब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी के ख़िलाफ ज़हर उगलने में दरोग गोई और किज़्ब बयानी की तमाम सरहदें उबूर करके काज़िबीन की सफे अव्वल में अपना मक़ाम मुअय्यन कर लिया है. राक़िमुल हुरूफ ने उन की तस्नीफ का ब नज़रे अमीक़ मुतालेआ किया, तो येह हक़ीक़त सामने आई कि मुसन्निफ ने एक मुनज़्ज़म साज़िश के तहत इमामे इश्क़ो महब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी के दामन को दागदार करने की कोशिश की है. लिहाज़ा मुसन्निफ के ज़रीए आइदकर्दा तमाम ए'तेराज़ात व इल्ज़ामात का मुफस्सल व मुदल्लल तरदीदी जवाब लिखना वक़्त की अहम ज़रूरत है. इसी ज़रूरते दीनी के पेशे नज़र "**मुतालए बरैलवियत**" के जवाब की पहली क़िश्त आपके हाथों में है. और येह जवाब भी एक मुस्तक़िल किताब की शक्ल में है. इन्शाअल्लाह तआला व इन्शा हबीबिह जल्लजलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हर ए'तेराज़ व इल्ज़ाम का मुस्तक़िल किताब की सूरत में जवाब दिया जाएगा.

"**मुतालए बरैलवियत**" किताब के जवाब की क़िस्त अव्वल ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए और क़ारईने किराम और ख़ास कर मुतालए बरैलवियत के मुसन्निफ की ज़ियाफते तबअ की ख़ातिर थानवी

साहब की इल्मी सलाहिय्यत के तअल्लुक़ से दिया जा रहा है. क्यूँकि मुसन्निफ ने अपनी किताब में उन्वान से हटकर और बे महल व मौक़अ थानवी साहब की ता'रीफ व तौसीफ में ज़मीन आस्मान के कुलाबे मिला दिये हैं. हैरत तो इस बात पर है कि थानवी साहब की इल्मी जलालत का सिक्का बिठाने के लिये और थानवी साहब की इल्मी सलाहिय्यत का लोहा मनवाने के लिये मुसन्निफ ऐसी कमज़ोर व लागर दलीलें लाए हैं कि जिसका कोई वज़्न ही नहीं, मा'मूली सी तफ्तीश के हवाके झौंके से घास के तिन्के की तरह उड कर बिखर जाए ऐसी दलील पेश करके मुसन्निफ साहब बन्द लफ्ज़ों में थानवी साहब की इल्मी बे बिज़ाअती का ए'तेराफ कर रहे हैं.

पाकिस्तान नाम के नए मुल्क की तश्कील में नुमायाँ किरदार अदा करनेवाले मश्हूर व मा'रूफ सियासी लीडर **जनाब मुहम्मद अली जिन्नाह साहब** कि जिनकी ज़िन्दगी का हर लम्हा सिर्फ और सिर्फ दुन्यवी ता'लीम के हुसूल, बा'दहू वकालत के पेशे की महारत और फिर ज़िन्दगी की आख़री साँस तक सियासत की तहरीक, तश्कीले पाकिस्तान की जद्दो जहद और क़यामे पाकिस्तान के बाद निज़ाम व निफाज़े अहकामाते मुल्क में सर्फ हुवा. जनाब मुहम्मद अली जिन्नाह साहब मज़कूरा उमूर में इस क़दर मुन्हमिक और मस्रूफ रहे कि उन्हें दीनी व मज़हबी उमूर की ता'लीम व उमूर की तरफ इल्तिफात करने का मौक़ा ही मयस्सर नहीं हुवा और उन्हें दीनी मज़हबी ता'लीम के हुसूल का शौक़ भी नहीं था. लिहाज़ा उन्हों ने मज़हबी ता'लीम में कभी भी दिलचस्पी नहीं ली और उन की ज़िन्दगी में कोई ख़ुश आइन्दा हादसा भी नहीं आया कि जिसके तुफैल व सबब उन्हें मज़हबी ता'लीम की तरफ रग्बत, तवज्जोह, शौक़, रुज्हान या मैलान हो, जब से जनाब

मुहम्मद अली जिन्नाह साहब को मुस्लिम लीडर व क़ाइद व रहनुमा की हैसियत से शोहरत हासिल हुई है, तब से इन्तिक़ाल तक वोह हमा वक़्त सिर्फ और सिर्फ सियासत ही में मश्गूल रहे. अलबत्ता वोह मुख़ालिफ मक्तबए फिक्र के मज़हबी पेश्वाओं से रब्त व ज़ब्त और शनासाई रखते थे लैकिन येह मेल मिलाप सिर्फ सियासी उमूर के तहत और सियासी अगराज़ व मक़ासिद के लिये ही था. अल हासिल ! जनाब मुहम्मद अली साहब में कोई ऐसी मज़हबी इल्मी सलाहिय्यत क़त्अन न थी कि वोह किसी आलिमे दीन का मे'यार नाप सकें या किसी मज़हबी पेश्वा की इल्मी सलाहिय्यत का अन्दाज़ा लगा सकें.

लैकिन हैरत व तअज्जुब की बात येह है कि ''**मुतालए बरैलवियत**'' के मुसन्निफ ने अपनी किताब में वहाबी, देवबन्दी, तब्लिगी जमाअत के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थान्वी की इल्मी जलालत का परचम लहराने के लिये तेहरीके क़यामे पाकिस्तान के क़ाइद, जनाब मुहम्मद अली जिन्नाह साहब का दामन थामा और यहाँ तक लिख दिया कि:

''قائداعظم کے تاثرات حضرت حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی اور شیخ الاسلام مولانا شبیر احمد عثمانی کے بارے میں بہت عمدہ تھے، حضرت مولانا تھانوی کے بارے میں قائداعظم کہا کرتے تھے کہ ہندوستان کے سارے علماء کا علم ایک طرف رکھیں اور تنہا مولانا تھانوی کا علم دوسری طرف، تو مولانا تھانوی کا پلڑا جھک جائے گا۔ مسلم لیگ کے جلسوں میں اشرف علی زندہ باد کے نعرے لگتے تھے اور تحریک پاکستان میں عظمت اسلام کا نشان مولانا شبیر احمد عثمانی کو سمجھا جاتا تھا، یہ صورت حال بریلویوں کے لیے ناقابل برداشت تھی۔''

حوالہ: مطالعۂ بریلویت، مصنف: ڈاکٹر علامہ خالد محمود، جلد:۱، ص:۱۰۶، ناشر: حافظی بک ڈپو، یوبند، یو-پی

हिन्दी अनुवाद

''क़ाइदे आ'ज़म के तअस्सुरात हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ अली थान्वी और शैख़ुल इस्लाम मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी के बारे में बहुत उम्दा थे, हज़रत मौलाना थान्वी के बारे में क़ाइदे आ'ज़म कहा करते थे कि हिन्दुस्तान के सारे उलमा का इल्म एक तरफ रखें और तन्हा मौलाना थान्वी का इल्म दूसरी तरफ, तो मौलाना थान्वी का पलडा झुक जाएगा. मुस्लिम लीग के जल्सों में अशरफ अली ज़िन्दाबाद के ना'रे लगते थे और तेहरीके पाकिस्तान में अज़्मते इस्लाम का निशान मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी को समझा जाता था, येह सूरते हाल बरैल्वियों के लिये ना क़ाबिले बरदाश्त थी.''

हवालाः मुतालए बरैल्वियत, मुसन्निफ : डॉक्टर अल्लामा ख़ालिद महमूद, जिल्दः1, स.106, नाशिरःहाफिज़ी बुक डिपो, देवबन्द, यूपी.

सिर्फ मुतालए बरैल्वियत के मुसन्निफ जनाब ख़ालिद महमूद साहब ही नहीं बल्कि वहाबी, देवबन्दी और तब्लिगी जमाअत से मुन्सलिक हर शख़्स थानवी साहब के तबहहरे इल्मी का बुलन्द आवाज़ से कसीदा ख़्वानी में रत्बुल्लिसान है और बडे फख़्र से थानवी साहब को ''**मुजद्दिद**'' और ''**हकीमुल उम्मत**'' के लक़ब से मुलक़्क़ब करता है. बाज़ देवबन्दी हज़रात तो थानवी साहब को चौदहवीं सदी का ही नहीं बल्कि इस उम्मत का सब से बडा आलिम केहते हैं. जब उन से पूछा जाता है कि जनाब जब आप थानवी साहब

को ''**मुजद्दिद**'' तस्लीम करते हैं, तो हर मुजद्दिद का तज्दीदी कारनामा होता है, बराहे करम आप अपने मुजद्दिद थानवी साहब का तज्दीदी कारनामा तो बताएँ ? इस सवाल के जवाब में थानवी साहब के तज्दीदी कारनामे की दलील में वोह लोग थानवी साहब की किताब ''**बहिश्ती ज़ेवर**'' ब तौरे सुबूत पेश करते हैं. इलावा अज़ीं हर देवबन्दी मक्तबए फ़िक्र के मदारिस में, तक़ारीर में, मवाइज़ व ख़िताबत में, अख़्बारात व रसाइल में बल्कि टीवी और इन्टरनेट में थानवी साहब के इल्म की बुलन्दी की डींग हांकने में जो काज़िबाना तर्ज़े अमल इख़्तियार किया जाता है, इस से हर इन्साफ पसन्द को क़ल्बी क़लक़ व इज़्तिराब होता है. ना वाक़िफ़ हज़रात ऐसे गलत और दरोग गोई पर मुश्तमिल प्रोपेगन्डा (Propaganda) के दामे फरेब में फँस जाते हैं और थानवी साहब की इल्मी सलाहिय्यत के मो'तरिफ व क़ाइल हो जाते हैं.

अब सवाल येह पैदा होता है कि क्या थानवी साहब वाक़ई ज़बरदस्त आलिम थे ? क्या उनका इल्म तमाम मुल्क के इल्म के मजमूए पर भी फाइक़ था ? क्या वोह वाक़ई इतने वसीअ इल्म के हामिल थे कि उन का शुमार मुजद्दिदीन में किया जा सके?

इस सवाल के जवाब में सिर्फ इतना ही अर्ज़ करना है कि अब आप हैरत अंगेज़ हक़ीक़त का इन्किशाफ करने के लिये ब नज़रे अमीक़ और यक सूई से इस किताब के मुतालए में मुन्हमिक हो जाएँ, जैसे जैसे अवराक़ गरदानी फरमाते जाएँगे और आप को आफ्ताब नीम रोज़ की तरह रौशन हक़ीक़त नज़र आ जाएगी, बल्कि यूँ कहने में भी कोई मुबालेग़ा आराई नहीं कि थानवी साहब की इल्मी सलाहिय्यत के बजाए जानेवाले ढोल का पोल दिखाई देगा.

एक ज़रूरी अम्र की तरफ़ भी क़ारईने किराम की तवज्जोह

मुल्तफित करना अशद्द ज़रूरी है कि इस किताब में हमने जितने भी हवाले दर्ज किये हैं, वोह तमाम के तमाम वहाबी देवबन्दी और तब्लीग़ी जमाअत के मक्तबए फिक्र की ही शाएअ कर्दा और उलमा देवबन्द में सफे अव्वल का और अहम मक़ाम रखने वाले मुसन्निफीन की कुतुब से ही अख़्ज़ किये हैं, ताकि जिसकी जूती उसके सरवाली मिस्ल पर अमल भी हो जाए और मआनेदीन को येह कहने का मौक़ा भी मयस्सर न हो कि येह मुख़ालिफ गिरोह का इल्ज़ाम व बोहतान है.

अब आइये ! नक़ाबकुशी की पहली सई करते हुए किताब की अवराक़ गरदानी करने की सआदत हासिल करें.

वहाबी देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के

हकीमुल उम्मत

मौलाना थानवी की

इल्मी सलाहिय्यत

“थानवी साहब ने दर्सी किताबों के सिवा और कोई किताब नही पढी थी और दर्सी किताबें भी भूल गए थे.”

हाँ ! येह हक़ीक़त है कि जिसका इन्कार नहीं किया जा सकता, और येह हक़ीक़त खुद थानवी साहब के ही अक़्वाल व मल्फ़ूज़ात से साबित है, येह कोई सुनी सुनाई गैर मो'तबर बात नहीं बल्कि ख़ुद थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात के मजमूए में छुपी हुई हक़ीक़त है. लीजिये! आप भी मुलाहेज़ा फरमाएँ :-

ایک صاحب نے عرض کیا کہ حضرت کوتو علاوہ اور کاموں کے ڈاک ہی کا مستقل کام بہت ہے۔فرمایا نرے ڈاک کے کام سے مجھ پر تعب نہیں ہوتا، البتہ تصنیف کے کام سے تعب ہوتا ہے۔سو تصنیف کا کام اب نہیں ہوتا، تصانیف میں تمام مضامین پر احاطہ کرنا پڑتا ہے، اس لیے تصنیف کا کام بہت بڑا ہے، پہلے دماغ میں تمام مضامین کا جمع کرنا، پھر مرتب کرنا، ان کو محفوط رکھنا، بہت ہی بڑی مشقت کا شغل ہے، ایک سبب تصنیف کی دشواری کا میرے لیے یہ بھی ہے کہ کتابوں پر میری نظر نہیں، درسی کتابوں کے علاوہ اور کتابیں میں نے دیکھیں نہیں، ہاں درسی کتابیں پہلے بحمد اللہ اچھی طرح مستحضر تھیں مگر اب ان میں بھی ذہول شروع ہو گیا، اور تصنیف کے لیے صرف درسی کتابیں کافی نہیں، یہی وجہ ہے کہ میری تصنیفات کا زیادہ حصہ غیر منقولات ہیں۔اول تو میرے پاس کتابیں نہیں اور جو ہیں ان پر نظر نہیں اور تصنیف بدون کتابوں پر نظر ہوئے مشکل ہے، جس کا اب تحمل نہیں۔اسی لیے جو فتاوے آتے ہیں، واپس کر دیتا ہوں، ہاں جواب میں اجمالاً اپنا مسلک ظاہر کر دیتا ہوں اور یہ بھی لکھ دیتا ہوں کہ دیوبند سے معلوم کرلو۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۴، قسط۲۰، صفحہ۷۴، ملفوظ ۹۰۳

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۸، صفحہ۲۹، ملفوظ ۳۷۶ (۴ر شعبان المعظم ۱۳۵۱ھ- شنبہ، بوقت صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक साहब ने अर्ज़ किया कि हज़रत को तो इलावा और कामों के डाक ही का मुस्तक़िल काम बहुत है. फरमाया निरे डाक के काम से मुझ पर तो'ब नहीं होता, अलबत्ता तस्नीफ के काम से तो'ब होता है. सो तस्नीफ का काम अब नहीं होता, तसानीफ में तमाम मज़ामीन का इहाता करना पडता है, इस लिये तस्नीफ का काम बहुत बडा है, पहले दिमाग में तमाम मज़ामीन का जमा करना, फिर मुरत्तब करना, उन को महफ़ूज़ रखना, बहुत ही बडी मुशक़्क़त का शुग्ल है, एक सबब तस्नीफ की दुश्वारी का मेरे लिये येह भी है कि किताबों पर मेरी नज़र नहीं, दर्सी किताबों के इलावा और किताबें मैंने देखी ही नहीं, हाँ दर्सी किताबें पहले बिहम्दिल्लाह अच्छी तरह मुन्हसिर थीं मगर अब उन में भी ज़हूल शुरूअ हो गया, और तस्नीफ के लिये सिर्फ दर्सी किताबें काफी नहीं, येही वजह है कि मेरी तस्नीफात का ज़ियादा हिस्सा गैर मन्क़ूलात हैं. अव्वल तो मेरे पास किताबें नहीं और जो हैं उन पर नज़र नहीं और तस्नीफ बदून किताबों पर नज़र हुए मुश्किल है, जिसका अब तहम्मुल नहीं. इसी लिये जो फतावे आते हैं, वापस कर देता हूँ, हाँ जवाब में इजमालन अपना मस्लक ज़ाहिर कर देता हूँ और येह भी लिख देता हूँ कि देवबन्द से मा'लूम कर लो.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया, अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द:4, क़िस्त 20, सफहा 477, मल्फूज़ 903
(2) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 8, सफहा 297, मल्फूज़ 376 (4, शा'बानुल मुअज़्ज़म 1351 हि. शम्बा, ब वक़्ते सुब्ह की मजलिस)

मुन्दरजए बाला इबारत को ब गौर मुतालेआ फरमाएँ और थानवी साहब के कुव्वते हाफिज़ा को दाद दीजिये, इस इक़्तिबास पर कोई तब्सेरा करने से पहले मज़ीद चन्द हवालों के मुतालए से भी लुत्फ अन्दोज़ होते चलें :-

"कुछ याद न रहता था, इसी लिये मुतालेआ नही किया"

فرمایا: مولوی عبدالحی صاحب حیدر آباد سے آئے ہیں (یہ مولانا احمد علی صاحب محدث سہارنپور کے پوتے ہیں، وہاں عربی کے پروفیسر ہیں) میں نے ایک بار ان سے ذکر کی کہ میں نے صرف درسی کتابیں دیکھیں ہیں اور کتابیں نہیں دیکھیں، الا بعض مقامات بضرورت وقتیہ، تو انہوں نے تعجب

سے کہا کہ میں سمجھتا تھا کہ کم از کم ہزار کتابیں تو ضرور دیکھی ہوگی۔ یہ سب حضرات اساتذہ کی برکت ہے کہ ضرورتی چیزیں کان میں اتنی پڑ گئیں جس سے وسعت مطالعہ کا شبہ ہو جاتا ہے (پھر فرمایا) کہ میرا حافظہ طالب علمی میں تو اچھا تھا پھر اچھا نہیں رہا، اسی واسطے زیادہ کتابوں کا مطالعہ نہیں کیا کہ جب یاد نہ رہے گا تو مطالعہ سے کیا فائدہ۔

کلمۃ الحق، تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ، ضبط کردہ: مولوی عبدالحق، سکنہ کوٹ، ضلع: فتح پور، باہتمام: مولوی ظہور الحسن کسولوی، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفر نگر، (یوپی) صفحہ ۳۵، ملفوظ: ۶۰

हिन्दी अनुवाद

फरमाया : मौलवी अब्दुल हय्य साहब हैदराबाद से आए हैं (येह मौलाना अहमद अली साहब मोहद्दिसे सहारनपूर के पोते हैं, वहाँ अरबी के प्रोफेसर हैं) मैंने एक बार उन से ज़िक्र की कि मैंने सिर्फ दर्सी किताबें देखीं हैं और किताबें नहीं देखीं, इल्ला बाज़ मक़ामात ब ज़रूरते वक़्तिया, तो उन्हों ने तअज्जुब से कहा कि मैं समझता था कि कम अज़ कम हज़ार किताबें तो ज़रूर देखी होंगी. येह सब हज़राते असातेज़ा की बरकत है कि ज़रूरती चीज़ें कान में इतनी पड गई जिस से वुस्अते मुतालेआ का शुबाह हो जाता है (फिर फरमाया) कि मेरा हाफिज़ा तालिबे इल्मी में तो अच्छा था फिर अच्छा नहीं रहा, इसी वास्ते ज़ियादा किताबों का मुतालेआ नहीं किया कि जब याद न रहेगा तो मुतालेआ से क्या फाइदा.

: हवाला :

कलिमतुल हक़, थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ, ज़ब्त कर्दा: मौलवी अब्दुल हक़, सकना कोट, ज़िला: फतेहपूर, ब एहतेमाम: मौलवी ज़हूरुल हसन कसौल्वी, नाशिर: मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थानाभवन, ज़िला: मुज़फ्फर नगर, (यू.पी) सफहा:35, मल्फ़ूज़:60

“इल्मे फ़िक़्ह से कभी मुनासेबत व महारत हुई ही नही”

ایک نو وارد اہل علم صاحب نے عرض کیا کہ حضرت میں ایک مسئلہ فقہیہ دریافت کرسکتا ہوں؟ فرمایا کہ اپنے اساتذہ سے دریافت کیجئے۔ عرض کیا کہ ان سے معلوم کیا تھا مگر اختلافی صورت پیدا ہوگئی اور میرے متعلق فتویٰ کا کام ہے اس لیے تحقیق کی ضرورت ہوئی، فرمایا کہ میرا علم تو ان صاحبوں سے بھی کم ہے، جن سے آپ تحقیق کر چکے ہیں۔ مجھکو عرصہ ہوا اس شغل کو چھوڑے ہوئے اور میرے اس کہنے کو آپ تواضع پر مبنی نہ فرمادیں۔ میں نے تواضع متعارف کبھی اختیار ہی نہیں کی بلکہ میرے اندر جو کمال ہے اس کو بھی ظاہر کردیتا ہوں اور جو نقص ہے اس کو بھی۔ ہاں پہلے الحمد للہ میری نظر وسیع عمیق تھی، اب وہ بھی نہیں رہی۔ باقی مہارت اور مناسبت جس کا نام ہے، وہ مجھ کو فقہ سے کبھی ہوئی ہی نہیں۔ البتہ تفسیر اور تصوف سے مجھے مناسبت ہے اور یہ بھی اس لیے کہ حضرت حاجی صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے دعا فرمائی تھی کہ تجھ کو تفسیر اور تصوف سے مناسبت ہوگی۔ اس وقت اگر اور علوم کے لیے بھی دعا کرالیتا تو اوروں سے بھی مناسبت ہوجاتی۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۳، قسط۱۵، صفحہ۷۰، ملفوظ۸۳۶

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۶، صفحہ۳۰۹، ملفوظ۴۲۰

(۲۰ر جمادی الاولیٰ ۱۳۵۱ھ — پنج شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक नौ वारिद अहले इल्म साहब ने अर्ज़ किया कि हज़रत मैं एक मस्अला फिक़्हिया दरयाफ्त कर सकता हूँ? फरमाया कि अपने असातेज़ा से दरयाफ्त कीजिये. अर्ज़ किया कि उन से मा'लूम किया था मगर इख़्तिलाफी सूरत पैदा हो गई और मेरे मुतअल्लिक़ फत्वा का काम है इस लिये तेहक़ीक़ की ज़रूरत हुई, फरमाया कि मेरा इल्म तो उन साहबों से भी कम है, जिन से आप तहक़ीक़ कर चुके हैं. मुझ को अरसा हुवा इस शुग्ल को छोडे हुए और मेरे इस केहने को आप तवाज़ोअ पर मब्नी न फरमा दें. मैंने तवाज़ोअ मुतआरिफ कभी इख़्तियार ही नहीं की बल्कि मेरे अन्दर जो कमाल है उसको भी ज़ाहिर कर देता हूँ और जो नुक़्स है उसको भी. हाँ पहले अल्हम्दोलिल्लाह मेरी नज़र वसीअ अमीक़ थी, अब वोह भी नहीं रही. बाक़ी महारत और मुनासेबत जिसका नाम है, वोह मुझ को फिक़्ह से कभी हुई ही नहीं. अलबत्ता तफ्सीर और तसव्वुफ से मुझे मुनासेबत है और येह भी इस लिये कि हज़रत हाजी साहब रहमतुल्लाहि अलैह ने दुआ फरमाई थी कि तुझ को तफ्सीर और तसव्वुफ से मुनासेबत होगी. उस वक़्त अगर और उलूम के लिये भी दुआ करा लेता तो औरों से भी मुनासेबत हो जाती.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 3, क़िस्त 15, सफहा 507, मल्फूज़ 836
(2) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 6, सफहा 309, मल्फूज़ 420
(20/ जमादिल ऊला 1351 हि. पन्ज शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

मुन्दरजए बाला तीन इक़्तिबासात का मा हस्ल येह है कि:-

☼ थानवी साहब की किताबों पर नज़र नहीं थी.
☼ थानवी साहब ने दर्सी किताबों के इलावा और किताबें नहीं देखी थीं.
☼ थानवी साहब ने सिर्फ दर्सी किताबें ही देखी थीं.
☼ थानवी साहब का हाफिज़ा तालिबे इल्मी के ज़माने में अच्छा था मगर तालिबे इल्मी के ज़माने के बाद अच्छा नहीं रहा.
☼ थानवी साहब को कुछ भी याद न रहता था. इसी लिये किताबों का मुतालेआ ही नहीं किया, क्यूँकि जब याद ही न रहता था, तो मुतालेआ से क्या फाइदा.

☼ थानवी साहब को इल्मे फिक़्ह से कभी निस्बत व इलाक़ा ही न था. या'नी ज़रूरियाते दीन के मसाइल से उन्हें कोई इलाक़ा ही नहीं था. सिर्फ तसव्वुफ और तफ्सीर से तअल्लुक़ था.
☼ थानवी साहब के पास कोई ख़ास किताबें नहीं थीं, चन्द किताबें ही थीं मगर उन किताबों पर भी थानवी साहब की नज़र नहीं थी.
☼ थानवी साहब की किताबों पर नज़र न होने की वजह से उन में फत्वा लिखने का तहम्मुल न था, लिहाज़ा उन के पास जो इस्तिफ्तते आते थे वोह वापस
कर देते थे, या फिर :-
☼ इस्तिफ्ता में किये गए सवाल का जवाब लिखने के बजाए "**अपना मस्लक**" लिख देते थे और दारुल उलूम देवबन्द से सवाल करने का मश्वरा लिख देते थे.

वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत थानवी साहब की इल्मी सलाहिय्यत कल्अदम होने की वजह येह थी कि उनकी क़ुव्वते हाफिज़ा या'नी याददाश्त इतनी कमज़ोर थी कि उन्हें कु छ याद नहीं रहता था. एक आम मौलवी या किसी मस्जिद के ख़तीबो इमाम को भी ज़रूरियाते दीन के तअल्लुक़ से हज़ारों मसाइल याद रखने पडते हैं और ऐसे मसाइल को याद रखने के लिये पुख़्ता याददाश्त और क़ुव्वते हाफिज़ा का क़वी होना अशद्द ज़रूरी है. क्यूँकि एक आलिमे दीन से क़ौम के मुख़्तलिफ व मुतफर्रिक़ तबक़ात के लोग कई क़िस्म के मसाइल दरयाफ्त करते हैं और इन तमाम मसाइल का इत्मीनान बख़्श और सहीह जवाब देने के लिये सिर्फ दर्सी किताबों तक

की महदूद मा'लूमात काफ़ी नहीं, बल्कि कषरत से गैर दर्सी किताबों का मुतालेआ दरकार होना है, सिर्फ मुतालेआ ही काफी नहीं बल्कि उसको याद रखना भी लाज़्मी है और याद तब ही रहेगा, जब कुव्वते हाफिज़ा में दम हो. अगर कुव्वते हाफिज़ा कमज़ोर है, तो फिर याद रखना ही ना मुम्किन होगा और ऐसी सूरत में इल्मी इस्तिअदाद व सलाहिय्यत होगी ही नहीं, क्यूँकि इल्मी सलाहिय्यत व इस्तिअदाद याददाश्त की पुख़्तगी की बुनियाद पर मब्नी है. अगर याददाश्त या कुव्वते हाफिज़ा अच्छा नहीं, तो फिर गए काम से. ऐसा शख़्स सिर्फ नाम का मौलवी बन कर रह जाता है. औलोमा में उसका हरगिज़ शुमार नहीं हो सकता.

थानवी साहब जिन की याददाश्त बिल्कुल कमज़ोर थी और उन्हें याद नहीं रहता था, वोह ज़रूरियाते दीन के मसाइल में क्या क्या गुल खिलाते थे, वोह खुद थानवी साहब की ज़बानी समाअत करें और उन की **''शाने मुजद्दिदियत''** के गुल खिलते देखें. नमाज़ जो अफ्ज़लुल इबादात है, उसको सहीह तौर पर अदा करना लाज़्मी है और नमाज़ सहीह अदा तब ही होगी, जब नमाज़ के मसाइल मा'लूम होंगे, एक आम मुसलमान भी काफी हद तक नमाज़ के मसाइल की वाक़फियत रखता है. लैकिन वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत और नाम निहाद मुजद्दिद जनाब थानवी साहब की नमाज़ के मसाइल में कैसी मा'लूमात थी, वोह मुलाहेज़ा फरमाएँ:

"नमाज़ में سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ गलत पढना"

और गलती की भी एक हद है, अगर गलती पर इश्रार हो, तो केह सकता है.

اور غلطی کی بھی ایک حد ہے، اگر غلطی پر اصرار ہو، تو کہہ سکتا ہے۔
چنانچہ پہلے نماز کے اندر "سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ" میں دال کو کھینچ کر کہا کرتا تھا، ایک شخص جو مرید تھے، انہوں نے مجھ کو غلطی پر مطلع کیا، میں نے کہا کہ میں خیال رکھوں گا، پھر میں نے اصلاح کر لی۔ اگر اصرار ہو تو کہہ دے مگر کہے ادب سے، ہر بات طریقہ سے اچھی معلوم ہوتی ہے۔

حسن العزیز (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتبہ: حکیم مولوی محمد یوسف بجنوری و حکیم مولوی محمد مصطفیٰ وغیرھما، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفر نگر، (یوپی) جلد ۳، قسط نمبر ۱۲، صفحہ: ۵۳
(یکم شعبان المعظم ۱۳۳۶ھ کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

चुनान्चे पहले नमाज़ के अन्दर ''سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ'' में दाल को खींच कर कहा करता था, एक शख़्स जो मुरीद थे, उन्हों ने मुझ को गलती पर मुत्तलअ किया, मैंने कहा कि मैं ख़्याल रखूँगा, फिर मैंने इस्लाह करली. अगर इस्रार हो तो केह दे मगर कहे अदब से, हर बात तरीक़े से अच्छी मा'लूम होती है.

: हवाला :

हुस्नुल अज़ीज़ (थानवी साहब के मल्फूज़ात का मजमूआ) मुरत्तबा: हकीम मौलवी मुहम्मद यूसुफ बिजनौरी व हकीम मौलवी मुहम्मद मुस्तफा वगैरहुमा, नाशिर: मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फर नगर, (यू.पी) जिल्द 3, क़िस्त नम्बर 12, सफहा:53
(यकुम शा'बानुल मुअज़्ज़म 1336 हि. की मजलिस)

मुन्दरजए बाला इबारत में थानवी साहब छोटे लोगों को अदब सिखा रहे हैं और वोह येह कि अगर किसी बुज़ुर्ग शख़्स से कभी इत्तिफाक़िया कोई गलती हो जाए, तो उस बुज़ुर्ग की ऐसी इत्तिफाक़िया गलती पर गिरफ्त नहीं करनी चाहिये बल्कि ख़ामोश रहना चाहिये, हाँ ! वोह बुज़ुर्ग गलती पर इस्रार करता हो, या'नी हमेशा वोही गलती करता हो, तो बहुत अदब से उस बुज़ुर्ग को उसकी गलती पर मुतनब्बेह करना चाहिये, और बुज़ुर्ग की दाइमी गलती की मिसाल देते हुए थानवी साहब ने अपना ख़ुद का ही मआमला बयान कर दिया. या'नी थानवी साहब नमाज़ की इमामत करते, तो रुकूअ से खडे होते हुए ''سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ'' कहते वक़्त लफ्ज़ ''حَمِدَہٗ'' अदा करते वक़्त हर्फ ''**दाल**'' को खींच कर कहते थे और इस तरह केहना गलत है. थानवी साहब की येह गलती एक दो मरतबा की इत्तेफाक़िया न थी बल्कि वोह हमेंशा येही गलती करते थे. लैकिन थानवी साहब के एक मुरीद ने थानवी साहब की रोज़ाना पन्ज वक़्ता नमाज़ में हमेशा की जानेवाली गलती को एक

अरसे तक बरदाश्त किया. पीर साहब की रोज़ाना पन्ज वक़्ता नमाज़ में हमेशा की जानेवाली गलती को एक अरसे तक बरदाश्त किया. पीर साहब आज अपनी गलती दुरुस्त फरमा लेंगे, कल दुरुस्त फरमा लेंगे. इस उम्मीद में एक अरसे तक इन्तज़ार किया लैकिन मुरीद की उम्मीद बर न आई. पीर साहब अपनी जहालत का दाइमी तौर पर मुज़ाहेरा फरमाते रहे. मुरीद के सब्र का पैमाना लबरेज़ हो गया और एक दिन मुरीद ने अपने पीर साहब या'नी वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के जाहिल मुजद्दिद थानवी साहब से अर्ज़ कर दिया कि पीर जी ! एक अरसे से आप इस गलती में मुब्तेला हैं, लिहाज़ा इस्लाह फरमा लें, मुरीद के मुतनब्बेह करने पर थानवी साहब को अपनी गलती का एहसास हुवा और उन्हों ने इस्लाह कर ली.

अल हासिल ! थानवी साहब को नमाज़ में सहीह तौर पर ''سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ'' केहना भी नहीं आता था. एक आम मुसलमान भी ऐसी गलती नहीं करता. जाहिल से जाहिल मो'मिन मुसलमान भी आम तौर पर '' سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ '' का तलफ्फुज़ सहीह अदा करता है, क्यूँकि येह जुम्ला इतना आसान है कि हर शख़्स सहीह तलफ्फुज़ के साथ अदा कर लेता है. ऐसा आसान तलफ्फुज़ भी नाम निहाद मुजद्दिद के लिये दुश्वार था. एक तवील अरसे तक गलत अदा करते रहे और जब मुरीद ने गलती पर मुत्तलअ किया तो इस्लाह की. या'नी येह मुजद्दिद साहब अवाम की इस्लाह करने दुनिया में नहीं आए थे बल्कि अवाम से अपनी इस्लाह करवाने दुनिया में तशरीफ लाए थे.

" नमाजे ईद में तर्के वाजिब का मस्अला याद नही था "

थानवी साहब को नमाज़ के मसाइल भी याद न थे. क्यूँकि नमाज़ के मसाइल का तअल्लुक़ इल्मे फिक़्ह से है और थानवी साहब को इल्मे फिक़्ह से बिल्कुल मुनासेबत और महारत न थी. बल्कि यूँ केहने में भी कोई मुबालेगा नहीं कि थानवी साहब को इल्मे फिक़्ह की मा'लूमात न थी और वोह तक़रीबन तमाम मसाइल फरामोश कर चुके थे. एक हवाला पेशे ख़िदमत है :-

ایک نووارد مولوی صاحب نے سوال کیا کہ حضرت نماز عید میں اگر واجب ترک ہو جائے۔ اتنا ہی کہنے پائے تھے کہ حضرت والا نے دریافت فرمایا کہ میں نے پہچانا نہیں کون صاحب ہیں۔ عرض کیا کہ میں فلاں ہوں اور صبح حاضر ہوا ہوں، فرمایا کہ مجھے مسائل جزئیہ یاد نہیں۔ میں خود اپنی ضرورت کے وقت دوسرے علماء سے پوچھ پوچھ کر عمل کرتا ہوں۔ دوسرے کہ یہ فقہ کے مسائل کی تحقیق کی جگہ نہیں۔ یہ ایک مستقل کام ہے اور الحمدللہ دیوبند اور سہارنپور میں بڑے پیانہ پر ہو رہا ہے اور کیا آپ کے آنے کا مقصد ان مسائل کی تحقیق ہے؟ عرض کیا کہ ملاقات کی غرض سے حاضر ہوا ہوں۔ فرمایا پھر یہ زیادتی کیوں کی؟ ہر شے کا محل اور موقع ہوتا ہے۔ میں اپنی حالت سے آپ کو مطلع کئے دیتا ہوں کبھی آپ دھوکے میں نہ رہیں۔ وہ یہ کہ میں ایک طالب علم ہوں ادھورا سا، جو کچھ پہلے ٹوٹا پھوٹا پڑھا تھا، اب وہ بھی بھول گیا۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۲، قسط۱۰، صفحہ۴۵۵، ملفوظ ۸۰۶

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۴، صفحہ۲۴۳، ملفوظ ۳۱۱

(۱۵ر شوال المکرّم ۱۳۵۱ھ - سہ شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक नौ वारिद मौलवी साहब ने सवाल किया कि हज़रत नमाज़े ईद में अगर वाजिब तर्क हो जाए. इतना ही केहने पाए थे कि हज़रते वाला ने दरयाफ्त फरमाया कि मैंने पहचाना नहीं कौन साहब हैं. अर्ज़ किया कि मैं फुलाँ हूँ और सुब्ह हाज़िर हुवा हूँ, फरमाया कि मुझे मसाइले जुज़्इय्या याद नहीं. मैं खुद अपनी ज़रूरत के वक़्त दूसरे ओलोमा से पूछ पूछ कर अमल करता हूँ. दूसरे कि येह फिक़्ह के मसाइल की तहक़ीक़ की जगह नहीं. येह एक मुस्तक़िल काम है और अल्हम्दुलिल्लाह देवबन्द और सहारनपूर में बडे पैमाने पर हो रहा है और क्या आपके आनेका मक़्सद इन मसाइल की तहक़ीक़ है? अर्ज़ किया कि मुलाक़ात की गरज़ से हाज़िर हुवा हूँ. फरमाया फिर येह ज़ियादती क्यूँ की? हर शै का महल और मौक़ा होता है. मैं अपनी हालत से आप को मुत्तलअ किये देता हूँ कभी आप धोके में न रहें. वोह येह कि मैं एक तालिबे इल्म हूँ और अधूरा सा, जो कुछ पहले टूटा फूटा पढा था, अब वोह भी भूल गया.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर:

मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 2, क़िस्त 10, सफहा 455, मल्फूज़ 806
(2) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 4, सफहा 243, मल्फूज़ 311
(15 शव्वालुल मुकर्रम 1351 हि. सेह शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

क़ारईने किराम ! गौर फरमाएँ कि एक मुजद्दिद के मन्सब के दा'वेदार को नमाज़े ईद में तर्के वाजिब का आसान मस्अला भी याद नहीं. मस्अला याद नहीं इसकी कोई शिकायत या अफ्सोस नहीं बल्कि हैरत तो इस बात पर है कि साइल को येह कहा जा रहा है कि मस्अला पूछ कर आप ज़ियादती कर रहे हैं. इस इबारत पर मज़ीद तहक़ीक़ व तफ्सील करने से क़ब्ल एक दिल चस्प हवाला गोश गुज़ार है:-

"अपने ख़लीफए ख़ास को भी मस्अला न बताया"

ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन गौरी मज्ज़ूब जो थानवी साहब के ख़लीफए ख़ास बल्कि अकाबिर ख़ुलफा में से थे और जिन्हों ने थानवी साहब की महब्बत में ''**अपना सब कुछ** '' निछावर कर दिया था. थानवी साहब के ऐसे आशिक़े ज़ार थे कि उन्हों ने थानवी साहब की बीवी बनने की तमन्ना ख़ुद थानवी साहब के सामने ज़ाहिर की थी, ख़्वाजा अज़ीज़ुल

हसन की ''**बेगमे थानवी**'' बनने की ख़्वाहिश पर थानवी साहब बहुत मस्रूर हुए थे और उन्हों ने ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन साहब को ''**सवाब होगा-सवाब होगा**'' का मुज़्दा सुनाया था. **(हवाला: अशरफुस्सवानेह, जिल्द:2, स.28)** ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने थानवी साहब की सवानेह हयात ''तीन जिल्दों में और एक जिल्द ''**ख़ातिमतुस्सवानेह**'' तस्नीफ फरमाई है. इलावा थानवी साहब के मल्फूज़ात का मज्मूआ ''**हुसनुल अज़ीज़**'' चार जिल्द में, येह भी उन्हीं की काविश का समरा व नतीजा है.

ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन साहब सफर में और हज़र में हमेशा थानवी साहब की मइय्यत व क़ुर्बत से मुस्तफीद व मुस्तफीज़ होते थे. एक मरतबा ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन साहब ने थानवी साहब से एक मस्अला पूछा, फिर क्या हुवा ? मुलाहज़ा फरमाएँ:-

خواجہ صاحب نے مسح خفین کے متعلق کچھ مسائل پوچھے، تو فرمایا کہ استفتاء کے لیے جزئیات زبانی یاد نہیں اور اس کی وجہ یہ ہے کہ اب یوں جی چاہتا ہے کہ نماز روزہ میں رہوں، اور سوائے اصلاح باطن کے مجھ سے کچھ نہ پوچھا جائے۔

حسن العزیز (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتبہ: حکیم مولوی محمد یوسف بجنوری و حکیم مولوی محمد مصطفیٰ وغیرھما، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفر نگر، (یوپی) ۶/ربیع الاول ۱۳۳۵ھ، دوشنبہ، یکم جنوری ۱۹۱۷ء کی مجلس، جلد ۴، قسط نمبر ۱۰، صفحہ: ۱۱۰، مسلسل صفحہ: ۳۳۴

हिन्दी अनुवाद

ख़्वाजा साहब ने मस्हे ख़ुफ्फैन के मुतअल्लिक़ कुछ मसाइल पूछे, तो फरमाया कि इस्तिफ्ता के लिये जुज़्इय्यात ज़बानी याद नहीं और इसकी वजह

येह है कि अब यूँ जी चाहता है कि नमाज़ रोज़े में रहूँ, और सिवाए इस्लाहे बातिन के मुझ से कुछ न पूछा जाए.

: हवाला :

हुसनुल अज़ीज़ (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ) मुरत्तबह:हकीम मौलवी मुहम्मद यूसुफ बिजनौरी व हकीम मौलवी मुहम्मद मुस्तफा वगैरहुमा, नाशिर: मक्तबए तालीफात अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फर नगर, (यू.पी) 6 रबीउल अव्वल 1335 हि., दो शम्बा, यकुम जनवरी 1917 ई. की मजलिस, जिल्द 4, क़िस्त नम्बर 10, सफहा : 110, मुसलसल सफहा : 334

"मसाइल याद नही, मैं खुद ओलोमा से पूछ कर अमल करता हूँ"

ایک نووارد صاحب مجلس میں بیٹھے ہوئے تھے کہ ایک اور صاحب نے جن کو حضرت والا سے کسی قدر بے تکلفی کا درجہ حاصل تھا ایک فقہی مسئلہ پوچھا۔ حضرت والا نے جواب دے دیا۔ ان نووارد صاحب نے بھی اسی سلسلہ میں عرض کیا کہ میں بھی کچھ فقہی مسائل پوچھنا چاہتا ہوں۔ فرمایا کہ اب میں اس کام کا نہیں رہا۔ مسائل زیادہ یاد بھی نہیں، میں خود دوسرے علماء سے مسائل پوچھ کر عمل کرتا ہوں۔ یہاں پر مفتی صاحب ہیں ان سے مسائل پوچھئے یا کہیں اور کسی جگہ کے علماء سے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۴، قسط۴، صفحہ ۴۲۶، ملفوظ ۷۸۰

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ ۸، صفحہ ۲۲۹، ملفوظ ۲۵۳ (۲۰ رجب المرجب ۱۳۵۱ھ - یک شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक नौ वारिद साहब मजलिस में बैठे हुए थे कि एक और साहब ने जिनको हज़रते वाला से किसी क़दर बे तकल्लुफी का दरजा हासिल था, एक फिक़्ही मस्अला पूछा. हज़रते वाला ने जवाब दे दिया. उन नौ वारिद साहब ने भी उसी सिल्सिले में अर्ज़ किया कि मैं भी कुछ फिक़्ही मसाइल पूछना चाहता हूँ. फरमाया कि अब मैं इस काम का नहीं रहा. मसाइल ज़ियादा याद भी नहीं, मैं खुद दूसरे ओलोमा से मसाइल पूछ कर अमल करता हूँ. यहाँ पर मुफ्ती साहब हैं इन से मसाइल पूछिये या कहीं और किसी जगह के ओलोमा से.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 4, क़िस्त 4, सफहा 426, मल्फ़ूज़ 780

(2) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़् : अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्दतबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 8, सफहा 229, मल्फूज़ 253
(20- रजबुल मुरज्जब 1351 हि.- यक शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

थानवी साहब फिक़्ही मसाइल के तअल्लुक़ से किये गए सवाल से इतना घबराते थे कि फौरन हथियार डाल देते थे और ताबेअ होकर फौरन अपनी बे बज़ाअती का ए'तेराफ करके मसाइल बताने से अपनी जान छुडा लेते थे और दूसरे ओलोमा से दरयाफ्त कर लेने का मश्वरा देते थे, क्यूँकि खुद थानवी साहब को भी फिक़्ही मसाइल याद न थे. वोह खुद भी ज़रूरियाते दीन के फिक़्ही मसाइल दूसरे ओलोमा से पूछ पूछ कर अमल करते थे.

" नमाज़े जनाज़ा में जा नमाज़ (मुसल्ला) माँगना "

नमाज़ी जब नमाज़ पढ़ता है, तब वोह ज़मीन पर जा नमाज़ (मुसल्ला) बिछा कर नमाज़ पढ़ता है, क्यूँकि नमाज़ में सजदा करना पडता है और सजदा ज़मीन पर ही किया जाता है, लिहाज़ा हर नमाज़ी नमाज़ पढ़ते वक़्त जा नमाज़ बिछाता है. लैकिन नमाज़े जनाज़ा में जा नमाज़ बिछाई नहीं जाती, क्यूँकि नमाज़े जनाज़ा में सजदा नहीं है. नमाज़े जनाज़ा सिर्फ हालते क़याम में या'नी खडे खडे ही अदा की

जाती है. इस हक़ीक़त से हर आमो ख़ास मुसलमान वाक़िफ है बल्कि एक जाहिल शख़्स को भी मा'लूम होता है कि नमाज़े जनाज़ा में सजदा न होने की वजह से जा नमाज़ की क़त्अन कोई ज़रूरत महेसूस नहीं की जाती, जब एक जाहिल शख़्स को येह बात मा'लूम है तो नमाज़े जनाज़ा पढाने वाला इमाम तो यक़ीनी तौर पर इस हक़ीक़त से बा ख़बर और मुत्तलअ होता है. लैकिन दाद दीजिये ! वहाबी देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के नाम निहाद मुजद्दिद की इल्मी सलाहिय्यत को कि नमाज़े जनाज़ा की इमामत करने पहुँच गए और जा नमाज़ तलब फरमाई, हवाला मुलाहेज़ा फरमाएँ :-

فرمایا ایک مرتبہ نوعمری کے زمانہ میں قصبہ کیرانہ گیا۔ ایک جنازہ پڑھانے کا اتفاق ہوا، میں نے پوچھ لیا جانماز کہاں ہے؟ تو ایک آدمی بولا کہ بس تو پھر ہم لوگوں کے لیے ایک تھان کی ضرورت ہوگی۔ مطلب یہ تھا کہ اگر امام کے لیے جانماز کی ضرورت ہے تو مقتدیوں کے لیے بھی ضرورت ہوگی، اور تھان کے بغیر کام نہ چلے گا، میں شرمندہ ہوا اور سبق ملا۔

کلمۃ الحق، تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ، ضبط کردہ: مولوی عبدالحق سکنہ کوٹ، ضلع فتحپور، باہتمام: مولوی ظہور الحسن کسولوی، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفرنگر (یوپی) قسط ۸، صفحہ نمبر ۸۵

हिन्दी अनुवाद

फरमाया एक मरतबा नौ उम्री के ज़माने में क़स्बा कैराना गया. एक जनाज़ा पढ़ाने का इत्तेफाक़ हुवा, मैंने पूछ लिया जा नमाज़ कहाँ है ? तो एक आदमी बोला कि बस तो फिर हम लोगों के लिये एक थान की ज़रूरत होगी. मतलब येह था कि अगर इमाम के लिये जा नमाज़ की ज़रूरत है, तो मुक़्तदियों के

लिये भी ज़रूरत होगी, और थान के बगैर काम न चलेगा, मैं शर्मिन्दा हुवा और सबक़ मिला.

: हवाला :

कलिमतुल हक़, थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ, ज़ब्त कर्दा: मौलवी अब्दुल हक़ सकना कोटी, ज़िला फतेहपूर, ब एहतेमाम: मौलवी ज़हूरुल हसन कसौलवी, नाशिर: मक्तबए तालीफात अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फ़रनगर (यू.पी) क़िस्त 8, सफहा नम्बर 85

" मेरी लिखी हुई इबारतें ख़ुद मेरी ही समझ में नही आती "

एक मुजद्दिद का मब्लगे इल्म इतना बुलन्द पाया होता है कि उस में फहम व इदराक का वस्फ इतना वसीअ होता है कि वोह हर किसी की बात , क़ौल, फे'ल और इबारत को अच्छी तरह समझ लेता है. बल्कि साइल और क़ाइल के कहने का मतलब व मक़्सद और उसकी मुराद को एक लम्हे में जान लेता है, पहचान लेता है, समझ लेता है और उसकी गायत निय्यत की तेह तक पहुँच जाता है. फहम व इदराक के साथ साथ उस में इफहाम व तफ्हीम की सलाहिय्यत भी बे मिस्ल व मिसाल होती. इस्लामी मसाइल जो हम अस्र ओलोमा के

लिये मुश्किल, दक़ीक़, कठीन, नाज़ुक, बारीक बल्कि ला-यन्हल होते हैं, इन मसाइल को, इनके जुज़्इय्यात को, इन मसाइल के तअल्लुक़ से कुतुबे फिक़्ह की मन्क़ूल व मक्तूब इबारात को, ओलोमा-ए-मुतक़द्दिमीन के अक़्वाल को, उनके अक़्वाल के मफ्हूम को, उसकी तशरीह व तौज़ीह को नज़रे वाहिद में ताड लेता है और उसको अच्छी तरह समझकर ऐसे हकीमाना अन्दाज़ और हुस्ने उस्लूब से समझा भी देता है कि हमअसर ओलोमा भी हैरत व तअज्जुब से अँगुश्त बदन्दान हो जाते हैं. एक मुजद्दिद में इन औसाफ का बकसरत होना लाज़्मी भी है क्यूँकि वोह दीने मतीन की तजदीद व अहया के लिये ही दुनिया में भेजा गया है.

लैकिन वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के नासमझ मुजद्दिद की फहम व इदराक की बेबसी, बे ए'तेनाई, बे बरगी, बेरब्ती, बेकसी और बे माएगी का येह आलम है कि ख़ुद अपनी ही लिखी हुई इबारतें समझ में नहीं आतीं. हवाला पैशे ख़िदमत है :-

چنانچہ بعض عبارتیں میری ہی پہلی لکھی ہوئی اب خود میری ہی سمجھ میں نہیں آتیں۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۲ میں تیسری جلد، قسط۱۲، صفحہ۲۲۱، ملفوظ۲۸۳

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۵، صفحہ۳۱۰، ملفوظ۲۹۷

(۲۰/رجب المرجب ۱۳۵۱ھ- یک شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

चुनान्चे बाज़् इबारतें मेरी ही पहले लिखी हुई अब मेरी समझ में नहीं आतीं.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़् : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मकतबा दानिश देवबन्दी (यू.पी) जिल्द 2 में तीसरी जिल्द, क़िस्त 12, सफहा 221, मल्फूज़् 283
(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़् : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मततबा दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 5, सफहा 310, मल्फूज़् 297
(20/ रजबुल मुरज्जब हि. 1351 यक शम्बा, बादे नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

" पीछला लिखा हुआ याद नही "

अब एक इक़्तिबास ऐसा पैशे ख़िदमत है कि जिस से आप अन्दाज़ा लगा लेंगे कि वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के नाम निहाद मुजद्दिद जनाब अशरफ अली साहब थानवी साहब की तश्हीर में किस क़दर दरोग गोई से काम लिया जा रहा है. थानवी साहब को ज़बरदस्त आलिम, साहिबे तसानिफे कसीरा, मुसन्निफे बे मिसाल,

मुफक्किर व मुस्लहे क़ौम, हादिये मिल्लत. मुजद्दिदे दीन और हकीमुल उम्मत के आ'ला से आ'ला मन्सब पर मुतमक्किन बनाने के लिये सिद्क़ व सदक़ात के दामन से हाथ झटक कर किज़्ब बयानी के गहरे पानी में गोता ज़नी की मुहिम चलाई गई है, वोह कितनी मज़मूम है, इस का अन्दाज़ा मुन्दरजए ज़ैल इक़्तिसाब को ब नज़रे अमीक़ पढने से आ जाएगा.

فرمایا کہ دو چیزیں ہیں جو باوجود تکرار مطالعہ کے بھی ضبط نہیں رہتیں۔ مطالب مثنوی شریف و معانی قرآن مجید، معریٰ کلام مجید پڑھوں تو ضرورت کے موافق تو حل ہو جاتا ہے مگر پوری تفسیر بالکل حاضر نہیں رہتی۔ جب کوئی آیت حل کرنے کی حاجت ہوتی ہے اپنی تفسیر سے دیکھ کر حل کرتا ہوں۔ پچھلا لکھا ہوا یاد نہیں رہتا۔ اسی طرح مثنوی شریف بھی بدون مطالعہ نہیں پڑھا سکتا۔

حسن العزیز (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) ضبط کردہ: خواجہ عزیز الحسن غوری مجذوب، از: اکابر خلفاء صاحب ملفوظات، باہتمام: مولوی ظہور الحسن کسولوی، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفرنگر، (یوپی) جلد اول کا حصہ ۳، قسط ۱۸، ملفوظ ۳۸۴، ص ۱۶، مسلسل ص ۳۶۰
(۷/ جمادی الاولی ۱۳۳۴ھ کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

फरमाया कि दो चीज़ें हैं जो बा वजूदे तकरारे मुतालेआ के भी ज़ब्त नहीं रहतीं. मतालिबे मसनवी शरीफ व मआनी कुरआन मज़ीद, मुअर्रा कलामे मजीद पढ़ूं तो ज़रूरत के मुवाफिक़ तो हल हो जाता है मगर पूरी

तफ्सीर बिल्कुल हाज़िर नहीं रहती. जब कोई आयत हल करने की हाजत होती है अपनी तफ्सीर से देख कर हल करता हूँ. पीछला लिखा हुवा याद नहीं रहता. इसी तरह मसनवी शरीफ भी बदुने मुतालेआ नहीं पढा सकता.

: हवाला :

हुस्ने अज़ीज़ (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ) ज़ब्त कर्दा : ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन गौरी मजज़ूब, अज़ : अकाबिर खुलफा साहब मल्फ़ूज़ात, बा एहतमाम : मौलवी ज़हूरुल हसन कसौलवी, नाशिर : मकतबा तालिफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फर नगर (यू.पी) जिल्द अव्वल का हिस्सा 3, क़िस्त 18, मल्फ़ूज़ 384, सफहा. 16, मुसलसल सफहा. 360 (7/ जमादिउल ऊला 1334 हि. की मजलिस)

येह थी थानवी साहब की इल्मी इस्ते'दाद कि मसनवी शरीफ जैसी आसान किताब भी बगैर मुतालेआ किये, तल्बा को नहीं पढा सकते थे. अलावा अज़ीं थानवी साहब को खुद अपना ही पिछला लिखा हुआ याद नहीं था.

एक अहम नुक्ते कि तरफ क़ारेइने किराम की तवज्जोह मरकुज़ कराना भी ज़रूरी है कि **''हुस्नुल अज़ीज़''** किताब का मुन्दरजए बाला इक़्तिबास थानवी साहब की 7/ जमादिउल ऊला हि. 1334 की मजलिस का है. या'नी 1334 हि. में थानवी साहब ए'तेराफ कर

रहे हैं कि पिछला लिखा हुआ याद नहीं. थानवी साहब का इन्तेक़ाल, 1362 हि. में हुवा है. लिहाज़ा साबित हुवा कि इन्तेक़ाल के साल 1362 हि. के अठ्ठाइस (28) साल पहले ही थानवी साहब की क़ुव्वते हाफिज़ा जवाब दे चुकी थी. बल्कि अब तो कुछ हवाले ऐसे पेश कर रहे हैं कि सिर्फ मस्अले का जुज़इय्या थानवी साहब एक साल की तवील मुद्दत तक किताब में देख कर भी नहीं ढूँढ सके थे.

" मफ्क़ूदुल ख़बर के मुतअल्लिक़ एक साल तक रिसाला तैयार न हो सका "

اب تو میں اتنا قاصر اور عاجز ہو گیا ہوں کہ مجھ کو ایک رسالہ تیار کرانا ہے، وہ رسالہ آج کل کی ضروریات اور خاص کر مفقود الخبر کے متعلق وہ رسالہ ہے۔ مگر ایک سال ہو گیا اگر مجھ میں قابلیت ہوتی تو کیوں اس قدر وقت صرف ہوتا؟ اس سے میرے علم و استحضار کا اندازہ کر لیا جائے۔ اس لئے مجھ کو فقہ سے مناسبت اور مہارت ہوتی تو خدانخواستہ کیا خدمت دین سے انکار ہو سکتا تھا، جو کہ عین دین ہے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد ۳، قسط ۵، صفحہ ۵۰۸، ملفوظ ۸۳۶

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ ۶، صفحہ ۳۱۰، ملفوظ ۴۲۰

(۲۰/ جمادی الاولیٰ ۱۳۵۱ھ - پنج شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

अब तो मैं इतना क़ासिर और आजिज़ हो गया हूँ कि मुझ को एक रिसाला तैयार करना है, वोह रिसाला आज कल की ज़रूरियात और ख़ास कर मफ्क़ूदुल ख़बर के मुतअल्लिक़ वोह रिसाला है. मगर एक साल हो गया अगर मुझ में क़ाबिलियत होती तो क्यूँ इस क़दर वक़्त सर्फ होता ? इस से मेरे इल्म व इस्तेहज़ार का अन्दाज़ा कर लिया जाए. इस लिये मुझ को फिक़्ह से मुनासिबत और महारत होती तो ख़ुदा न ख़ास्ता क्या ख़िदमते दीन से इन्कार हो सकता था, जो के अैने दीन है.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातुल यौमिया मिनल इफादातुल क़ौमिया, अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मकतबा दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 3, क़िस्त 5, सफहा 508, मल्फूज़ 836
(2) अल इफज़ातुल यौमिया मिनल इफादातुल क़ौमिया, (जदीद एडिशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मकतबा दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 6, सफहा 310, मल्फूज़ 420
(20/ जमादिउल ऊला 1351 हि. पंज शम्बा, बादे नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

मफ्क़ूदुल ख़बर या'नी जिस औरत का शौहर ला पता हो और वोह ज़िन्दा है या मर गया है ? इस की कोई ख़बर न हो, तो ऐसी सूरत में उस गुमशुदा शौहर की बीवी कब तक इन्तज़ार करे और अगर वोह औरत दूसरा निकाह करना चाहती हो, तो उसके लिये क्या हुक्मे शरई है? येह मस्अला फिक़्ह की क़रीब क़रीब तमाम कुतुब मस्लन ● **जामेउर्रमूज़ ● जोहरा ● जवाहिर ● हुल्या ● तबय्यिनुल हक़ाइक़ ● ज़ख़ीरतुल उक़्बा ● ख़ुलासतुल फतावा ● ख़ज़ाइनुल मुफ्तिय्यीन ● तनवीरुल अबसार ● दुर्रे मुख़्तार ● रद्दुल मुहतार ● गाया ● आलमगीरी ● फतावा क़ाज़ी ख़ान ● वक़ाया ● बदाया ● नक़ाया ● फत्हुल क़दीर ● बदाएउस्सनाएअ ● इनाया ● बहरुर्राइक़ ● काफी ● वाफी ● सिराजुल वह्हाज ● फतावा ख़ानिया ● मिन्हतुल ख़ालिक़** वगैरा कुतुब में तफ्सील से मरक़ूम है. एक जय्यद मुफ्ती तो क्या बल्कि एक मौलवी जो किसी दारुल उलूम से फारिग हो, वोह भी येह मस्अला इन कुतुब से जुज़्या और हवाला नक़्ल करके ब आसानी लिख सकता है. बशर्ते कि उस मौलवी को फिक़्ह से मुनासबत और रगबत हो.

लैकिन थानवी साहब कि जिन को इल्मे फिक़्ह से मुनासबत बिल्कुल न थी, फिर भी वोह ब-ज़अ्मे ख़्वेश ख़ुद को मुजद्दिद समझते थे, लैकिन मफ्क़ूदुल ख़बर का फिक़्ही मस्अला तो उन्हें याद न था और याद होने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता, क्यूँकि थानवी साहब को फिक़्ह से दूर का भी वास्ता न था. लैकिन हैरत तो इस बात पर है कि ऐसा आसान फिक़्ही मस्अला वोह फिक़्ह की किताबों के हवालों से एक साल की मुद्दत तक न लिख सके. और अगर लिखना चाहते, तो लिख भी न सकते थे. क्यूँकि थानवी साहब का दिमाग मग्ज़ से खाली

हो चुका था और ख़ुसूसन इल्मे फ़िक़्ह तो थानवी साहब के बस की बात ही न थी. एक हवाला और पेशे ख़िदमत है :-

ज़हेन भी ज़ईफ हाफिज़ा भी ज़ईफ

اب تو عمر کے اعتبار سے بھی زمانہ دوسرا ہے۔قویٰ بھی ضعیف، ذہن بھی ضعیف، حافظہ بھی ضعیف، یہ بھی اللہ کا احسان اور فضل ہے کہ وہ آرام دینا چاہتے ہیں۔ ہر چیز میں انحطاط ہوگیا۔خصوصاً فقہیات میں تو دخل دیتا ہوا بہت ہی ڈرتا ہوں، ہمت نہیں ہوتی اور اکثر لوگوں کو میں اسی میں زیادہ دلیر پاتا ہوں

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۳، قسط۱۵، صفحہ۵۰۸، ملفوظ۸۳۶

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۶، صفحہ۳۱۰، ملفوظ۴۲۰

(۲۰/ جمادی الاولیٰ ۱۳۵۱ھ- پنج شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

अब तो उम्र के ए'तेबार से भी ज़माना दूसरा है. क़्वा भी ज़ईफ, ज़हेन भी ज़ईफ, हाफिज़ा भी ज़ईफ, येह भी अल्लाह का एहसान और फज़्ल है कि वोह आराम देना चाहते हैं. हर चीज़ में इन्हितात हो गया. ख़ुसूसन फिक़्हिय्यात में तो दख़ल देता हुवा

बहुत ही डरता हूँ, हिम्मत नहीं होती और अक्सर लोगों को मैं इसी में ज़ियादा दिलैर पाता हूँ.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया, अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 3, क़िस्त 15, सफहा 508, मल्फ़ूज़ 836

(2) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा:6, सफहा:310, मल्फ़ूज़ 420

(20/ जमादिल ऊला 1351 हि. पंज शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

थानवी साहब 1351 हि. में ए'तेराफ कर रहे हैं कि अब वोह काम के नहीं रहे. क़्वा, ज़हेन और हाफिज़ा जवाब दे चुके हैं. हर मआमले में इन्हितात या'नी तनज़्ज़ुल (Downfall) हो गया है और ख़ुसूसन इल्मे फिक़्ह में तो दिमाग का दीवाला निकल गया है. अपनी इस हालते बेबसी पर भी थानवी साहब **''मूछ मरोडा रोटी तोडा''** वाली मिस्ल के मिस्दाक़ बन कर शैख़ी मारते हुए येह फरमाते हैं कि **''येह भी अल्लाह का एहसान और फज़्ल है कि वोह आराम देना चाहते हैं''**

वाह जनाब ! वाह ! इसी को कहते हैं कि **रस्सी जल गई पर बल नहीं गया.** अपनी कमज़ोर याददाश्त के ऐब व नुक़्स पर रेशमी रूमाल डाल कर उसे हसीन पैराये में ढालने की कोशिश की जा रही है. अल्लाह तआला आराम देना चाहता है, इसी लिये मैं सब कुछ भूलभाल गया हूँ, कह कर थानवी साहब अपनी अनानियत का मुज़ाहेरा कर रहे हैं. साफ लफ्ज़ों में ए'तेराफ कर लेना चाहिये था कि अब अल्लाह तआला ने पढा लिखा सल्ब कर लिया है. फज़्ले इलाही से अब महरूम हो गया हूँ. इल्म की दौलत छीन ली गई है. इल्मे फिक़्ह कि जो ज़रूरियाते दीन के मसाइल के हल के लिये लाज़मी और ज़रूरी है, उसको भी भूल बैठने पर निहायत रन्जो अफ्सोस होना चाहिये, न कि उसे अल्लाह का फज़्ल व एहसान और अल्लाह आराम देना चाहता है कहेकर अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बन कर अपने आप को अल्लाह का मुक़र्रब बन्दा जताने की डिंग मारनी चाहिये. येह तो ऐसी बात हुई कि किसी का हादिसा (Accident) में एक हाथ कट जाए और वोह शैख़ी मारे कि येह भी अल्लाह का एहसान और फज़्ल हुवा कि अब नमाज़ के लिये वुज़ू करने में दो हाथ धोने की तक्लीफ नहीं उठानी पडेगी. सिर्फ एक हाथ धोना पडेगा. एक हाथ धोने से काम चल जाएगा, दूसरा हाथ धोने की महेनत से आराम मिल गया.

" इल्मे फिक़्ह सब से ज़ियादा मुश्किल "

एक मुजद्दिद जो एक सौ साल के बाद आता है और उम्मत के लिये दीन ताज़ा करने की ख़िदमत अन्जाम देता है, वोह उलूमे दीनिया के हर शो'बे में महारते ताम्मा रखता है. अवाम बल्कि ख़वास भी दीनी

मसाइल उस से पूछ कर हल करते हैं. दक़ीक़ से दक़ीक़ मसाइल वोह लम्हा भर में हल कर देता है. लैकिन वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के नाम निहाद और जाहिल मुजद्दिद की इल्मी सलाहिय्यत के फुक़्दान का येह आलम है कि फिक़्ही मसाइल जो ज़रूरियाते दीन से तअल्लुक़ रखते हैं, वोह फिक़्ही मसाइल भी उन्हें याद नहीं, एक हवाला मुलाहेज़ा फरमाएँ :-

چنانچہ فقہ کے مسائل پر میں خود دوسرے علماء سے پوچھ کر عمل کرتا ہوں اور فقہ سب سے زیادہ مشکل اور اہم چیز ہے۔ اس میں دخل دیتے ہوئے بہت ڈر معلوم ہوتا ہے اور بعضے لوگوں کو میں دیکھتا ہوں کہ اس میں ہی زیادہ دلیر ہیں۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۳، قسط۱۵، صفحہ۵۵۴، ملفوظ۹۲۲

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۷، صفحہ۴، ملفوظ۷

(۲۶ر جمادی الاولیٰ ۱۳۵۱ھ - چہارشنبہ، بوقت صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

चुनान्चे फिक़्ह के मसाइल पर मैं ख़ुद दूसरे ओलोमा से पूछ कर अमल करता हूँ और फिक़्ह सब से ज़ियादा मुश्किल और अहम चीज़ है. इस में दख़ल देते हुए बहुत डर मा'लूम होता है और बा'ज़े लोगों को मैं देखता हूँ कि इस में ही ज़ियादा दिलैर हैं.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया, अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 3, क़िस्त 15, सफहा 554, मल्फूज़ 922
(2) अल इफाज़ात अल यौमिया मिनल इफादात अल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 7, सफहा 4, मल्फूज़ 7
(26/ जमादिल ऊला 1351 हि. चहार शम्बा, ब वक़्ते सुब्ह की मजलिस)

एक तरफ तो थानवी साहब के मुजद्दिद होने का बड़े ज़ोरो शोर से ढोल पीटा जा रहा है. लैकिन थानवी साहब की इल्मी सलाहिय्यत का येह आलम है कि ज़रूरियाते दीन से तअल्लुक़ रखने वाले फिक़्ही मसाइल भी थानवी साहब दूसरों से पूछ पूछ कर अमल करते थे बल्कि ख़ुद उन्होंने येह ए'तेराफ भी किया है कि फिक़्ह सब से ज़ियादा मुश्किल है. बेशक ! एक जाहिल और अनाडी के लिये इल्मे फिक़्ह यक़ीनन मुश्किल अम्र है. मस्लन जिस को साईकल चलाना भी नहीं आती, ऐसे शख़्स को अगर स्कूटर चलाने के लिये कहा जाएगा, तो येह काम उसके लिये ज़रूर मुश्किल होगा बल्कि वोह स्कूटर चलाते हुए बहुत ही डर और ख़ौफ महसूस करेगा. यही हाल तब्लीगी जमाअत के जाहिल मुजद्दिद का है. इसी लिये तो फरमाया कि **''फिक़्ह सब से ज़ियादा मुश्किल और**

अहम चीज़ है. इस में दख़ल देते हुए बहुत डर मा'लूम होता है.''

ठीक है जब इल्म ही नहीं तो दख़ल देते हुए डर महसूस होगा. लैकिन बे हयाई और बे गैरती तो येह है कि अपनी जहालत पर नादिम होने के बजाए इल्मे फिक़्ह जानने वाले और फिक़्ह के मसाइल फिल फौर बयान कर देने वाले हज़रात की ता'रीफ व तह्सीन करने के बजाए उनकी तज़्लील करते हुए येह कहना कि **''बा'ज़े लोगों को मैं देखता हूँ कि इसी में ज़ियादा दिलैर हैं.''** येह जुम्ला थानवी साहब के दिल में भरी हुई हसद की आग की चिंगारियाँ बिखेरता है और इल्मे फिक़्ह के मसाइल बयान करने वाले हज़रात से बुग्ज़ और जलन की अक्कासी कर रहा है. खुद को मसाइल याद नहीं, तो दूसरों पर क्यूँ जलते हो ?

अब तक बयान कर्दा इक़्तिबास नम्बर 4 से 13 का मा-हसल यह है कि :-

☆ थानवी साहब नमाज़ में ''سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ'' भी गलत पढते थे. एक मुरीद ने जब उन्हें मुत्तलअ किया, तब उन्हों ने इस्लाह की.

☆ थानवी साहब को नमाज़े ईद में तर्के वाजिब का मस्अला भी याद नहीं था. साइल से कहा कि मुझे मसाइले जुज़्इय्या याद नहीं. जो कुछ पहले टूटा फूटा पढा था, अब वोह भी भूल गया.

☆ थानवी साहब के ख़लीफए ख़ास ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने थानवी साहब से मोज़ों पर मस्हा करने का मस्अला पूछा, तो ज़बानी याद नहीं. ऐसा जवाब में कहा.

☆ एक नौ वारिद ने थानवी से फिक़्ही मस्अला पूछना चाहा, तो

थानवी साहब ने फरमाया कि मुझे मसाइल याद नहीं. यहाँ पर जो मुफ्ती साहब हैं, उन से या कहीं और किसी जगह के ओलोमा से पूछिये.

✡ थानवी साहब ने नमाज़े जनाज़ा पढाते वक़्त जा-नमाज़ (मुसल्ला) तलब किया. शायद थानवी साहब को मा'लूम न होगा कि नमाज़े जनाज़ा में सजदा नहीं.

✡ थानवी साहब की ख़ुद की लिखी हुई इबारतें ख़ुद थानवी साहब ही की समझ में नहीं आती थीं.

✡ थानवी साहब को पिछला लिखा हुवा याद नहीं रहता था. थानवी साहब की इल्मी बे माएगी का येह आलम था कि मसनवी शरीफ जैसी आसान किताब भी बगैर मुतालेआ किये नहीं पढा सकते थे.

✡ मफ्क़ूदुल ख़बर या'नी जो शख़्स गुम हो गया हो और उसकी कोई ख़बर न हो, ऐसे शख़्स की बीवी के लिये शरअन क्या हुक्म है ? इस मस्अले के तअल्लुक़ से थानवी साहब एक साल तक किताबों से जुज़्इय्यात न ढूँढ सके और एक साल की तवील मुद्दत तक रिसाला तैयार न करा सके.

✡ थानवी साहब के इन्तक़ाल के तक़रीबन अठ्ठाइस 28 साल पहले थानवी साहब का क़ुवा, ज़हन, और हाफिज़ा जवाब दे चुका था.

✡ थानवी साहब को फिक़्ही मसाइल याद नहीं थे. ज़रूरियाते दीन के फिक़्ही मसाइल दूसरे ओलोमा से पूछ कर अमल करते थे.

मसाइल के जवाब देने से जान छुडाने के लिये थानवी साहब ने एक अजीब तरकीब ढूंढ निकाली

अब आइये ! थानवी साहब की ज़हानत को दाद देनी पडे ऐसे चन्द वाक़ेआत पैशे ख़िदमत हैं कि थानवी साहब अपनी जहालत पर पर्दा डालने के लिये कैसी कैसी तदबीरें और तरकीबें करते थे. एक आम सत्ह का मौलवी भी जिन मसाइल को ब आसानी बता दे, ऐसे आसान मसाइल भी थानवी साहब नहीं जानते थे. लैकिन अवामुन्नास पर उनकी जहालत की हक़ीक़त मुन्कशिफ न हो जाए और उनकी जहालत रेशमी पर्दे में मस्तूर रहे, इस लिये वोह तरह तरह के हीले बहाने तज्वीज़ फरमाते थे और ऐसे ऐसे मक्रो फरेब के गुल खिलाते कि सुनने वाला दँग रह जाता.

थानवी साहब ने मसाइल बताने से गुरेज़ करने के लिये चन्द तरीक़े तज्वीज़ किये थे और वोह हस्बे ज़ैल थे :-

(1) कभी साइल को मस्अला बताने के बजाए उसी मस्अले की नोइय्यत का सवाल करते थे और साइल से कहते थे कि पहले मेरे सवाल का जवाब दो. अगर तुम मेरे सवाल का जवाब नहीं दोगे, तो मैं भी तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं दूंगा. थानवी साहब का सवाल ऐसा अट सट और पेचीदा होता था कि मस्अला पूछने वाला जवाब न दे सकता था. लिहाज़ा थानवी साहब इस बहाने मस्अला बताने से अपनी जान छुडा लेते थे.

(2) कभी साइल से सवाल की हिक्मत दरयाफ्त फरमा कर साइल को साकित कर देते और सवाल की हिक्मत बयान न करने की वजह से मस्अला न बताते थे.

(3) कभी साइल से येह पूछते कि सवाल करने से तुम्हारा मक्सद इस्तिफादा है या इम्तिहान ? अगर साइल कहता कि इश्तिफादा मक्सूद है, तो थानवी साहब फरमाते कि आपको मेरा मब्लगे इल्म मा'लूम नहीं. लिहाज़ा आपको जवाब सहीह होने का इत्मिनान कैसे होगा ? और अगर साइल येह कहता कि इम्तिहान मक्सूद है, तो थानवी साहब फरमाते कि मैं मद्रसए देवबन्द में इम्तिहान दे चुका हूँ, अब मैं आपको इम्तिहान देना नहीं चाहता और आप को इम्तिहान लेने का कोई हक् भी नहीं. साइल थानवी साहब का ऐसा बे दरंग जवाब सुन कर ख़ामोश हो जाता.

(4) अगर कोई किसी फे'ल के जाइज़ या ना जाइज़ होने के मुतअल्लिक् सवाल करता, तो थानवी साहब उस का साफ जवाब जाइज़ है या ना जाइज़ है, देने के बजाए टाल मटोल करने के लिये साइल से पूछते कि आप को शुबह काहे से पडा.

(5) कभी साइल को सवाल का जवाब देने के बजाए साइल की इल्मी इस्ति'दाद पूछते और साथ में येह भी पूछते कि सवाल पूछने से तुम्हारी निय्यत क्या है ? और आपकी इल्मी इस्ति'दाद और आपकी निय्यत मुझे मा'लूम नहीं लिहाज़ा जवाब न दूँगा.

(6) अगर पूछता कि फुलाँ काम करने के मुतअल्लिक् शरीअत का क्या हुक्म है ? ऐसे सवाल के जवाब में थानवी साहब शरई हुक्म बताने के बजाए साइल से पूछते कि किस का हुक्म ? हदीस का या ओलोमा का या मशाइख़ का ? अल गरज़ ख़ुद को मस्अला मा'लूम न होने की वजह से इस तरह साइल को उल्झन में डाल देते और सवाल का जवाब देने से अपनी जान छुडाते.

(7) अगर किसी जानवर य परिन्दे के हलाल या हराम होने का इस्तिफ्ता

किया जाता, तो थानवी साहब उसके हलाल या हराम होने का हुक्म बताने के बजाए साइल से उल्टा सवाल करते कि क्या तुम खाओगे ? येह अक़ीदे का मस्अला नहीं, न तुम पर पूछना फर्ज़ और न मुझ पर बताना फर्ज़. ऐसा केह कर जवाब न देते और साइल को ऐसे मसाइल न पूछने का मश्वरा देते.

अल मुख़्तसर ! थानवी साहब अपनी जहालत के ऐब पर पर्दा डालने के लिये फिक़्ही मसाइल या दीगर शरई अहकाम व उमूर के तअल्लुक् से जवाब देने के बजाए नित नई चाल चलते और साइल के सवाल का जवाब टाल देते. बल्कि कभी कभी तो बद अख़्लाक़ी और बद तेहज़ीबी का मुज़ाहेरा फरमाते हुए मस्अला पूछने वाले को ऐसा आडे हाथों लेते कि बेचारे साइल को दिन में तारे नज़र आने लगते और थानवी साहब की तशद्दुद आमेज़ डाँट डपट से जान छुडाना मुश्किल हो जाता. मुजद्दिद के आ'ला मन्सब पर कूद कर "चढ तो बैठे" लैकिन जहालत के दलदल में ऐसे फँसे हुए थे कि ज़रूरियाते दीन के आसान मसाइल बताते हुए थानवी साहब की जान धुकधुकी में अटक जाती थी. वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के ख़ुद साख़्ता जाहिल नाम निहाद मुजद्दिद जनाब थानवी साहब की इल्मी सलाहिय्यत के तअल्लुक् से हमने मुन्दरजए बाला नम्बर : 1 से 7 तक जो वज़ाहत की है, येह कोई गलत इल्ज़ाम, इत्तिहाम या इफ्तिरा परदाज़ी नहीं बल्कि ऐसी अज़्हर मिनश्शम्स हक़ीक़त है कि जिस का इन्कार नहीं किया जा सकता. हमारे इस दा'वे की दलील और सुबूत में थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात और सवानेह हयात पर मुश्तमिल देवबन्दी मक्तबए फिक्र की मो'तबर व मो'तमद कुतुब के चन्द इक़्तिबासात लुत्फ अन्दोज़ी के लिये नाज़ेरीन के पैशे ख़िदमत हैं :-

“बम्बई मे ंहज क्यूँ नही होता ?”

फिक्ह का मुसल्लम फत्वा है कि देहात में जुम्आ नहीं होता. नमाजे़ जुम्आ फर्ज़ होने के लिये शहर का होना शराइत से है. देहात में नमाजे़ जुम्आ क़ाइम नहीं हो सकती, इसकी अहम वजह यही है कि नमाजे़ जुम्आ क़ाइम करने के लिये फिक्ह की मुतअद्दद कुतुब में जो सात शराइत बयान फरमाए गए हैं, उन में पहली शर्त ''**शहर होना**'' है. येही वजह है कि देहात में नमाजे़ जुम्आ क़ाइम नहीं की जाती बल्कि जुम्आ के दिन भी देहात में नमाजे़ जो़हर पढी जाती है. फिक्ह का येह ऐसा मश्हूर और आसान मस्अला है कि थोडी सी भी मज़हबी मा'लूमात रखनेवाला आम आदमी भी इस मस्अले से वाकि़फ होता है. लैकिन तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत और ख़ुद साख़्ता मुजद्दिद से एक शख़्स ने देहात में जुम्आ न होने की वजह पूछी, तो क्या जवाब मिला ? मुलाहेज़ा फरमाएँ :-

ایک شخص مجھ سے کہنے لگے کہ گاؤں میں جمعہ کیوں نہیں ہوتا، اس کی کیا وجہ؟ میں نے کہا کہ بمبئی میں حج کیوں نہیں ہوتا، اس کی کیا وجہ؟ خاموش ہو گئے، پھر کچھ نہ بولے۔ اپنے ہی اعتراض کا جواب لینا آتا ہے، دوسرے کا بھی تو جواب دینا چاہئے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۲، قسط۴، صفحہ ۳۸۸، ملفوظ ۶۹۷

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۴، صفحہ ۱۷۰، ملفوظ ۲۰۶ (۱۵/ربیع الاول ۱۳۵۱ھ - پنج شنبہ، صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक शख़्स मुझ से कहने लगे कि गाँव में जुम्आ क्यूँ नहीं होता, इसकी क्या वजह ? मैंने कहा कि बम्बई में हज क्यूँ नहीं होता, इसकी क्या वजह ? ख़ामोश हो गए, फिर कुछ न बोले. अपने ही ए'तेराज़ का जवाब लेना आता है, दूसरे का भी तो जवाब देना चाहिये.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 2, कि़स्त 4, सफहा 388, मल्फूज़ 697

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 4, सफहा 170, मल्फूज़ 206 (15 / रबीउल अव्वल 1351 हि. पंज शम्बा, सुब्ह की मजलिस)

“ देहात में जुम्आ के मुतअल्लिक़ अजीब जवाब ”

فرمایا کہ ایک شخص نے بذریعہ خط دریافت کیا ہے کہ دیہات میں جمعہ جائز ہے یا نہیں؟ میں نے آج عجیب جواب لکھا ہے۔ یہ لکھ دیا ہے کہ کون سے امام کے نزدیک؟ اب بڑا گھبراوے گا، اگر میں لکھتا کہ جائز نہیں، تو چونکہ وہ میرا فتویٰ ہوتا۔ سائل بڑی گڑبڑ کرتا، اب ایک امام کا قول نقل کردوں گا اور اب چونکہ اس نے کسی امام کا قول دریافت نہیں کیا، اس لیے نہیں لکھا۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۲، قسط۴، صفحہ۴۰۸، ملفوظ ۷۳۵

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۴، صفحہ۱۹۴، ملفوظ ۲۴۳

(۱۷/ربیع الاول ۱۳۵۱ھ-شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

फरमाया कि एक शख़्स ने ब ज़रीए ख़त दरयाफ्त किया है कि देहात में जुम्आ जाइज़ है या नहीं ? मैंने आज अजीब जवाब लिखा है. येह लिख दिया है कि कौन से इमाम के नज़्दीक ? अब बडा घबरावेगा, अगर मैं लिखता कि जाइज़ नहीं, तो चूँकि वोह मेरा

फत्वा होता. साइल बडी गडबड करता, अब एक इमाम का क़ौल नक़्ल कर दूँगा और अब चूँकि उसने किसी इमाम का क़ौल दरयाफ्त नहीं किया, इस लिये नहीं लिखा.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़ः अशरफ अली थानवी, नाशिरः मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 2, क़िस्त 4, सफहा 408, मल्फ़ूज़ 735

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ः अशरफ अली थानवी, नाशिरः मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 4, सफहा 194, मल्फ़ूज़ 243

(17 / रबीउल अव्वल 1351 हि. शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

“नाक मुँह पर क्यूँ है ? पुश्त पर क्यूँ नही ?”

فرمایا مجھ سے ایک وکیل نے پوچھا، نمازیں پانچ کیوں مقرر ہوئی؟ میں نے کہا تمہاری ناک منہ پر کیوں ہے، پشت پر کیوں نہیں؟ اس نے جواب دیا کہ اگر پشت پر ہوتی تو بدزیب ہوتی، میں نے کہا بالکل غلط! اگر سب کی ناک پشت ہی پر ہوا کرتی تو ہرگز بری نہ لگتی۔ بس چپ رہ گیا۔

(۱) فیوض الخلائق، تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ، مرتبہ: مولوی عبدالخالق ٹانڈوی، تالیفات اشرفیہ کی قسط ہشتم، صفحہ: ۲۸، ملفوظ: ۵۵ ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفرنگر (یوپی)

(۲) حسن العزیز، (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتب: مولوی محمد یوسف صاحب بجنوری، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع مظفرنگر (یوپی) جلد: ۳ حصہ: ۱، قسط: ۱۲، ص: ۱۱۰

हिन्दी अनुवाद

फरमाया मुझ से एक वकील ने पूछा, नमाज़ें पाँच क्यूँ मुक़र्रर हुई? मैंने कहा तुम्हारी नाक मुँह पर क्यूँ है, पुश्त पर क्यूँ नहीं, उसने जवाब दिया कि अगर पुश्त पर होती तो बदज़ेब होती, मैंने कहा बिल्कुल गलत ! अगर सब की नाक पुश्त ही पर हुवा करती तो हरगिज़ बुरी न लगती. बस चुप रह गया.

: हवाला :

(1) फुयूज़ुल ख़लाइक़, थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ, मुरत्तबा : मौलवी अब्दुल ख़ालिक़ टाँडवी, तालीफात अशरफिया की क़िस्त हश्तम, सफहा : 28, मल्फ़ूज़: 55 नाशिर : मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फर नगर (यू.पी)

(2) हुसनुल अज़ीज़, (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ) मुरत्तब: मौलवी मुहम्मद यूसुफ साहब बिजनौरी, नाशिर: मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला मुज़फ्फर नगर (यू.पी) जिल्द:3, हिस्सा : 1, क़िस्त : 12, स.110

"मैं आपको इम्तिहान देना नही चाहता"

थानवी साहब से ग्यारहवीं शरीफ के मुतअल्लिक़ सवाल किया गया. थानवी साहब ने अपना अक़ीदा और नज़रिया छुपाने के लिये साफ जवाब देने के बजाए कैसा गोल मटोल जवाब दिया, और साइल के सवाल का जवाब टालते हुए बद अख़्लाक़ी का भी मुज़ाहेरा फरमाया. मुलाहेज़ा फरमाएँ :-

ایک سلسلۂ گفتگو میں فرمایا کہ میں ایک مرتبہ رامپور گیا۔ وعظ ہوا۔ باوجود یکہ میں نے وعظ میں کوئی اختلافی مسئلہ بیان نہیں کیا، مگر پھر بھی بعضوں کو شبہ ہوا کہ ہمارے مسئلہ بدعت کا مخالف ہے۔ اس کے امتحان کے لیے ایک صاحب میرے پاس آئے اور مجھ سے سوال کیا کہ گیارہویں کے متعلق کیا حکم ہے؟ میں نے کہا کہ آپ جو سوال کرتے ہیں استفادہ مقصود ہے یا امتحان یا کیا؟ کہا کہ استفادہ۔ میں نے کہا کہ آپ کو میرا مبلغ علم معلوم نہیں۔ دیانت معلوم نہیں، تو یہ آپ کو کیسے اطمنان ہوا کہ میں صحیح جواب دوں گا اور وہ قابل عمل ہوگا۔ آپ علماء شہر سے پوچھئے۔ کہا کہ اچھا یہی سمجھ لیجئے کہ استفادہ مقصود نہیں امتحان مقصود ہے۔ میں نے کہا کہ میں مدرسۂ دیوبند میں سالانہ ماہانہ امتحان دے چکا ہوں۔ اب میں آپ کو امتحان دینا نہیں چاہتا اور نہ آپ کو امتحان لینے کا کوئی حق ہے۔ بس اپنا سا منہ لیکر رہ گئے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد ۳، قسط ۱۴، صفحہ ۴۱۶، ملفوظ ۶۵۱

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ ۶، صفحہ ۱۸۵، ملفوظ ۲۳۵ (۴/ رجمادی الاولیٰ ۱۳۵۱ھ - سہ شنبہ، بوقت صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक सिलिसल-ए-गुफ्तगू में फरमाया कि मैं एक मरतबा रामपूर गया. वाअज़ हुवा. बा वजूद येह कि मैंने वाअज़ में कोई इख़्तिलाफी मस्अला बयान नहीं किया, मगर फिर भी बा'ज़ों को शुबह हुवा कि हमारे मस्लए बिदअत का मुख़ालिफ है. उसके इम्तिहान के लिये एक साहब मेरे पास आए और मुझ से सवाल किया कि ग्यारहवीं के मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है ? मैंने कहा जो आप सवाल करते हैं इस्तिफादा मक़्सूद है या इम्तिहान या क्या ? कहा कि इस्तिफादा. मैंने कहा कि आपको मेरा मब्लगे इल्म मा'लूम नहीं. दयानत मा'लूम नहीं, तो येह आपको कैसे इत्मिनान हुवा कि मैं सहीह जवाब दूँगा और वोह क़ाबिले अमल होगा. आप ओलोमा-ए-शहर से पूछिये. कहा कि अच्छा यही समझ लीजिये कि इस्तिफादा मक़्सूद नहीं इम्तिहान मक़्सूद है. मैंने कहा कि मैं मद्रसए देवबन्द में सालाना माहाना इम्तिहान दे चुका हूँ. अब मैं आपको इम्तिहान देना नहीं चाहता और न आपको इम्तिहान लेने का कोई हक़ है. बस अपना सा मुँह लेकर रह गए.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 3, क़िस्त 14, सफहा 416, मल्फूज़ 651

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 6, सफहा 185, मल्फूज़ 235 (4 / जमादिल ऊला 1351 हि. सेह शम्बा, ब वक़्ते सुब्ह की मजलिस)

"सूद क्यूँ हराम है ? का जवाब ज़िना क्यूँ हराम है ?"

ایک ایسے ہی صاحب کا جو کہ ایک قریب کے قصبہ میں سب انسپکٹر تھے، ایک واقعہ یاد آیا۔ ان کا خط آیا تھا۔ لکھا تھا کہ کافر سے سود لینا کیوں حرام ہے؟ میں نے لکھا کہ کافر عورت سے زنا کیوں حرام ہے؟ جواب آیا کہ علماء کو اس قدر خشک نہیں ہونا چاہئے۔ میں نے لکھا کہ جہلا کو بھی اس قدر تر نہ ہونا چاہیے کہ جس سے ڈوب ہی جائیں۔

(۱)الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند(یوپی)
جلد۲، قسط۳، صفحہ۲۹۸، ملفوظ۵۶۶

(۲)الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ(جدید ایڈیشن)از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش
دیوبند(یوپی) حصہ۴، صفحہ۶۱، ملفوظ۷۴

(۳)حسن العزیز(تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتب: مولوی محمد یوسف بجنوری، ناشر:
مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفرنگر(یوپی) جلد:۳، حصہ:۱، قسط:۱۲، ص:۱۱۰
(۷/ربیع الاول ۱۳۵۱ھ- چہارشنبہ، صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक ऐसे ही साहब का जो कि एक क़रीब के क़स्बे में सब इन्सपेक्टर थे, एक वाक़ेआ याद आया. उनका ख़त आया था. लिखा था कि काफिर से सूद लेना क्यूँ हराम है ? मैंने लिखा कि काफिर औरत से ज़िना क्यूँ हराम है ? जवाब आया कि ओलोमा को इस क़दर ख़ुश्क नहीं होना चाहिये. मैंने लिखा कि जोहला को भी इस क़दर तर न होना चाहिये कि जिस से डूब ही जाएँ.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 2, क़िस्त 3, सफहा 298, मल्फूज़ 566

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 4, सफहा 61, मल्फूज़ 74
हुस्नुल अज़ीज़ (थानवी साहब के मल्फूज़ात का मजमूआ) मुरत्तब: मौलवी मुहम्मद यूसुफ ब जनवरी, नाशिर: मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फर नगर (यू.पी) जिल्द:3, हिस्सा:1, क़िस्त:12, सफहा 110
(7/ रबीउल अव्वल 1351 हि.–चहार शम्बा, सुब्ह की मजलिस)

“इतनी तरी न चाहिये कि उस में डूब जाए”

काफिर से सूद क्यूँ हराम है ? इस सवाल का थानवी साहब ने मुन्दरजए बाला वाक़िए में मज़्कूर इन्सपेक्टर साहब के इलावा एक और शख़्स को भी ऐसा ही जवाब दिया कि काफिरा से ज़िना क्यूँ हराम है ? जब साइल को तशफ्फी बख़्श जवाब न मिला, तो उसने शिकायत का ख़त लिखा, लैकिन जवाबी ख़त के लिये पोस्ट का टिकट नहीं भेजा. अगर टिकट भेजा होता, तो उसको भी थानवी साहब येही जवाब लिखते कि इतनी तरी न चाहिये कि उस में डूब ही जाए.

فرمایا کہ ایک صاحب نے لکھا تھا کہ کافر سے سود لینا کیوں حرام ہے؟ میں نے لکھا کہ کافر عورت سے زنا کیوں حرام ہے؟ اس کا تو کوئی جواب نہیں دیا شکایت کا خط آیا۔ لکھا تھا کہ علماء کو اتنی خشکی نہ چاہئے۔ جواب کے لیے ٹکٹ نہ تھا اس لیے جواب نہیں دیا گیا۔ اگر ٹکٹ ہوتا تو یہ جواب دیتا کہ جہلاء کو بھی اتنی تری نہ چاہئے کہ اس میں ڈوب ہی جائیں۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد ۱، قسط ۲، صفحہ ۱۶۱، ملفوظ ۳۰۳

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ ۱، صفحہ ۲۲۴، ملفوظ ۳۰۳

(۳) حسن العزیز (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتب: مولوی محمد یوسف بجنوری، جلد: ۳، حصہ: ۱، قسط: ۱۲، ص: ۶۵ (۱۷/رمضان المبارک ۱۳۵۰ھ – سہ شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

फरमाया कि एक साहब ने लिखा था कि काफिर से सूद लेना क्यूँ हराम है ? मैंने लिखा कि काफिर औरत से ज़िना क्यूँ हराम है ? इसका तो कोई जवाब नहीं दिया शिकायत का ख़त आया. लिखा था कि ओलोमा को इतनी ख़ुश्की न चाहिये. जवाब के लिये टिकट न था इस लिये जवाब नहीं दिया गया. अगर टिकट होता तो येह जवाब देता कि जोहला को भी इतनी तरी न चाहिये कि उस में डूब ही जाएँ.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 1, क़िस्त 2, सफहा 161, मल्फ़ूज़ 303

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 1, सफहा 224, मल्फ़ूज़ 303

(3) हुस्नुल अज़ीज़ (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ) मुरत्तब: मौलवी मुहम्मद यूसुफ बिजनौरी, जिल्द:3, हिस्सा:1, क़िस्त:12, सफहा 65 (17 / रमज़ानुल मुबारक 1350 हि.– सेह शम्बा, बादे नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

थानवी साहब को ‘‘**तरी**’’ और उस में ‘‘**डूबना**’’ से एक क़ल्बी लगाव था. जिसकी तफ्सील राक़िमुल हुरूफ की तस्नीफ ‘‘**उलमाए देवबन्द की मेहफिलें**’’ में मुलाहेज़ा फरमाएँ.

“कलेक्टर से मस्अला पूछो, मुझ से ज़ियादा मोअज़्ज़ज़ वोह है”

थानवी साहब से एक शख़्स ने क़िरअत ख़लफुल इमाम या’नी इमाम की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़नेवाले मुक़्तदी के लिये क़िरअत करने

के अदमे जवाज़ की वजह पूछी, थानवी साहब ने कहा कि अगर मैं वजह बताऊँगा, तो क्या मेरे बताने का ए'तेबार करोगे ? और क्यूँ करोगे? उस शख़्स ने कहा कि आपका ए'तेबार इसलिये करूँगा कि आप मुअज़्ज़ज़ या'नी इज़्ज़तवाले आदमी हो. इस पर थानवी साहब ने जवाब दिया कि कलेक्टर से अब मस्अला पूछो. क्यूँकि मुझ से ज़ियादा मुअज़्ज़ज़ कलेक्टर है. हवाला मुलाहेज़ा हो:-

ایک شخص جامع مسجد سے بنگلہ تک ساتھ آیا اور بیٹھتے ہی کہا مجھے ایک بات پوچھنی ہے۔ فرمایا پوچھئے۔ کہا فاتحہ خلف الامام پڑھنا کیسا ہے؟ فرمایا جائز نہیں۔ کہا وجہ کیا ہے؟ فرمایا ہم جو کچھ بتادیں گے اس کا صحیح ہونا کیسے جانو گے؟ کہا ہم آپ کا اعتبار کریں گے۔ فرمایا جو جواب اس کا مجھے بہت بعد میں دینا ہوگا، وہ یہیں دیئے دیتا ہوں کہ جب ہمارا تمہیں اعتبار ہے اور ہمارے اعتبار پر دلیل کو صحیح مان لوگے، تو ابھی سے جو بتلایا ہے اس کو صحیح مان لو اور اعتبار کرلو۔ اخیر میں جا کر بھی تو یہی کہنا پڑے گا اور میں پوچھتا ہوں کہ کوئی وجہ بتاؤ اعتبار کرنے کی۔ ایک پردیسی راہ چلتے آدمی کا اعتبار ایک دینی مسئلہ میں کیوں کر لوگے؟

کہا آپ معزز آدمی ہیں۔ آپ خلاف نہیں کہیں گے۔ فرمایا معزز تو کلکٹر صاحب ہیں۔ ان سے پوچھ لو اور یہ ظاہر ہے اور کوئی بھی اس کا انکار نہیں کر سکتا۔ اول تو ہم معزز نہیں۔ کیا بات اعزاز کی دیکھی اور اگر ہوں بھی تو کلکٹر صاحب کی برابر تو معزز نہیں۔ بہر حال کلکٹر صاحب کے قول کو ہمارے قول پر ترجیح ہوگی۔

حسن العزیز، تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ، مرتبہ: مولوی حکیم محمد یوسف صاحب ومولوی محمد مصطفیٰ صاحب، جلد۴، قسط۱۰، صفحہ۱۵۰، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع مظفرنگر، (یوپی)

हिन्दी अनुवाद

एक शख़्स जामेअ मस्जिद से बंगला तक साथ आया और बैठते ही कहा मुझे एक बात पूछनी है. फरमाया पूछिये. कहा फातेहा ख़लफुल इमाम पढ़ना कैसा है? फरमाया जाइज़ नहीं. कहा वजह क्या है ? फरमाया हम जो कुछ बता देंगे उसका सहीह होना कैसे जानोगे? कहा हम आपका ए'तेबार करेंगे. फरमाया जो जवाब इसका मुझे बहुत बाद में देना होगा, वोह यहीं दिये देता हूँ कि जब हमारा तुम्हें ए'तेबार है और हमारे ए'तेबार पर दलील को सहीह मान लोगे, तो अभी से जो बतलाया है उसको सहीह मानलो और ए'तेबार कर लो. आख़ीर में जा कर भी तो येही कहना पडेगा और मैं पूछता हूँ कि कोई वजह बताओ ए'तेबार करने की. एक परदेसी राह चलते आदमी का ए'तेबार एक दीनी मस्अले में क्यूँ कर लोगे ?

कहा आप मुअज़्ज़ज़ आदमी हैं. आप ख़िलाफ नहीं कहेगे. फरमाया मुअज़्ज़ज़ तो कलेक्टर साहब हैं. उन से पूछ लो और येह ज़ाहिर है और कोई भी

इसका इन्कार नहीं कर सकता. अव्वल तो हम मुअज़्ज़ज़ नहीं. क्या बात ए'ज़ाज़ की देखी और अगर हों भी तो कलेक्टर साहब की बराबर तो मुअज़्ज़ज़ नहीं. बहर हाल कलेक्टर साहब के क़ौल को हमारे क़ौल पर तरजीह होगी.

: हवाला :

हुस्नुल अज़ीज़, थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ, मुरत्तबाः मौलवी हकीम मुहम्मद साहब व मौलवी मुहम्मद मुस्तफा साहब, जिल्द 4, क़िस्त 10, सफहा 150, नाशिरः मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला मुज़फ्फरनगर (यू.पी)

"सवाल अनिल हिक्म में क्या हिक्मत है ?"

ایک ایسے ہی مذاق والے شخص نے لکھا کہ فلاں مسئلہ میں کیا حکمت ہے؟ میں نے جواب میں لکھا کہ سوال عن الحکمت میں کیا حکمت ہے؟ ہم سے تو اللہ تعالیٰ کے احکام کی حکمتیں پوچھی جاتی ہیں، جو کہ ہمارے افعال بھی نہیں۔ آپ اپنے ہی سوال کی حکمتیں بتلا دیجئے جو کہ آپ کا فعل ہے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۲، قسط۳، صفحہ۲۹۸، ملفوظ ۵۶۶

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۴، صفحہ۶۱، ملفوظ۴۷

(۳) حسن العزیز (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتب: مولوی محمد یوسف بجنوری، جلد:۳، حصہ:۱، قسط:۱۲، ص:۶۷)

(۷ربیع الاول ۱۳۵۱ھ - چہارشنبہ، صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक ऐसे ही मज़ाक़वाले शख़्स ने लिखा कि फलाँ मस्अले में क्या हिक्मत है? मैंने जवाब में लिखा कि सवाल अनिल हिक्मत में क्या हिक्मत है ? हम से तो अल्लाह तआला के अहकाम की हिक्मतें पूछी जाती हैं, जो कि हमारे अफ्आल भी नहीं. आप अपने ही सवाल की हिक्मतें बतला दीजिये जो कि आपका फे'ल है.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़ः अशरफ अली थानवी, नाशिर : मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 2, क़िस्त 3, सफहा 298, मल्फ़ूज़ 566

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 4, सफहा 61, मल्फ़ूज़ 74
(3) हुस्नुल अज़ीज़ (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ) मुरत्तबः मौलवी मुहम्मद यूसुफ बिजनौरी, जिल्दः3, हिस्साः1, क़िस्तः12, स.67) (7 / रबीउल अव्वल 1351 हि. चहार शम्बा, सुब्ह की मजलिस)

अल्लाह तबारक व तआला का एक सिफाती नाम "**हकीम**" या'नी हिक्मत वाला है. अरबी का मशहूर मक़ूला भी है कि "فِعْلُ الْحَكِيْمِ لَا يَخْلُوْ عَنِ الْحِكْمَةِ" या'नी हकीम का कोई भी काम हिक्मत से ख़ाली नहीं होता. जब अल्लाह तआला हकीम है, तो अल्लाह तआला के तमाम अहकाम भी हिक्मत से भरे हुए हैं. इस्लाम के हर क़ानून में कोई न कोई हिक्मत या'नी राज़, भेद, भलाई, दानाई, तदबीर, मस्लिहत, इन्तज़ामे अम्र, जैसे महासिन पोशीदा हैं, जिस को हर आम आदमी नहीं पहेचानता, इस्लामी क़वानीन में पोशीदा हिक्मत के रुमूज़ पर ओलोमा-ए-इस्लाम वाक़िफ होते हैं और वोह ओलोमा अपनी इस वाक़फियत का इशाअते इस्लाम और फरोगे दीन की ख़िदमत के लिये इस्तमाल करते हैं. या'नी अवाम को आमाले सालेहा की तरगीब और बुरे कामों से इजतिनाब की नसीहत करते वक़्त इस्लामी अहकाम की अहमिय्यत जता कर दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत और दीने इस्लाम के

अहकाम के महासिन की अवाम को वाक़फ़ियत मर्हमत फरमाते हैं ताकि इस्लाम के पैरव और ताबेअ इस्लामी अहकाम की पाबन्दी से अदाएगी करें और इस्लाम की हक़्क़ानियत पर अपना यक़ीन मज़ीद पुख़्ता करें. क़ौमे मुस्लिम की अक्सरियत इस हक़ीक़त से तो अच्छी तरह वाक़िफ है कि इस्लाम के हर क़ानून में कोई न कोई हिक्मत पोशीदा है, लैकिन वोह इस हिक्मत पर मुत्तलअ नहीं. लिहाज़ा वोह ओलोमा से पूछकर अपना ईमान व अक़ीदा और यक़ीन पुख़्ता करते हैं.

थानवी साहब से भी ऐसे ही किसी मस्अले की हिक्मत पूछने की किसी शख़्स ने हिम्मत कर डाली. मगर वाह रे थानवी साहब ! दाद देनी चाहिये उनकी ज़हानत की ! मस्अले की हिक्मत मा'लूम न थी लिहाज़ा अपनी जहालत का ए'तेराफ करने के बजाए साइल को ही लताडना शुरूअ कर दिया और **उल्टा चोर कोतवालको डांटे** वाली मिस्ल के मिस्दाक़ बनते हुए उल्टा सवाल कर डाला कि **सवाल अनिल हिक्मत में क्या हिक्मत है ?** या'नी तुम हिक्मत के तअल्लुक़ से जो सवाल कर रहे हो, इस में तुम्हारी क्या हिक्मत है ? इस तरह बे तुकी मन्तिक़ छाँट कर इल्मी जवाब देने से अपनी जान छुडा ली. इस तरह इल्मी मआमलात में **तोता चश्मी करना** मैदाने इल्म से बुज़्दिली दिखा कर राहे फरार इख़्तियार करने के मुतरादिफ है. कोई बहादुरी नहीं. मगर थानवी साहब को अपनी इश बुज़्दिली में भी बहादुरी के जौहर नज़र आते हैं. इस लिये तो उन्हों ने अपनी इस ना मर्दी के कारनामे को अपनी मजलिसों में बार बार फख़्रिया बयान फरमा रहे हैं. अभी नाज़िरीन ने जो हवाला "**अल इफाज़ातिल यौमिया**" का मुलाहेज़ा फरमाया, वोह 7, रबीउल अव्वल 1351 हि., बरोज़ चहार शम्बा, सुब्ह की मजलिस का था. लैकिन सिर्फ इसी दिन अपनी ना मर्दी का

कारनामा बयान कर देने से थानवी साहब मुत्मइन न हुए. लिहाज़ा पचास दिनों के बाद या'नी 27, रबीउस्सानी 1351 हि., बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस में भी इसी वाक़िए को बयान किया है. अपनी मज़्मूम हरकत को ब-ज़अ्मे ख़्वेश बहादुरी गरदान कर शैख़ी मारी है और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की हरकत की है. हवाला मुलाहेज़ा हो:-

ایک دوسرے شخص نے لکھا کہ فلاں مسئلہ میں کیا حکمت ہے؟ میں نے لکھا کہ اس سوال عن الحکمت میں کہ خود تمہارا فعل ہے، کیا حکمت ہے؟

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۳، قسط۴، صفحہ۳۵۹، ملفوظ۵۲۹

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۶، صفحہ۹۲، ملفوظ۱۱۴

(۲۷/ربیع الثانی ۱۳۵۱ھ - چہار شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक दूसरे शख़्स ने लिखा कि फलाँ मस्अले में क्या हिक्मत है? मैंने लिखा कि इस सवाल अनिल हिक्मत में कि खुद तुम्हारा फे'ल है, क्या हिक्मत है ?

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 3, क़िस्त 4, सफहा 359, मल्फ़ूज़ 529

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 6, सफहा 92, मल्फ़ूज़ 114

(27/ रबीउस्सानी 1351 हि. चहार शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

क्या कव्वा खाओगे ?

वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के इमामे रब्बानी और मुजद्दिद मौलवी रशीद अहमद गँगोही ने कव्वा (Crow) खाना जाइज़ बल्कि सवाब होगा. का फत्वा दे दिया. फतावा रशीदिया (मुबव्वब) जदीद एडीशन, मत्बूआ: मक्तबए थानवी, देवबन्द, स.597 का हवाला पैशे ख़िदमत है :-

सवाल: **जिस जगह ज़ागे मा'रूफा को कि अक्सर हराम जानते हों और खानेवाले को भी बुरा समझते हों, ऐसी जगह उस कव्वा खानेवाले को सवाब होगा या न सवाब, न अज़ाब.**

जवाब : सवाब होगा.

मौलवी रशीद अहमद गँगोही ने कव्वा खाना सिर्फ जाइज़ ही नहीं बल्कि सवाब होने का मज़्कूरा फत्वा दिया. लिहाज़ा पूरे मुल्क में

हलचल मच गई. हर जगह येही हँगामा था कि वहाबियों के पेश्वा ने कव्वा खाना जाइज़ बल्कि सवाब क़रार दिया. लिहाज़ा अवामुन्नास ने बड़ी शिद्दत से उसकी मुख़ालिफत की. हर जगह वहाबी, देवबन्दी मक्तबए फिक्र के मुल्लाओं पर लताड पडने लगी. ख़ुद वहाबी मुल्ला भी परेशान थे कि हमारे पेश्वा गँगोही ने कैसा अजीब व गरीब फत्वा दे दिया. अब हम लोगों को क्या जवाब देंगे. मारे शर्म के लोगों से मुँह छुपाते फिरते थे. क्यूँकि उन मौलवियों के पास इस फत्वे के ज़िम्न में पूछे जाने वाले सवालात का कोई जवाब न था. लिहाज़ा सब वहाबी कठ मुल्ले सहमे हुए थे.

ठीक यही हालत भी थानवी साहब की थी. बल्कि थानवी साहब की हालत तो बहुत ही ख़राब थी क्यूँकि थानवी साहब ओलोमा-ए-देवबन्द के पेश्वा की हैसियत से काफी मश्हूर थे. लिहाज़ा मुवाफिक़ीन व मुख़ालिफीन हर जगह थानवी साहब से कव्वे के मस्अले में इस्तिफ्ता करते थे. थानवी साहब की हालत **''साँप के मुँह में छछुन्दर-निगले तो अन्धा-उगले तो कोढी''** जैसी थी. अगर गँगोही साहब के फत्वे की तस्दीक़ व ताईद करके कव्वे की हिल्लत बताएँ, तो अवामुन्नास तज़्लील के जूते मारती है और अगर गँगोही साहब के फत्वे की तक्ज़ीब और मुख़ालिफत करके कव्वे की हुर्मत बताएँ, तो अपने ही पेश्वा का फत्वा गलत साबित होता है. थानवी साहब बुरी तरह फँसे हुए थे. हाँ कहते भी नहीं बनती और ना कहते भी नहीं बनती. लिहाज़ा थानवी साहब ने अपने फन्ने मक्रो फरेब की महारत का मुज़ाहेरा फरमाते हुए आहनी दीवार में से भी सबीले फरार का **''सूराख़ ढूँढ निकाला''**. कव्वा खाना जाइज़ है या ना जाइज़ ? इस सवाल का नफी या इस्बात में जवाब देने में दोनों सूरत में **''गले में घुँगरू बोलने का''** कामिल इम्कान था. पुरानी

तरकीब या'नी उल्टा सवाल करना आज़माया, और...??

جس زنانہ میں کوّے کے مسئلہ کا شوروغل ہوا، بہت لوگ مجھ سے پوچھتے تھے۔ میں ان سے پوچھتا کہ کیا کھاؤگے؟ کہتے نہیں۔ میں کہتا تو نہ بتاؤں گا۔ نہ تم پر پوچھنا فرض، نہ مجھ پر بتانا فرض اور عقیدہ کا مسئلہ نہیں اور یہ عادت کہ غیر ضروری چیزوں سے جن میں غیر ضروری سوال بھی آگیا، اجتناب رکھو۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۱، قسط۳، صفحہ۳۳۷، ملفوظ۶۷۳

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۱، صفحہ۴۶۰، ملفوظ۶۷۱

(۴رشوال المکرّم ۱۳۵۰ھ- جمعہ، بوقت صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

जिस ज़माने में कव्वे के मस्अले का शोरो गुल हुवा, बहुत लोग मुझ से पूछते थे. मैं उन से पूछता कि क्या खाओगे ? कहते नहीं. मैं केहता तो न बताऊँगा. न तुम पर पूछना फर्ज़, न मुझ पर बताना फर्ज़ और अक़ीदे का मस्अला नहीं और येह आदत कि गैर ज़रूरी चीज़ों से जिन में गैर ज़रूरी सवाल भी आ गया, इजतिनाब रखो.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 1, क़िस्त 3, सफहा 337, मल्फूज़ 673
(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 1, सफहा 460, मल्फूज़ 671
(4/ शव्वालुल मुकर्रम 1350 हि. जुम्आ, ब वक़्ते सुब्ह की मजलिस)

वाह ! क्या अन्दाज़ है ! थानवी साहब ने हक़ बात को कैसे अनोखे अन्दाज़ से पसे पर्दा डाल दिया. सवाल करने वाले से ही सवाल किया कि क्या तुम्हारा इरादा कव्वा खाने का है ? ऐसा कौन होगा जो येह कहे कि जी हाँ ! मैं कव्वा खाने का इरादा रखता हूँ. बल्कि हर मुसलमान येही जवाब देगा कि नहीं. बस थानवी साहब को बहाना मिल गया कि जब खाने का इरादा नहीं तो क्यूँ पूछते हो कि कव्वा खाना हलाल है ? या हराम है ?

क़ारईने किराम ! गौर फरमाएँ कि वहाबी देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत का नाम निहाद मुजद्दिद हलाल और हराम का मस्अला बताने के मआमले में कैसा नाटक रचा रहा है. एक नया तरीक़ा और बिदअत ईजाद कर रहा है. इस्लामी शरीअत में ऐसी बे शुमार चीज़ों का ज़िक्र है,

जिनका खाना हलाल या हराम है. एक मुसलमान पर लाज़मी है कि वोह इतना इल्म और मसाइल से वाक़फियत रखे ताकि हलाल और हराम में तमीज़ कर सके. मस्लन: शराब पीना, ज़िना करना, चोरी करना, वग़ैरा अफ्आले गुनाह का किसी आलिम से कोई मस्अला पूछे कि शराब पीना, ज़िना करना शरअन कैसा है ? और वोह आलिम सवाल करने वाले से येह कहे कि क्या आपका शराब पीने का और ज़िना करने का इरादा है ? तो ऐसे आलिम को आलिम नहीं बल्कि ज़ालिम या जाहिल ही कहा जाएगा. आलिम का काम इस्लामी अहकाम बताना है. साइल येह काम करेगा, किस लिये पूछ रहा है. इस झँझट में पडने की कोई ज़रूरत नहीं.

क्या फिक़्ही मस्अला तब ही पूछा जा सकता है, जब उसके करने का इरादा हो, हरगिज़ नहीं बल्कि हराम और हलाल के अहकाम की मा'लूमात ज़रूरियाते दीन के इल्म की हैसियत रखती है. हर मुसलमान अपने दीने हक़ की कामिल पैरवी करने के लिये शरीअत के अहकाम जानने की कोशिश करता है. ओलोमा से मसाइल पूछ पूछकर अपनी मा'लूमात में इज़ाफा करता है. हज़ारों मसाइल हलाल व हराम के अहकाम पर मुश्तमिल हैं. इन तमाम मसाइल से मुतअल्लिक़ तमाम काम करने की ही सूरत में ही मसाइल नहीं जाने और सीखे जाते.

लैकिन थानवी साहब ने नया क़ानून नाफिज़ कर दिया कि अगर वोह काम करना है, तब ही मा'लूम करो कि येह काम करना जाइज़ है या ना जाइज़ ? या'नी मस्अला मा'लूम करने के लिये वोह काम करना ज़रूरी है. या'नी मसाइल मा'लूम मत करो ? दीन के अहकाम मत सीखो, जाहिल बन कर घूमो, जब कोई काम करना हो, तब पूछ लिया करो कि येह काम करना जाइज़ है या ना जाइज़ ?

मुन्दरजए बाला इबारत में थानवी साहब का येह जुम्ला क़ाबिले ग़ौर तलब है कि "**अक़ीदे का मस्अला नहीं, और येह आदत कि गैर ज़रूरी चीज़ों से, जिन में गैर ज़रूरी सवाल भी आ गया, इजतिनाब करो.**" जिसका साफ मतलब येह हुवा कि कव्वा खाना हलाल है या हराम ? येह अक़ीदे का मस्अला नहीं. या'नी हलाल व हराम का मस्अला पूछना गैर ज़रूरी है. लिहाज़ा ऐसे सवाल पूछने से इजतिनाब रखो या'नी बचो. थानवी साहब येह मश्वरा इनायत फरमा रहे हैं कि हलाल और हराम के मसाइल या'नी दीन के ज़रूरी मसाइल मा'लूम करना गैर ज़रूरी है. या'नी दीन के ज़रूरी मसाइल का इल्म हासिल करना ज़रूरी नहीं. लिहाज़ा इजतिनाब या'नी परहेज़ करो. मत मा'लूम करो. सिर्फ अक़ीदे के तअल्लुक़ से ही सवाल करो. अगर कव्वा खाना है, तब ही पूछो कि कव्वा खाना जाइज़ है या ना जाइज़ ? जब कव्वा खाने का इरादा ही नहीं, तो क्यूँ पूछते हो कि कव्वा खाना कैसा है ?

वाह क्या मन्तिक़ चलाई है ! कैसी चाल चली है !!! हक़ बात छुपाने के लिये कैसे कैसे करतब दिखाए जा रहे हैं. एक आसान मस्अला था और इसका साफ व सहल जवाब था. जाइज़ है या ना जाइज़. लैकिन थानवी साहब गोलगोल जवाब दे रहे हैं. साइल को उल्झा रहे हैं. और दर हक़ीक़त अपने झूटे और जाहिल पेश्वा गँगोही को बचा रहे. क्यूँकि अगर येह जवाब देते हैं कि "**कव्वा खाना हराम है**" तो गँगोही साहब का फत्वा गलत साबित होता है और कव्वे के मस्अले में गँगोही साहब के ख़िलाफ जो हँगामा बरपा था, उसको तक़्वियत पहोंचती. क्यूँकि थानवी साहब के अदमे जवाज़ के क़ौल से गँगोही साहब की तक्ज़ीब होती है. लिहाज़ा साइल के सवाल का जवाब देने से जान छुड़ाने के लिये नई तरकीब ढूँढ निकाली और जवाब न देने में अपनी और गँगोही साहब की आफियत समझी.

"जाहिल मुजद्दिद को हुज़ूरे अक़्दस के फज़ाइल याद न थे"

हुज़ूरे अक़्दस, शहेन्शाहे कौनैन, सरवरे आलम, सय्यदुल अम्बिया वल मुर्सलीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, रहमतुल्लिल आलमीन, हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम की ज़ाते सितूदा सिफात इतने कसीर फज़ाइल व कमालात व ख़साइस की हामिल है कि अगर किसी मक्तब के तालिबे इल्म बल्कि मज़दूर क़िस्म के किसी आम मुसलमान को भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम के फज़ाइल बयान करने के लिये खडा कर दिया जाए, तो वोह काफी देर तक बडी आसानी के साथ वालेहाना अन्दाज़ और महब्बत भरे लबो लहेजे में फज़ाइले अक़्दस बयान करके दादो तहसीन हासिल करेगा. लैकिन वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के जाहिल मुजद्दिद और गुस्ताख़े बारगाहे रिसालत, मौलवी अशरफ अली थानवी साहब को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम के फज़ाइल याद न थे. एक हवाला पेशे ख़िदमत है :-

اسی طرح دار العلوم دیو بند کے بڑے جلسۂ دستار بندی میں بعض حضرات اکابر
نے ارشاد فرمایا کہ اپنی جماعت کی مصلحت کے لیے حضور سرور عالم صلی اللہ علیہ
وسلم کے فضائل بیان کئے جائیں۔ تاکہ اپنے مجمع پر جو وہابیت کا شبہ ہے، وہ
دور ہو۔ یہ موقع بھی اچھا ہے، کیوں کہ اس وقت مختلف طبقات کے لوگ موجود
ہیں۔ حضرت والا نے بہ ادب عرض کیا کہ اس کے لئے روایات کی ضرورت

ہے اور وہ روایات مجھ کو مستحضر نہیں۔ اس پر حضرت والا سے فرمائش ہوئی کہ اگر وقت پر کچھ روایات یاد آجائیں، تو ان کے متعلق کچھ بیان کر دیا جائے، ورنہ خیر۔ چونکہ اکابر کی طرف سے اختیار مل گیا، اس لئے حضرت والا نے حُبِّ دنیا کے متعلق وعظ بیان فرمایا۔ جس کی بوجہ ابتلاءِ عام سخت ضرورت تھی۔

اشرف السوانح، مصنف: خواجہ عزیز الحسن غوری مجذوب، ناشر: مکتبۂ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع مظفرنگر (یوپی) جلد:۱، باب: دہم، ص:۷۶

हिन्दी अनुवाद

इसी तरह दारुल उलूम देवबन्द के बडे जल्सए दस्तारबन्दी में बाज़ हज़रात अकाबिर ने इर्शाद फरमाया कि अपनी जमाअत की मस्लेहत के लिये हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम के फज़ाइल बयान किये जाएँ. ताकि अपने मजमे पर जो वहाबियत का शुब्हा है, वोह दूर हो. येह मौक़ा भी अच्छा है, क्यूँकि इस वक़्त मुख़्तलिफ तबक़ात के लोग मौजूद हैं. हज़रते वाला ने बा अदब अर्ज़ किया कि इसके लिये रिवायात की ज़रूरत है और वोह रिवायात मुझ को मुस्तहज़र नहीं. इस पर हज़रते वाला से फरमाइश हुई कि अगर वक़्त पर कुछ रिवायात याद आजाएँ, तो उनके मुतअल्लिक़ कुछ बयान कर दिया जाए,

वरना ख़ैर. चूँकि अकाबिर की तरफ से इख़्तियार मिल गया, इस लिये हज़रते वाला ने हुब्बे दुनिया के मुतअल्लिक़ वाअज़ बयान फरमाया. जिसकी ब वज्हे इब्तिलाए आम सख़्त ज़रूरत थी.

: हवाला :

अशरफुस्सवानेह, मुसन्निफ: ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन गौरी मज्ज़ूब, नाशिर: मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला मुज़फ्फर नगर (यू.पी) जिल्द:1, बाब:दहम, स:76

मुन्दरजए बाला इबारत को एक दो मरतबा नहीं मुतअद्दिद मरतबा ब नज़रे अमीक़ मुतालेआ फरमाएँ. कई हैरत अंगेज़ इन्किशाफात सामने आएँगे, मसलन:

(1) दारुल उलूम देवबन्द के बडे जल्सए दस्तारबन्दी के मौक़े पर देवबन्दी मक्तबए फिक्र के बाज़ अकाबिर ने थानवी साहब से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल बयान करने की दरख़्वास्त की.

(2) थानवी साहब से येह फरमाइश अपने मफाद और फाइदे के लिये की गई थी, या'नी देवबन्दी, वहाबी जमाअत के तअल्लुक़ से अवामुन्नास की येह राय है कि येह जमाअत गुस्ताख़े रसूल है और इस जमाअत के ओलोमा फज़ाइले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

बयान नहीं करते. लिहाज़ा दारुल उलूम को बहुत ही बड़ा फाइदा होगा और वोह फाइदा येह है कि हम पर वहाबियत का जो शुब्हा है, वोह दूर हो जाएगा.

(3) हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल महब्बते रसूल, ता'ज़ीमे रसूल, अज़मते रसूल का इज़्हार, तौक़ीर व उल्फत रसूल की बिना पर नहीं बयान किये जाते बल्कि एक जची तुली साज़िश बल्कि तक़य्या बाज़ी के तहत बयान किये जा रहे हैं. हालाँकि एक मो'मिन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल सिर्फ और सिर्फ महब्बते रसूल के जज़्बए सादिक़ के तहत ही बयान करता है. लैकिन मुनाफिक़ों की जमाअत फज़ाइले रसूल सिर्फ अपने फाइदे और नफे के लिये बयान कर रही है.

(4) "**अशरफुस्सवानेह**" की मज़कूरा इबारत के इन अल्फाज़ की तरफ भी ख़ास तवज्जोह दें कि "**येह मौक़ा भी अच्छा है, क्यूँकि इस वक़्त मुख़्तलिफ तबक़ात के लोग मौजूद हैं**" या'नी इस वक़्त हमारी वहाबी जमाअत के लोगों के इलावा अहले सुन्नत व जमाअत के सहीहुल अक़ीदा लोग भी काफी ता'दाद में हैं और येह सुन्नी हज़रात हमें वहाबी गुमान करते हैं और वहाबी गुस्ताख़े रसूल होता है. वहाबी कभी भी हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल बयान नहीं करता. लिहाज़ा येह मौक़ा गनीमत है. देवबन्दी मक्तबए फिक्र के लोगों पर भी ईमान वाले लोग वहाबी होने का शक व शुब्हा करते हैं. हम अपने सर से वहाबियत के शुब्हे का बोझ हलका कर डालें. इस वक़्त जल्सए दस्तारबन्दी में काफी ता'दाद में सुन्नी ख़याल के लोग मौजूद हैं. हालाँकि हम भी पक्के वहाबी ही हैं, लैकिन अपनी वहाबियत पर पर्दा डालने के लिये हम इस वक़्त तक़िय्या बाज़ी इख़्तियार

करके फज़ाइले रसूल बयान करके लोगों को धोका और फरेब देकर अपनी पोज़ीशन साफ करलें कि हम वहाबी नहीं हैं.

(5) वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के अकाबिर ओलोमा ने बन्द लफ्ज़ों में इस हक़ीक़त का ए'तेराफ कर लिया है कि वहाबी गुस्ताख़े रसूल होता है और वहाबी कभी भी फज़ाइले रसूल के उन्वान पर तक़रीर व बयान नहीं करता.

(6) इबारत के अल्फाज़ "**येह मौक़ा भी अच्छा है**" भी गौर तलब हैं. येह मौक़ा नहीं "**येह मौक़ा भी**" के अल्फाज़ हैं, जिसका मतलब येह हुवा कि लोगों को धोका देने के लिये फज़ाइले रसूल बयान करने का सिर्फ येही मौक़ा नहीं बल्कि "**येह मौक़ा भी**" है. या'नी वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के मुत्तबईन ऐसे कई मौक़ों पर लोगों को धोका देते हैं. हुज़ूरे अक्दस रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल महब्बते रसूल के जज़्बए सादिक़ के तहत नहीं बल्कि लोगों को धोका और फरेब देने के लिये बयान करते हैं. बल्कि हमेशा ऐसे मौक़ों की तलाश और जुस्तजू में रहते हैं कि फज़ाइले रसूल बयान करके अवामुन्नास के साथ धोकाबाज़ी और फरेबकारी करें.

(7) दारुल उलूम देवबन्द के बडे जल्सए दस्तारबन्दी में भी यही धोकेबाज़ी की पोलीसी अपनाई गई और अवामुन्नास को धोका देने के लिये फज़ाइले रसूल बयान करने का तय किया. लैकिन बयान कौन करे ? उन दिनों में वहाबी जमाअत के मौलवी अशरफ अली साहब थानवी का वाअज़ मश्हूर था. देवबन्दी मक्तबए फिक्र के अकाबिर ओलोमा ने इस फरेबी कामको अन्जाम देने के लिये थानवी साहब का इन्तेख़ाब किया और थानवी साहब को मैदान में उतारना चाहा. लैकिन वहाबियों का रेस (Race) का घोडा घोड दौड के **मैदान में चराग पा**

होने के बजाए अड गया और येह केह दिया कि **''उसके लिये रिवायात की ज़रूरत है और वोह रिवायात मुझ को मुस्तहज़र नहीं''**

(8) या'नी थानवी साहब ने खुल्लम खुल्ला इक़रार कर लिया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल बयान करने के लिये रिवायात बयान करने की ज़रूरत पडती है और ऐसे वाके़आत कि जिन वाके़आत के बयान करने से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की फज़ीलत व अज़्मत का इज़्हार हो, ऐसे वाके़आत मुझ को मुस्तहज़र नहीं, या'नी याद नहीं. वाह ! थानवी साहब वाह ! थानवी साहब के मल्फूज़ात पर मुश्तमिल कसीरुत्ता'दाद मत्बूआत का मुतालेआ करने से मा'लूम होगा कि दुनिया भरके खुराफात और लग्वियात व फहशियात पर मुश्तमिल हज़ारों बेहूदा, मोहमल, बे मा'ना, वाहियात, फुज़ूल, बे अस्ल, और औबाशी रिवायात थानवी साहब को अच्छी तरह याद थीं और जिस तरह कोई लोफर अपने चेले चपाटों के सामने ऐसी रिवायात फख़्रिया बयान करता है, इसी तरह थानवी साहब भी अपनी रोज़्मर्रा की मजलिसों और महेफिलों में बयान करते थे, जिनको थानवी साहब के मुरीदीन व मो'तके़दीन क़लमबन्द करते थे और वोह रिवायात आजकल इस्लामी लिटरेचर की हैसियत से शाएअ की जा रही हैं. अल हासिल ! थानवी साहब को क़ीमती वक़्त ज़ाएअ करनेवाली लग्वियात पर मुश्तमिल रिवायात कसरत से याद थीं लैकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल की एक भी रिवायत याद नहीं थी.

(9) थानवी साहब ने फज़ाइले अक़्दस के उन्वान पर बयान करने से इन्कार कर दिया और इन्कार की वजह येह बताई कि रिवायात याद नहीं. थानवी साहब के इन्कार करने पर फरमाइश करने वाले वहाबी (देवबन्दी) जमाअत के अकाबिर ओलोमा ने थानवी साहब से फरमाया

कि **''अगर वक़्त पर कुछ रिवायात याद आ जाएँ, तो उनके मुतअल्लिक़ कुछ बयान कर दिया जाए, वरना ख़ैर''** या'नी थानवी साहब से अवलन फज़ाइले रसूल बयान करने की जो फरमाइश की गई थी वोह फरमाइश ऐन तक़रीर के वक़्त नहीं की गई थी कि थानवी साहब के नाम का नाज़िमे जल्सा ने ए'लान किया हो कि अब थानवी साहब तक़रीर फरमाएँगे और थानवी साहब खडे हो कर माइक सँभालने जा रहे हों और उस वक़्त उन से फरमाइश की गई हो, नहीं बल्कि बहुत पहले जब दीगर मुक़र्रिरीन हज़रात तक़रीर कर रहे थे और थानवी साहब अपने नम्बर लगने के इन्तज़ार में थे, तब फरमाइश की गई थी. मगर जब थानवी साहब ने इन्कार कर दिया, तो उन्हें मज़ीद गुज़ारिश करते हुए कहा गया कि जनाब इस वक़्त तो आपको तक़रीर नहीं करनी है. इस वक़्त दीगर मुक़र्रिरीन बयान कर रहे हैं. आपकी तक़रीर का वक़्त बाद में है. लिहाज़ा जब आपका तक़रीर का वक़्त आए, तब तक मैं भी अगर आपको फज़ाइले रसूल की रिवायात याद आजाएँ, तो बयान कर देना.

मगर हाए अफ्सोस ! गुस्ताख़े रसूल, ख़र दिमाग को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल के तअल्लुक़ से कुछ भी न था, तो कैसे याद आता? हालाँकि येह तजुर्बे से साबितशुदा हक़ीक़त है कि किसी मुक़र्रिर को उसकी तक़रीर का वक़्त आने से पहले कोई मुश्किल उन्वान दे दिया जाता है, जब उन्वान दिया जाता है उस वक़्त उस को दिये गए उन्वान के तअल्लुक़ से मज़ामीन मुस्तहज़र नहीं होते लैकिन वोह स्टेज पर बैठे बैठे अपने तक़रीर का वक़्त आने तक के वक़्फे में उस उन्वान के तअल्लुक़ से अपने ज़ेहन में मज़ामीन तरतीब दे देता है और अपनी तक़रीर में हत्तल मक़्दूर उस उन्वान के

तअल्लुक़ से तफ्सीली गुफ्तगू कर लेता है. लैकिन वहाबी, देवबन्दी जमाअत का कोर बातिन और कोर मगज़ जाहिल नाम निहाद मुजद्दिद फज़ाइले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जैसे आसान उन्वान के तअल्लुक़ से अपनी तक़रीर का वक़्त आने तक के वक़्फे के दौरान भी कोई मज़्मून या कोई रिवायत अपने ज़हेन में तरतीब न दे सका. और थानवी साहब के लिये येह मुम्किन भी नहीं था.

(10) ''**अशरफुस्सवानेह**'' की मज़्कूरा इबारत के जिस जुम्ले के तहत हम गुफ्तगू कर रहे हैं, उस जुम्ले के आख़िर में ''**वरना ख़ैर**'' के अल्फाज़ हैं. या'नी वहाबी देवबन्दी जमाअत के अकाबिर ओलोमा थानवी साहब से इल्तिजा और मिन्नतो समाजत करते हैं कि येह सुनेहरी मौक़ा है, फज़ाइले रसूल बयान करके अवामुन्नास को धोका देने का ऐसा मौक़ा बार बार हाथ नहीं आता. कोशिश कीजिये ! दिमाग पर ज़ोर दें, ''**अगर वक़्त पर कुछ रिवायात याद आ जाएँ, तो उनके मुतअल्लिक़ कुछ बयान कर दिया जाए**'' अगर ज़ियादा रिवायात याद नहीं आतीं तो ''**कुछ रिवायात**'' या'नी थोडी सी रिवायात याद आ जाएँ, तो उन रिवायात के तअल्लुक़ से थोडा सा भी बयान कर दें, तो येह थोडा सा बयान भी हमारे लिये फाइदेमन्द है. प्लीज़ ! बराहे करम ! हमारी दरख़्वास्त पर तवज्जोह फरमाएँ ! थोडी ज़हमत गवारा फरमा कर याददाश्त पर ज़ोर दें ! लोगों को धोका और फरेब देने के लिये फज़ाइले रसूल बयान करना अशद्द ज़रूरी है. हमारा कितना बडा फाइदा है !!! हम पर वहाबी होने का जो शक व शुब्हा किया जा रहा है, वोह दूर हो जाएगा, अगर आप फज़ाइले रसूल बयान कर दें तो अच्छा है ''**वरना ख़ैर**'' या'नी मौक़ा हाथ से निकल जाएगा. ऐसे सुनेहरे मौके को ख़ैर बाद केहना पडेगा. ''**वरना ख़ैर**'' अक्सर उस वक़्त बोला

जाता है जब किसी काम के पूरा होने की उम्मीद न हो और गालिब गुमान ना उम्मीदी और मायूसी का हो.

(11) हो सकता है कि थानवी साहब के लिये अपने दिल में नर्म गोशा रखने वाला कोई शख़्स थानवी साहब का दिफाअ करते हुए येह कहे कि उस वक़्त थानवी साहब का मूड ख़राब था, तबीअत बराबर न थी. तक़रीर करने की रग्बत न थी. वाअज़ व बयान करने का उस वक़्त रुज्हान व मैलान न था. इसी लिए ''**रिवायात याद नहीं**'' का बहाना बना कर टाल दिया. अशरफुस्सवानेह की मज़्कूरा इबारत से येह हक़ीक़त अयाँ होती है कि उस वक़्त थानवी साहब अच्छे मूड (Mood) में थे. आम लोग जिस में मुब्तेला हैं, उस हुब्बे दुनिया या'नी दुनिया की महब्बत के तअल्लुक़ से तक़रीर की. इबारत पर गौर फरमाएँ ''**हज़रते वाला ने हुब्बे दुनिया के मुतअल्लिक़ वाअज़ बयान फरमाया, जिसकी बवज्हे इब्तिलाए आम सख़्त ज़रूरत थी.**''

(12) अगर थानवी साहब में ज़र्रा बराबर भी गैरते ईमानी होती तो थानवी साहब अपनी जमाअत के आलिमों को साफ लफ्ज़ों में फरमा देते कि आप हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल अपनी देवबन्दी जमाअत की मस्लेहत और फाइदे की ग़रज़ से बयान करने का मश्वरा देकर मुझे भी आप धोकाबाज़ी और फरेबकारी का मुर्तकिब बनाना चाहते हो ? मुझ से हरगिज़ येह काम नहीं हो सकेगा. फज़ाइले रसूल बयान करके लोगों को धोका देने का गुनाह मुझ से नहीं हो सकेगा. लिहाज़ा मुझ से ऐसे फरेबी काम लेनेकी कोशिश मत कीजिये बल्कि मैं आप से भी मुअद्दबाना गुज़ारिश करता हूँ कि ऐसी ज़हनियत को तर्क फरमा दीजिये. ख़ुलूस व इख़्लास से काम लीजिये. लैकिन नहीं, थानवी साहब ने ऐसी दयानतदारी पर

मुश्तमिल कोई भी बात नहीं कही. वोह भी अपने बडों की रविश पर ही थे. वोह भी लोगों को धोका देने और लोगों को फँसाने में माहिर थे. ब क़ौल थानवी के अकाबिरे देवबन्द के ख़याल में मद्रसे की दस्तारबन्दी का मौक़ा वाक़ई सुनेहरा मौक़ा था, मगर हाए मजबूरी व बे बज़ाअती ! थानवी साहब को फज़ाइले रसूल बयान करने के लिये रिवायात ही याद न थीं. इसी लिये ही थानवी साहब ने मा'ज़ेरत करते हुए रिवायात याद न होने के सबब से बयान करने का इन्कार फरमाया. अगर थानवी साहब को फज़ाइले रसूल की कुछ रिवायात याद होतीं, तो थानवी साहब अपने अकाबिर ओलोमा के हुक्म की ता'मील करते हुए फज़ाइले रसूल बयान करके धोकाबाज़ी की एक मिसाल क़ाइम करते. मगर क्या करें. घौडा ही लंगडा निकला. घुडदौडके मैदान में दौडनेके क़ाबिल ही न था.

(13) हो सकता है कि थानवी साहब के दिफाअ में कोई येह भी केह सकता है कि "**अशरफुस्सवानेह**" की पेशकर्दा रिवायत में कोई फरो गुज़ाश्त का इम्कान हो कि थानवी साहब ने बयान करने से इन्कार करने की कोई दीगर वजह बताई हो और येह न भी कहा हो कि मुझ को फज़ाइले रसूल की रिवायात याद नहीं लैकिन रावी से या रावी से जिसने येह वाक़ेआ बयान किया हो, उस से कोई गलती हो गई हो, थानवी साहब ने क्या कहा हो, और उसने क्या सुना हो, हो सकता है कि थानवी साहब के जुम्ले को सुनने और समझने में रावी से कोई चूक या गफ्लत हो गई हो, या येह भी हो सकता है कि रावी का हाफिज़ा कमज़ोर हो और उसने अपनी याददाश्त पर ए'तेमाद करते हुए बयान कर दिया मगर वाक़ई हक़ीक़तन थानवी साहब ने ऐसा न कहा हो.

लैकिन अब दिफाअ के इस ज़ईफ एहतेमाल की भी कोई

गुन्जाइश नहीं. क्यूँकि थानवी साहब के मल्फूज़ात का मजमूआ "**अल इफाज़ातिल यौमिया**" में भी येह वाक़ेआ मज़्कूर है, लैकिन येह वाक़ेआ ख़ुद थानवी साहब ने अपने अल्फाज़ में बयान किया है. किसी रावी ने नहीं कहा कि थानवी साहब ने येह केह कर बयान करने से इन्कार कर दिया कि मुझ को रिवायात याद नहीं, बल्कि ख़ुद थानवी साहब फरमाते हैं कि मैंने येह केह कर बयान करने से इन्कार कर दिया कि मुझे हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल की रिवायात याद नहीं.

नाज़िरीने किराम की ज़ियाफते तबअ की ख़ातिर "**अल इफाज़ातिल यौमिया**"की वोह इबारत जो ख़ुद थानवी साहब के अल्फाज़ में मरक़ूम है, वोह ज़ैल में पैशे ख़िदमत है:-

جب دیوبند میں بڑا جلسہ ہوا تھا، اس میں مجھ سے حضرت مولانا دیوبندی رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا تھا کہ اس جلسہ میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے فضائل بیان کرنا مناسب ہے۔ یہ حضرت مولانا کا فرمانا اس خیال سے تھا کہ بڑا مجمع ہے، ہر قسم کے عقائد کے لوگ اطراف سے آئے ہوئے ہیں، جن میں بعضے وہ بھی ہیں کہ ہم لوگوں کے متعلق یہ خیال کئے ہوئے ہیں کہ ان کے دل میں حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم کی عظمت نہیں، نعوذ باللہ تو ایسے لوگ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے فضائل سن کر یہ سمجھ جائیں گے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے متعلق ان کے یہ خیالات ہیں۔ میں نے عرض کیا کہ ایسے بیان میں روایات کے یاد ہونے کی ضرورت ہے اور روایات مجھ کو محفوظ نہیں۔ میری روایات پر نظر بہت کم ہے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۲، قسط۳، صفحہ۲۹۰، ملفوظ ۵۶۰

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۴، صفحہ۵۱، ملفوظ ۶۸

(۶/رجب المرجب ۱۳۵۱ھ - سہ شنبہ، صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

जब देवबन्द में बडा जल्सा हुवा था, उस में मुझ से हज़रते मौलाना देवबन्दी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया था कि इस जल्से में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल बयान करना मुनासिब है. येह हज़रत मौलाना का फरमाना इस ख़याल से था कि बडा मजमअ है, हर क़िस्म के अक़ाइद के लोग अतराफ से आए हुए हैं, जिन में बा'ज़े वोह भी हैं कि हम लोगों के मुतअल्लिक़ येह ख़याल किये हुए हैं कि इनके दिल में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की अज़्मत नहीं, नउज़ुबिल्लाह तो ऐसे लोग रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल सुनकर येह समझ जाएँगे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुतअल्लिक़ उनके येह ख़यालात हैं. मैंने अर्ज़ किया कि ऐसे बयान में रिवायात के याद होने की ज़रूरत है और रिवायात मुझ को महफूज़ नहीं. मेरी रिवायात पर नज़र बहुत कम है.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर:

मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 2, क़िस्त 3, सफहा 290, मल्फूज़ 560

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 4, सफहा 51, मल्फूज़ 68

(6/ रजबुल मुरज्जब 1351 हि.- सेह शम्बा, सुब्ह की मजलिस)

नोट : - मुन्दरजा इबारत में जिन "**मौलाना देवबन्दी**" का ज़िक्र है, इस से मुराद **मौलवी महमूदुल हसन देवबन्दी, सदर मुदर्रिसीन दारुल उलूम देवबन्द** है, जो थानवी साहब के भी उस्ताद हैं. मौलवी महमूदुल हसन साहब देवबन्दी का शुमार वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के अकाबिर ओलोमा व पेश्वा में होता है.

अब तक बयान कर्दा इक़्तिबासात का माहसल येह है कि :-

☼ देहात में जुम्आ क्यूँ नहीं होता ? येह सवाल करने वाले को थानवी साहब ने जवाब देने के बजाए उल्टा येह सवाल करके ख़ामोश कर दिया कि बम्बई में हज क्यूँ नहीं होता ?

☼ इस्लाम में पाँच नमाज़ें क्यूँ मुक़र्रर हुईं ? येह सवाल करने वाले वकील साहब को थानवी साहब ने उल्टा सवाल किया कि आपकी नाक मुँह पर क्यूँ है ? पुश्त पर क्यूँ नहीं ?

☼ रामपूर शहर में जब थानवी साहब से ग्यारहवीं शरीफ के मुतअल्लिक़ सवाल किया गया, तो थानवी साहब ने जवाब देने के बजाए येह कहा कि मैं आपको इम्तिहान देना नहीं चाहता.

☼ सूद क्यूँ हराम है ? येह सवाल का जवाब थानवी साहब ने येह दिया कि ज़िना क्यूँ हराम है ?

☼ इमाम की इक़्तिदा में नमाज़ पढने वाले मुक़्तदी को सूरए फातेहा पढना मना होने की वजह पूछने वाले से थानवी साहब ने कहा कि कलेक्टर साहब से पूछलो.

☼ किसी मस्अले की हिक्मत पूछने वाले को थानवी साहब ने येह जवाब दिया कि सवाल अनिल हिक्मत में क्या हिक्मत है ?

☼ कव्वा खाना जाइज़ है, या ना जाइज़ ? येह सवाल कने वालों को थानवी साहब पूछते कि क्या तुम्हारा इरादा कव्वा खाने का है ?

☼ थानवी साहब को हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज़ाइल की रिवायात याद नहीं थीं.

अब आइये ! थानवी साहब अपनी जहालत के ऐब को छुपाने के लिये कैसी कैसी तरकीबें और कैसे कैसे करतब ईजाद करते थे, वोह मुलाहेज़ा फरमाएँ. अब तक क़ारईने किराम ने थानवी साहब का सिर्फ एक ही हुनर मुलाहेज़ा फरमाया है कि थानवी साहब सवाल करने वाले को उल्टा सवाल कर के ऐसा मुगालता देते थे कि सवाल कने वाला ख़ामोश हो जाता था और सवाल करने से बाज़ रहता था. इस तरह थानवी साहब सवाल का जवाब देने से अपनी जान छुडा लेते थे. थानवी साहब ने सवाल का जवाब देने से पीछा छुडाने के लिये एक मज़ीद तरीक़ा ढूँढ निकाला था. और येह कि :-

सवाल करने वाले को डाँटना और ज़लील करना

थानवी साहब कभी कभी सवाल करने वाले पर ऐसे बरस पडते कि सवाल करने वाला थानवी साहब की बद अख़्लाक़ी, बद तेहज़ीबी, बद तमीज़ी, बद ख़िसाली, बद ख़ुल्क़ी, बद दिमागी, बद सुलूकी, बद तीनती, बद गुमानी, बद लिहाज़ी, बद मिज़ाजी और बद कलामी के अँगारों और शो'लानिशाँ लौ की लपट से ऐसा झुलसता कि उसे दिन में तारे नज़र आने लगते और सवाल करना एक जुर्म हो, ऐसा महसूस होने लगता और लेने के देने पड जाते. बडी मुश्किल से वोह थानवी साहब की डाँट डपटका मज़ा चख कर अपनी जान छुडाता. ऐसे सेंकडों वाक़ेआत थानवी साहब की हयाते क़बीहा पर मुश्तमिल मुतफर्रिक़ कुतुब में पाए जाते हैं कि थानवी साहब दीनी मस्अला पूछने की कोशिश करने वाले की ऐसी ख़बर ले लेते कि वोह नदामत के बोझ से शरमिन्दा और दिल आज़ुर्दा होकर रह जाता. सवाल करने वाले की जो गत बनती उसे देख कर महफिल में हाज़िर लोग भी सहम जाते और थानवी साहब से सवाल करने की हिम्मत का हौसला चकनाचूर होजाता. इन तमाम वाक़ेआत को यहाँ पेश करना तूले तहरीर के ख़ौफ से मुम्किन नहीं. लिहाज़ा चन्द वाक़ेआत नाज़िरीने किराम की ज़ियाफते तब्अ की ख़ातिर पैशे ख़िदमत हैं. इन वाक़ेआत को पढकर आपको थानवी साहब की जहालत और बद अख़्लाक़ी का यक़ीन के दरजे में इल्म हो जाएगा और थानवी साहब की इल्मी सलाहियत का भी पता चल जाएगा.

“कव्वे की क़िस्में पूछने वाले से केहना कि तुम कौन सी क़िस्म के हो, येह मा’लूम है”

वहाबी, देवबन्दी तब्लीगी जमाअत के पेश्वा और इमामे रब्बानी मौलवी रशीद अहमद गँगोही ने फत्वा दे दिया कि कव्वा खाना सिर्फ जाइज़ नहीं बल्कि सवाब है. इस फत्वे से मुल्क भर में हँगामा बरपा हो गया और हर तरफ से वहाबी मुल्लाओं पर लताड पडने लगी और फिटकार बरसने लगी. वहाबी मुल्ला अपने पेश्वा गँगोही का दिफाअ करने के लिये लोगों से ऐसा झूट कहते कि हज़रत गँगोही ने कव्वा खाना सवाब होने का जो फत्वा दिया है, वोह बस्तियों में पाए जाने वाले देसी कव्वे का नहीं बल्कि कव्वे की कई क़िस्में हैं. गँगोही साहब का फत्वा अफ्गानिस्तान के पहाडों में पाए जाने वाले सफेद रंग के “**अक़अक़**” क़िस्म के कव्वे के मुतअल्लिक़ है. लोगों को कव्वे के अक़्साम के बहाने धोका देने वाले वहाबी मुल्ला सच्चे हैं या झूटे ? इस बात की तहक़ीक़ करने के लिये अवामुन्नास ओलोमा से कव्वे की क़िस्में दरयाफ्त करते थे. ताकि उन्हें इल्मे फिक़्ह के एक मस्अले की मुफस्सल मा’लूमात हासिल हो.

थानवी साहब से भी एक शख़्स ने अपनी दीनी मा’लूमात में इज़ाफा करने की गरज़ से कव्वे की क़िस्में पूछ लीं. थानवी साहिब ने उसका क्या जवाब दिया ? वोह ख़ुद थानवी साहब के अल्फाज़ में मुलाहेज़ा फरमाएँ:–

سفر بمبئی میں ایک شخص نے حضرت والا سے یہ دریافت کیا کہ کوّے کی کے قسمیں ہیں؟ حضرت والا نے یہ فرمایا کہ کوّے کی قسمیں تو مجھ کو معلوم نہیں۔ اگر آپ فرمائیں تو آدمی کی قسمیں بیان کردوں اور یہ بھی عرض کردوں کہ آپ کونسی قسم میں داخل ہیں۔ بس یہ شخص تو ایسے خاموش ہوئے کہ بول کر جواب نہیں دیا۔

”مزید المجید“ (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) از: مولوی عبدالمجید بچھرایونی، مطبوعہ: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفرنگر (یوپی) ملفوظ نمبر: ۱۰، ص: ۶

हिन्दी अनुवाद

सफरे बम्बई में एक शख़्स ने हज़रते वाला से येह दरयाफ्त किया कि कव्वे की कितनी क़िस्में हैं ? हज़रते वाला ने येह फरमाया कि कव्वे की क़िस्में तो मुझ को मा’लूम नहीं. अगर आप फरमाएँ तो आदमी की क़िस्में बयान करदूँ और येह भी अर्ज़ करदूँ कि आप कौनसी क़िस्म में दाख़िल हैं. बस येह शख़्स तो ऐसे ख़ामोश हुए कि बोल कर जवाब नहीं दिया.

: हवाला :

“मज़ीदुल मजीद” (थानवी साहब के मल्फूज़ात का मजमूआ) अज़: मौलवी अब्दुल मजीद बछरायूनी,

मत्बूआ: मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फ़रनगर (यू.पी) मल्फ़ूज़ नम्बर:10, सफहा:6

वाह ! वहाबियों के जाहिल नाम निहाद मुजद्दिद को इल्मे फिक़्ह की किताबों में मज़्कूर कव्वे की क़िस्में मा'लूम नहीं लैकिन आदमियों की क़िस्में मा'लूम हैं. इलावा अर्ज़ी कव्वे की क़िस्में पूछने वाले को ज़लील करते हुए येह कहा कि आप कौन सी क़िस्म में दाख़िल हैं. येह मुझे मा'लूम है. अगर आप कहें तो आपकी क़िस्म बता दूँ. सवाल पूछने वाला ज़िल्लत और नदामत के बोझ से शर्मिन्दा हो कर ऐशा ख़ामोश हो गया कि थानवी साहब के ऐसे बेहूदा सवाल का जवाब न दे सका.

साइल ने कव्वे की क़िस्में दरयाफ्त की थीं. थानवी साहब ने इसका कोई जवाब न दिया और खुले लफ्ज़ों में इक़रार कर लिया कि मुझे कव्वे की क़िस्में मा'लूम नहीं. मुजद्दिद का दा'वा करने वाले को ऐसा आसान मस्अला मा'लूम नहीं. येह वाक़ई शर्म की बात है. मगर यहाँ तो "**चोरी पर सीना ज़ोरी**" से काम लिया जाता है. अपनी जहालत पर नादिम होने के बजाए बद अख़्लाक़ी का मुज़ाहेरा किया जा रहा है और किताबों में फख़्रिया शाएअ किया जा रहा है.

"क्या रिसाला तस्नीफ करना है ?"

कैसा अजीब इत्तेफाक़ है कि थानवी साहब से "**तवाज़ोअ**" या'नी ख़ुश अख़्लाक़ी के तअल्लुक़ से सवाल करने वाले को थानवी साहब कैसी "**बद अख़्लाक़ी**" से जवाब दे रहे हैं. वोह मुलाहेज़ा फरमाएँ:–

ایک صاحب نے عرض کیا کہ حضرت کیا یہ بھی تواضع ہے کہ سب سے اخلاق سے ملنا چاہیے؟ فرمایا کہ گول سوال ہے، جزئیات کا سوال کیجئے۔ کلیات کا سوال کر کے کیا رسالہ تصنیف کرنا ہے؟ جب بہت سی جزئیات کا علم ہو جائے گا، کلیات خود سمجھ میں آجائیں گی اور کلیات تو آپ کو معلوم ہیں ہی جس کی بیٹھے بیٹھے کلیات کر رہے ہو۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۱، قسط۲، صفحہ۲۲۶، ملفوظ۴۵۲

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۱، صفحہ۳۱۶، ملفوظ۴۵۱

(۲۴/رمضان المبارک ۱۳۵۰ھ – سہ شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक साहब ने अर्ज़ किया कि हज़रत क्या येह भी तवाज़ोअ है कि सब से अख़्लाक़ से मिलना चाहिये ? फरमाया कि गोल सवाल है, जुज़्इय्यात का सवाल कीजिये. कुल्लिय्यात का सवाल करके क्या रिसाला तस्नीफ करना है ? जब बहुत सी जुज़्इय्यात का इल्म हो जाएगा, कुल्लिय्यात ख़ुद समझ में आ जाएँगी और कुल्लिय्यात तो आपको मा'लूम हैं ही जिसकी बैठे बैठे कुल्लिय्यात कर रहे हो.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौ़मिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 1, कि़स्त 2, सफहा 226, मल्फूज़ 452
(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल कौ़मिया (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर : मक्तबए दानिश (यू.पी) हिस्सा 1, सफहा 316, मल्फूज़ 451
(24 / रमज़ानुल मुबारक 1350 हि. सेह शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

"मेरे फे'ल की दलील क्यूँ दरयाफ्त करते हो"

थानवी साहब ने मज़हब के नाम पर कई जदीद तरीके़ ईजाद कर डाले थे. सिर्फ ईजाद ही नहीं किये थे बल्कि बडी सख़्त पाबन्दी से उस पर अमल करते थे और लोगों को भी उसपर अमल करने की सख़्ती से ताकीद करते थे. लैकिन थानवी साहब को इन आ'माल के जाइज़ या मुस्तहब होने की कोई दलील या जुज़्इय्या मा'लूम नहीं था. जब थानवी साहब से कोई इन कामों के जाइज़ या मुस्तहब होने की दलील पूछता, तो थानवी साहब आपे से बाहर हो जाते और लाल भबूका बन कर तेहज़ीब व अख़्लाक़ का दामन झटक कर जिस बद

अख़्लाक़ी का मुज़ाहेरा फरमाते और पूछने वाले की भरी महफिल में जो तज़लील व तोबीख़ करते, वोह ऐशी घिनौनी होती थी कि उसको इस्लामी अख़्लाक़ व आदाब से दूर का भी वास्ता नहीं होता था. एक हवाला पैशे ख़िदमत है :-

ایک صاحب کا خط آیا تھا کہ جناب مولوی صاحب! آپ جو لوگوں کو خط کے ذریعہ مرید کرتے ہیں، اس کی کیا دلیل ہے؟ اور یہ سنّت سے ثابت ہے یا نہیں؟ فرمایا میں نے جواب میں لکھا ہے کہ یہ میرا فعل ہے۔ آپ میرے فعل کی دلیل کیوں دریافت کرتے ہیں؟ آپ کو کیا حق ہے؟ آپ بلا دلیل کسی کو مرید نہ کریں۔

مزید المجید (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) از: مولوی عبدالمجید بچھرایونی، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع مظفرنگر (یوپی) ملفوظ نمبر: ۵۲، ص: ۲۷

हिन्दी अनुवाद

एक साहब का ख़त आया था कि जनाब मौलवी साहब ! आप जो लोगों को ख़त के ज़रीए मुरीद करते हैं, उसकी क्या दलील है ? और येह सुन्नत से साबित है या नहीं ? फरमाया मैंने जवाब में लिखा है कि येह मेरा फे'ल है. आप मेरे फे'ल की दलील क्यूँ दरयाफ्त करते हैं ? आपको क्या हक़ है ? आप बिला दलील किसीको मुरीद न करें.

: हवाला :

मज़ीदुल मजीद (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ) अज़ : मौलवी अब्दुल मजीद बछरायूनी, नाशिर : मक्तबए तालीफात अशरफिया, थाना भवन, ज़िला मुज़फ्फर नगर (यू.पी) मल्फ़ूज़ नम्बर: 52, सफहा:27

मुन्दरजए बाला इबारत को बगौर और ब नज़्रे अमीक़ मुतालेआ फरमाएँगे, तो हस्बे ज़ैल निकात सामने आएँगे. इख़्तिसारन अर्ज़े ख़िदमत हैं:

(1) थानवी साहब ख़त के ज़रीए मुरीद बनाते थे. मुरीद बनाना येह एक सिल्सिलए तरीक़त का तरीक़ा (रुक्न) होने की वजह से एक इस्लामी काम था. जो थानवी साहब करते थे. लिहाज़ा किसी ऐसे मुअज़्ज़ज़ शख़्स ने थानवी साहब से उसकी दलील पूछी, जो ख़ुद भी अपने सिल्सिले के पीरे तरीक़त थे और लोगों को मुरीद बनाते थे.

(2) पूछने वाले ने थानवी साहब के किसी निजी इर्तिकाब पर तो कोई ए'तराज़ या गिरफ्त नहीं की थी, बल्कि थानवी साहब ने ख़त के ज़रीए मुरीद बनाने का जो तर्ज़ अपनाया था, उसकी उसने दलील पूछी थी और येह दरयाफ्त किया था कि इस तरह मुरीद बनाना सुन्नत से साबित है या नहीं ?

(3) पूछने वाले ने इस लिये पूछा था कि थानवी साहब शोहरत याफ्ता आलिम हैं और अकाबिर ओलोमा में इनका शुमार होता है, जब थानवी साहब ख़त के ज़रीए मुरीद बनाते हैं, तो ज़रूर थानवी साहब सुन्नते

रसूल की रौशनी में और हदीस के सुबूत के साथ और सल्फे सालेहीन के अक़्वाल व अफ्आल की दलील के साथ येह काम करते होंगे. मैं भी लोगों को मुरीद बनाता हूँ लैकिन उन्हीं हज़रात को मुरीद बनाता हूँ जो रूबरू हाज़िर होकर हाथ में हाथ दे कर मुरीद बनते हैं. ख़त के ज़रीए मुरीद बनाने का तरीक़ा अच्छा और आसान तरीक़ा है. इसको अपनाना चाहिये. येह तरीक़ा मैं भी शुरू कर दूँ. लैकिन अगर इस तरीक़े पर बैअत करने पर किसी ने ए'तराज़ कर दिया और दलील तलब की, तो क्या जवाब दूँगा ? कोई फिक्र की बात नहीं. थानवी साहब ज़बरदस्त आलिमे दीन हैं, वोह भी येही तरीक़ा अपनाए हुए हैं. उन से ही दरयाफ्त कर लेता हूँ. येह ज़रूर हदीस की रौशनी में मज़बूत दलील बताएँगे.

(4) लैकिन पूछने वाले को क्या मा'लूम कि जिस शख़्स या'नी थानवी साहब को मैं ज़बरदस्त आलिम समझ कर दीनी मआमले के तअल्लुक़ से कुछ सीखने के लिये दरयाफ्त कर रहा हूँ, वोह शख़्स तो दीनी इल्म के मआमले में ऐसा गया गुज़रा और क़ल्लाश है कि वोह इल्म के मैदान में लंगडे घोडे की भी हैसियत नहीं रखता, दा'वा तो मुजद्दिद का है, मगर निरा जाहिल है.

(5) मगर थानवी साहब ने अपनी जहालत पर पडे हुए रेशमी पर्दे को ख़ुद अपने ना मुबारक हाथों से चाक कर दिया. पूछने वाला तो अपनी दीनी मा'लूमात में इज़ाफा करने की गरज़ से पूछ रहा था, लैकिन थानवी साहब अपने बद गुमानी के मर्ज़ की बिना पर येह समझे कि पूछने वाला मुझ पर ए'तराज़ कर रहा है. ए'तराज़ और वोह भी मुझ पर !!! मुझ जैसे आ'ला मन्सब वाले जलीलुल क़द्र आलिम पर ए'तराज़ ? बस !!! थानवी साहब आग बगूला होगए और गुस्से में धुत होकर पूछने वाले पर बरस पडे और इर्शाद फरमाया कि **''येह मेरा फे'ल है. आप**

मेरे फे'ल की दलील क्यूँ दरयाफ्त करते हो''

(6) थानवी साहब के इस जुम्ले से तकब्बुर, गुरूर, घमन्ड, अनानियत, खुदी, खुदसताई, खुदसरी और मुत्लकुल अनानी के चश्मे उबल रहे हैं. अपने किसी ऐसे काम को जो दीनी उमूर से तअल्लुक़ रखता हो, उस काम के अच्छे या मुनासिब होने के लिये ''**येह मेरा फे'ल है**'' कहना, इस बात की निशानदही करता है कि कहने वाला अपने आपको मज़हब का ठेकेदार समझ रहा है और मज़हब पर अपनी इजारादारी नाफिज़ करना चाहता है. फिर बाद के अल्फाज़ ''**आप मेरे फे'ल की दलील क्यूँ दरयाफ्त करते हो.**'' से येह ज़ाहिर हो रहा है कि जब मेरा फे'ल है और मेरा फे'ल इस हैसियत का हामिल है कि उसके नामुनासिब होने में ज़र्रा बराबर भी शुबह नहीं बल्कि मेरे फे'ल का ना मुनासिब होना मुहाल और ना मुम्किन है. बल्कि मेरा फे'ल ही मज़हब वालों के लिये दलील है. तो जब मेरा फे'ल ही एक दलील की हैसियत रखता है, तो फिर मेरे फे'ल की दलील क्यूँ दरयाफ्त करते हो ? क्या दलील की भी कोई दलील पूछता है ?

(7) थानवी साहब का येह फरमाना कि ''**आपको क्या हक़ है**'' येह क़ौल ''**चोरी और सीना ज़ोरी**'' का कामिल मिस्दाक़ है. एक तो अपने इर्तिकाब का शरई सुबूत न देना और ऊपर से पूछने वाले को डाँटना कि आपको क्या हक़ है ? जब आप अपने आपको मुजद्दिद समझ रहे हैं बल्कि कह भी रहे हैं और आपका दा'वा है कि सदियों से मुर्दा तरीक़ को आपने ज़िन्दा किया है. तो आपके हर क़ौल व फे'ल, हर अदा व इर्तिकाब के तअल्लुक़ से इस्तिफ्सार करने का बल्कि तफ्तीश करने का क़ौमे मुस्लिम के हर फर्द को हक़ हासिल है. बल्कि आपको क्या हक़ हासिल है कि आप किसी दीनी मआमले से तअल्लुक़

रखने वाले किसी काम की दलील पूछने वाले से येह कहें कि ''**आप को क्या हक़ है ?**'' ऐसा मुतकब्बिराना सुलूक क्या आपको ज़ेबा है ?

(8) आपको क्या हक़ है ? ऐसा जवाब तो किसी नबी ने अपने किसी उम्मती को या किसी वली ने अपने किसी मुतवस्सिल को नहीं दिया. तमाम अम्बियाए किराम और खुसूसन सय्यदुल अम्बिया व मुर्सलीन की सवानेह हयात का मुतालआ करने से ऐसे कई मौके़ मिलते हैं कि हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ाते सतूदा सिफात से कोई फे'ल वाके़अ हुवा और सहाबए किराम रिदवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की समझ में कि ऐसा करना क्यूँ वाके़अ हुवा. येह नहीं आया और उन्होंने हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से इसकी वजह पूछी. तब हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने येह नहीं फरमाया कि येह मेरा फे'ल है, आपको दरयाफ्त करने का क्या हक़ है ? बल्कि हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस्तिफ्सार करने वालों को इत्मिनान बख़्श जवाब मरहमत फरमाया. हालाँ कि एक नबी और रसूल होने की वजह से उनका हर फे'ल व क़ौल हुज्जत था. उनके किसी क़ौल व फे'ल को किसी दलील या किसी क़िस्म की वज़ाहत की अस्लन कोई हाजत न थी. क्यूँ कि वोह साहिबे शरीअत थे. उनका हर क़ौल व फे'ल क़ानूने शरीअत की हैसियत का हामिल था. फिर भी आपने अपने सहाबा के पूछने पर वज़ाहत फरमाई, फज़ीलत बयान फरमाई, उसके रुमूज़ व अस्रार ज़िक्र फरमाए, वईद या बशारत के तअल्लुक़ से तफ्सीली गुफ्तगू फरमाई और पूछने वाले को ऐसा मुत्मइन फरमा दिया कि उसे अब मज़ीद कुछ पूछने की ज़रूरत बाक़ी न रही. लैकिन हरगिज़ ! हरगिज़ ! **येह नहीं फरमाया कि येह मेरा फे'ल है, मेरे फे'ल की दलील क्यूँ दरयाफ्त**

करते हो ? आपको क्या हक़ है ? लैकिन वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत का जाहिल नाम निहाद मुजद्दिद और हकीमुल उम्मत अपने आपको ब-ज़्अमे ख़्वेश मुजद्दिद गरदान ने के ख़्वाबी ख़याल में मस्त होकर और तकब्बुर व गुरूर के नशे में धुत होकर ऐसी बात कह रहा है, जो किसी नबी ने भी नहीं फरमाई.

(9) इबारत के आख़िर में थानवी साहब का येह जुम्ला भी क़ाबिले गौरो फिक्र है कि **''आप बिला दलील किसी को मुरीद न करें''** या'नी मैं ख़त के ज़रीए मुरीद करता हूँ, लैकिन मेरा इस तरह मुरीद करना मेरा फे'ल है, मेरे फे'ल की दलील दरयाफ्त करने की कोई ज़रूरत नहीं. शरीअत में उसके जाइज़ या मुस्तहब होने का सुबूत है या नहीं ? इसकी कोई परवाह नहीं, क्यूँ कि मेरी वोह आलीशान और आ'ला रुत्बा है कि इस काम के मुनासिब होने के लिये मेरा फे'ल ही सब से बडी दलील है. मुझ को किसी भी दलील या सुबूत की हाजत नहीं. अलबत्ता आप ख़त के ज़रीए मुरीद करने से पहले दलील मा'लूम कर लें कि ख़त के ज़रीए मुरीद बनाना कैसा है ? और जब तक उसके जाइज़ या मुस्तहब होने का सुबूत न मिले, मुरीद मत बनाना.

(10) थानवी साहब के इस जुम्ले से इस बात का भी सुबूत मिला कि थानवी साहब से सवाल करने वाला शख़्स कोई आम शख़्स न था बल्कि किसी सिल्सिले का पीरे तरीक़त था.

“मेरे मुजद्दिद होने की दलील नही, लिहाज़ा मुजद्दिद हूँ”

ख़त के ज़रीए मुरीद करने के उन्वान में नुक्ता नम्बर:7 में हमने ज़िक्र किया है कि थानवी साहब अपने आपको मुजद्दिद समझ रहे थे. हवाला पेशे ख़िदमत है :-

''ایک مولوی صاحب نے عرض کیا کہ حضرت مجدّد وقت ہیں؟ فرمایا کہ چونکہ نفی کی بھی کوئی دلیل نہیں، اس لئے اس کا احتمال مجھ کو بھی ہے مگر اس سے زائد جزم نہ کرنا چاہئے۔ محض ظن ہے اور یقینی تعیین تو کسی مجدد کا بھی نہیں ہوا'' (الحمد لله حمداً كثيراً طيبا فيه على هذا الاحتمال)

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۱، قسط۲، صفحہ۱۵۳، ملفوظ ۲۶۹

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۱، صفحہ۲۱۱، ملفوظ ۲۶۸

(۱۲/رمضان المبارک ۱۳۵۰ھ - پنج شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

''एक मौलवी साहब ने अर्ज़ किया कि हज़रत मुजद्दिदे वक़्त हैं ? फरमाया कि चूँकि नफी की भी कोई दलील नहीं, इस लिये इसका एहतमाल मुझ को भी है मगर इस से ज़ाइद जज़्म न करना चाहिये.

महज़ ज़न है और यक़ीनी तअय्युन तो किसी मुजद्दिद का भी नहीं हुवा''

'(الحمد لله حمداً كثيراً طيبا فيه على هذا الاحتمال)

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिला मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 1, क़िस्त 2, सफहा:153, मल्फूज़ 269

(2) अल इफाज़ातिल यौमिला मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 1, सफहा 211, मल्फूज़ 268

(12 / रमज़ानुल मुबारक 1350 हि. पन्ज शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

वाह ! कैसी उल्टी मन्तिक़ चलाई है. थानवी साहब से पूछा गया कि क्या आप मुजद्दिद हैं ? थानवी साहब के मुँह में पानी भर आया, अपने मुँह मियाँ मिठ्ठू बनने का मौक़ा हाथ लग गया. उर्दू ज़बान की मशहूर मिस्ल ''**अपने मुँह से धन्ना बाई**'' थानवी साहब पर अच्छी तरह सादिक़ आती है. मुजद्दिद के मन्सब पर चढ बैठने के लिये बन्दर की तरह छलाँग लगा दी. ''**बन्दर को मिली हल्दी की गिरह, पन्सारी बन बैठा**'' के मिस्दाक़ बन कर मामूली मुल्ला से मुजद्दिद बन बैठे.

अपने आपको मुजद्दिद साबित करने के लिये कैसी फूहड दलील लाए कि ''**चूँकि नफी की भी कोई दलील नहीं, इस लिये इसका एहतमाल मुझ को भी है.**'' या'नी ''**मेरे मुजद्दिद न होने की भी कोई दलील नहीं लिहाज़ा मैं मुजद्दिद हूँ ऐसा मुझ को गुमान है.**'' थानवी साहब कैसी मन्तिक़ छाँट रहे हैं कि ''**नहीं की दलील नहीं लिहाज़ा हूँ**'' जिसका मतलब येह भी हुवा कि किसी बात के न होने की दलील न होना, उस बात के होने का सुबूत है. मिसाल के तौर पर कोई शख़्स येह कहे कि थानवी साहब के चोर न होने की कोई दलील नहीं, लिहाज़ा वोह चोर थे. ऐसी तो कई मिसालें क़ाइम की जा सकती हैं और इसके ज़िम्न में मुफस्सल लिखा भी जा सकता है.

ख़ैर ! थानवी साहब आगे चल कर अपनी मुजद्दिदियत के मन्सब का माज़ी के शोहरए आफाक़ शोहरत व सलाहियत के हामिल मुजद्दिदीन के मन्सब से तक़ाबुल करते हुए फरमाते हैं कि ''**मगर इस से ज़ाइद जज़्म न करना चाहिये. महज़ ज़न है और यक़ीनी तअय्युन तो किसी मुजद्दिद का भी नहीं हुवा.**'' या'नी ''माज़ी में जितने भी मुजद्दिद हुए हैं, उन में से किसी भी मुजद्दिद का यक़ीनी तअय्युन नहीं हुवा. या'नी माज़ी के किसी भी मुजद्दिद के लिये यक़ीन के तौर पर उसका मुजद्दिद होना तय नहीं पाया. सिर्फ एहतमाल या'नी गुमान के तौर पर उनको मुजद्दिद कहा और माना गया है. तो जिस तरह माज़ी के तमाम मुजद्दिदन का मुजद्दिद होना सिर्फ गुमान के तौर पर तय पाया है, इसी तरह मेरा मुजद्दिद होना भी गुमान के तौर पर है. या'नी मैं भी माज़ी के मुजद्दिदीन की तरह एक मुजद्दिद हूँ. जिस तरह माज़ी के तमाम मुजद्दिदीन अपने अपने ज़माने में मन्सबे मुजद्दिदियत पर फाइज़ थे, इसी तरह ही मैं भी इस ज़माने में मुजद्दिद के मन्सब पर फाइज़ हूँ. थानवी

साहब ब-ज़्अमे ख़्वेश अपने को मुजद्दिद गरदान कर अपनी शाने तज्दीद की शैख़ी मारते थे और अपना मुजद्दिद होना बावर कराने की हर मुम्किन कोशिश करते थे. मुलाहेज़ा हो :-

"ब हैसियत मुजद्दिद ऐसा कारनामा अन्जाम दिया है कि अब सदियों तक मुजद्दिद की ज़रूरत नही !!!"

ब क़ौल थानवी साहब तरीक़ मुर्दा हो चुका था. या'नी मज़हब मुर्दा होगया था. एक अरसए दराज़ से दीने इस्लाम का तरीक़ा मुर्दा हो चुका था. मुद्दतों के बाद वोह मुर्दा तरीक़ए मज़हबे इस्लाम मेरी वजह (थानवी साहब) से दोबारा ज़िन्दा हुवा. गोया थानवी साहब "**मुहयुद्दीन**" की हैसियत से भी अपना तआरुफ करवा रहे हैं.

ایک سلسلۂ گفتگو میں فرمایا کہ طریق مردہ ہو چکا تھا۔ مدتوں کے بعد دوبارہ زندہ ہوا اور حقیقت واضح ہوئی، مگر لوگ اب بھی یہی چاہتے ہیں کہ سب غت رُبُود ہو جائے۔ سو یہ کیسے ہو سکتا ہے جس کو خدا نے کشادہ کر دیا اس کو بند کون کر سکتا ہے ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها وما يمسك فلا مرسل له من بعده وهو العزيز الحكيم اب بحمد اللہ طریق بے غبار ہے صدیوں تک تجدید کی ضرورت نہیں اور جب ضرورت ہوگی حق تعالیٰ اور کسی کو پیدا فرمادیں گے۔ مگر اس چودہویں صدی میں تو ایسے ہی پیر کی ضرورت تھی جیسا کہ میں ہوں لٹھ۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۲، قسط۳، صفحہ۳۰۸، ملفوظ۵۸۰

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۴، صفحہ۳۷، ملفوظ۸۸

(۷ ربیع الاول ۱۳۵۱ھ - چہارشنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक सिल्सिलए गुफ्तगू में फरमाया कि तरीक़ मुर्दा हो चुका था. मुद्दतों के बाद दोबारा ज़िन्दा हुवा और हक़ीक़त वाज़ेह हुई, मगर लोग अब भी यही चाहते हैं कि सब गत रुबूद होजाए. सो येह कैसे हो सकता है जिसको ख़ुदा ने कुशादा कर दिया उसको बन्द कौन कर सकता है

ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها وما يمسك فلا مرسل له من بعده وهو العزير الحكيم

अब बिहम्दिल्लाह तरीक़ बे गुबार है सदियों तक तज्दीद की ज़रूरत नहीं और जब ज़रूरत होगी हक़ तआला और किसी को पैदा फरमा देंगे. मगर इस चौदहवीं सदी में तो ऐसे ही पीर की ज़रूरत थी जैसा कि मैं हूँ लठ.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 2, क़िस्त 3, सफहा:308, मल्फूज़ 580
(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 4, सफहा 73, मल्फूज़ 88
(7 / रबीउल अव्वल 1351 हि. चहार शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

मुन्दरजए बाला इबारत में थानवी साहब शैख़ी मारते हुए और ख़ुदसताई का ढँढोरा पीटते हुवे, अपने कारनामों का इजमालन ज़िक्र करते हुवे और अपने को अज़ीमुश्शान मुजद्दिद गरदानते हुए, अपने कारनामों को एक मुजद्दिद का तज्दीदी काम कहते हुए, अपने मुँह मियाँ मिठ्ठू बनते हुए फरमाते हैं कि :-

(1) अरसए दराज़ से तरीक़ मुर्दा हो चुका था लैकिन मेरी ब दौलत मुर्दा तरीक़ दोबारा ज़िन्दा हुवा है और हक़ीक़त वाज़ेह होगई है.

(2) थानवी साहब ने तरीक़ को ऐसा ज़िन्दा फरमाया है कि अब वोह मुर्दा तरीक़ बे गुबार होगया है और सदियों तक या'नी सेंकडों बरस तक तज्दीद की ज़रूरत नहीं. या'नी थानवी साहब ऐसे कामिल मुजद्दिदे आ'ज़म थे कि उन्होंने एक साथ कई मुजद्दिदों का काम तने तन्हा

अन्जाम दे दिया है. हालाँ कि हदीस के फरमान के मुताबिक़ हर सदी में अल्लाह तआला मुजद्दिद भेजता है, जो उम्मत के लिये दीन को ताज़ा कर देता है लैकिन थानवी साहब ऐसे ज़बरदस्त मुजद्दिद थे कि अब अल्लाह तआला को हर सदी में मुजद्दिद भेजने की ज़रूरत नहीं, क्यूँ कि ब क़ौल थानवी साहब **''अब सदियों तक तज्दीद की ज़रूरत नहीं''** या'नी जब सदियों तक तज्दीद की ज़रूरत नहीं, तो मुजद्दिद भेजने की भी ज़रूरत नहीं. या'नी थानवी साहब ने दीने इस्लाम की ख़िदमत में जो तज्दीदी काम अन्जाम दिया है, वोह काम इतना मुस्तहकम व मुनज़्ज़म है कि वोह काम सिर्फ एक सौ 100 साल तक के लिये ही काफी नहीं बल्कि सदियों तक के लिये काफी है. लिहाज़ा अब सदियों तक किसी मुजद्दिद की ज़रूरत ही नहीं.

(3) हाँ ! सदियों के बाद जब तरीक़ दोबारा मुर्दा हो जाएगा और सदियों के बाद जब ज़रूरत होगी, तो ब क़ौल थानवी साहब **''और जब ज़रूरत होगी, हक़ तआला और किसीको पैदा फरमा देंगे''** या'नी फिल्हाल किसीको पैदा फरमाने की अल्लाह तआला को ज़रूरत नहीं. क्यूँ कि **''मैं आ गया हूँ''** और मैंने एक मुजद्दिद की हैसियत से ऐसा तज्दीदी कारनामा अन्जाम दिया है कि वोह काम सिर्फ एक सदी के लिये नहीं बल्कि सदियों तक के लिये काफी व वाफी है. अलबत्ता ! सदियों के बाद जब ज़रूरत होगी तब अल्लाह तआला मेरे जैसा और कोई मुजद्दिद पैदा फरमा देगा. लैकिन...???

(4) ब क़ौल थानवी साहब **''मगर इस चौदहवीं सदी में तो ऐसे पीर की ज़रूरत थी जैसा कि मैं हूँ लठ''** या'नी चौदहवीं सदी में मुर्दा इस्लाम को दोबारा ज़िन्दा करके उसे बे गुबार करके हक़ीक़त को वाज़ेह करने के लिये ऐसे मुजद्दिद की ज़रूरत, जो मेरे जैसा लठ क़िस्म

का पीरे तरीक़त हो. या'नी एक मुजद्दिद को भेज कर दीन की तज्दीद और अहया का जो इलाही मन्शा और तक़ाज़ा था, वोह थानवी साहब ने अच्छी तरह निभाया और अन्जाम दिया है, और वोह भी **''एक लठ पीर की हैसियत से''** अन्जाम दिया है. वाक़ई थानवी साहब **''लठ पीर''** ही थे. बात बात में और ख़ुसूसन दीनी मस्अला पूछने वाले को मस्अला बताने या फिक़्ही जवाब देने में हमेशा **''लठ सा मार देते''** थे. और अपनी तुर्श रूई, सख़्त जवाबी, दुरुश्त मिज़ाजी, बद ख़ुल्क़ी और बद अख़्लाक़ी का ऐसा मुज़ाहेरा फरमाते थे कि इस्लामी तहज़ीब व अख़्लाक़ के माथे कालक का बदनुमा दाग थोंप देते थे.

(5) थानवी साहब की बद अख़्लाक़ी के वाक़ेआत पर मुश्तमिल राक़िमुल हुरूफ की किताब **''बद तमीज़ मौलवी''** भी इन्शाअल्लाह तआला व हबीबिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अनक़रीब ज़ेवरे तबअ से आरास्ता होकर मन्ज़रे आम पर आने वाली है.

थानवी साहब ने अपने मुँह ही अपने मुजद्दिद होने का दा'वा किया हो, ऐसी कई इबारतें थानवी साहब की सवानेह हयात पर मुश्तमिल मुतफर्रिक़ कुतुब में मौजूद हैं. एक मज़ीद हवाला नाज़रीने किराम की ख़िदमत में पेश है:-

ایک سلسلۂ گفتگو میں فرمایا کہ طریق بالکل مردہ ہو چکا تھا۔ لوگ بیحد غلطیوں میں مبتلا تھے۔ بحمد اللہ اب سو برس تک تو تجدید کی ضرورت نہیں رہی۔ اگر پھر خلط ہو جائے گا، تو پھر کوئی اللہ کا بندہ پیدا ہو جائے گا۔ ہر صدی پر ضرورت ہوتی ہے تجدید کی۔ اس لیے کہ مدّت کے بعد نری کتابیں ہی کتابیں رہ جاتی ہیں۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۱، قسط۵، صفحہ۵۹۵، ملفوظ ۱۲۱۴

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۳، صفحہ۵۲، ملفوظ ۵۸

(۱۴/ ذی الحجہ ۱۳۵۱ھ - پنج شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक सिल्सिलए गुफ्तगू में फरमाया कि तरीक़ बिल्कुल मुर्दा हो चुका था. लोग बेहद गलतियों में मुब्तेला थे. बिहम्दिल्लाह अब सौ बरस तक तो तज्दीद की ज़रूरत नहीं रही. अगर फिर ख़ल्त हो जएगा, तो फिर कोई अल्लाह का बन्दा पैदा हो जाएगा. हर सदी पर ज़रूरत होती है तज्दीद की. इस लिये कि मुद्दत के बाद नरी किताबें ही किताबें रह जाती हैं.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 1, क़िस्त 5, सफहा:595, मल्फूज़ 1214

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली

थानवी, नाशिरः मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 3, सफहा 52, मल्फ़ूज़ 58
(14 / ज़िल हिज्जा 1351 हि. पंज शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

एक मज़ीद हवाला पैशे ख़िदमत है. जिसके मुतालए से क़ारईने किराम पर वाज़ेह होगा कि ब क़ौल थानवी साहब :-

“तरीक़ मुर्दा हो चुका था. बल्कि मफ्क़ूद हो चुका था या’नी गुम हो चुका था.”

थानवी साहब को मुर्दा दीन बल्कि गुमशुदा तरीक़ को ज़िन्दा करने का तरीक़ा अल्लाह तआला ने इल्हाम के ज़रीए बतलाया. या’नी अल्लाह तआला ने दीन को ज़िन्दा करने का तरीक़ा थानवी साहब के दिल में डाल दिया.

ایک صاحب کے سوال کے جواب میں فرمایا کہ یہ تو میں نہیں کہہ سکتا کہ یہ طریق مجھ کو ملہم (الہام کے ذریعہ بتلایا گیا) ہوگیا ہے۔ یہ تو بڑا دعویٰ ہے مگر ہاں یہ ضرور ہے کہ اجمالاً تو حضرت حاجی صاحب رحمۃ اللہ علیہ کے ارشاد سے اور تفصیل اس کی حق تعالی نے محض موہبت سے قلب میں وارد فرمادی ہے۔ اس کو چاہے الہام سے تعبیر کرلیا جائے، اختیار ہے۔ خدا کا فضل ہے۔ انعام ہے۔ احسان ہے۔ جو چیز عطا فرمائی گئی ہے، میں اس کی نفی کر کے کیوں کفران نعمت کروں۔ یہ طریق مردہ ہوچکا تھا۔ مفقود ہوچکا تھا۔ حق تعالیٰ نے اس کے احیاء کی توفیق عطا فرمادی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ ناواقفی سے لوگوں کو وحشت ہے۔ قدیم طریق سلف کا گم ہوچکا تھا۔ یہاں وہی طریق ہے، جو سلف کا تھا مگر اس کے مفقود ہوجانے کی وجہ سے لوگوں کو نیا معلوم ہوتا ہے۔ حالاں کہ ہے پرانا۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۲، قسط۲، صفحہ ۱۲۷، ملفوظ ۲۲۰

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ ۳، صفحہ ۲۱۳، ملفوظ ۲۸۴

(۱۷/محرم الحرام ۱۳۵۱ھ – سہ شنبہ، صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक साहब के सवाल के जवाब में फरमाया कि येह तो मैं नहीं कह सकता कि येह तरीक़ मुझ को मुल्हिम (इल्हाम के ज़रीए बतलाया गया) हो गया है. येह तो बडा दा’वा है मगर हाँ येह ज़रूर है कि इज्मालन तो हज़रत हाजी साहब रहमतुल्लाहि अलैह के इर्शाद से और तफ्सील उसकी हक़ तआला ने महज़ मौहिबत से क़ल्ब में वारिद फरमा दी है. उसको चाहे इल्हाम से ता’बीर कर लिया जाए, इख़्तियार है. ख़ुदा का फज़्ल है. इन्आम है. एहसान है. जो चीज़ अता फरमाई गई है, मैं उसकी नफी करके क्यूँ कुफ़ाने नेअमत करूँ. येह तरीक़ मुर्दा हो चुका था. मफ्क़ूद हो चुका था. हक़ तआला ने उसके अहया की तौफीक़ अता फरमा दी है. येही वजह है कि ना वाक़िफी से लोगों को वहशत है. क़दीम तरीक़ सल्फ का गुम हो चुका था. यहाँ वही तरीक़ है, जो सल्फ का था मगर उसके मफ्क़ूद हो जाने की वजह से लोगों को नया मा’लूम होता है. हालाँ कि है पुराना.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 2, क़िस्त 2, सफहा:127, मल्फ़ूज़ 220
(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 3, सफहा 213, मल्फ़ूज़ 284
(17 / मुहर्रमुल हराम 1351 हि. चहार शम्बा, सुब्ह की मजलिस)

"एक अहम और गौर तलब सवाल"

यहाँ तक के मुतालए से क़ारईने किराम पर येह हक़ीक़त मुन्कशिफ हो गई होगी कि थानवी साहब "**ऊँची दुकान फेका पकवान**" और "**नाम मोटा, दर्शन खोटा**" के कामिल मिस्दाक़ व मज़हर थे. फिक़्ही मसाइल के तअल्लुक़ से सवाल करने वाले को डाँटना, हीले और बहाने ढूँढ कर जवाब टालना, साइल को उल्टा सवाल करके उल्झा कर ख़ामोश करना वगैरा नई नई और मुख़्तलिफ तरकीबें ईजाद कर रखी थीं, तो अब सवाल येह उठता है कि जब थानवी साहब सवालात के जवाबात ही न देते थे, तो उनके नाम से मौसूम फतावा की

ज़ख़ीम किताबें और दीगर मुतफर्रिक़ उन्वानात पर उनकी कसीरुत्ता'दाद तसानीफ जो उनकी इल्मी वुस्अत व इस्तिअ्दाद की गवाही दे रही हैं और थानवी साहब की आलमगीर शोहरत, येह सब क्यूँ कर हुवा?

जवाबन अर्ज़ है कि थानवी साहब ने दीनी कुतुब तस्नीफ करने में ख़ामा आज़्माई ख़ुद बहुत कम की है बल्कि दूसरों को ज़हमत दी है. या'नी किसी और से लिखवा कर अपने नाम से शाए करवाया है. मिसाल के तौर पर थानवी साहब की खानादारी, तबाखी, भटियारख़ाना, बेकरी, अचार बनाना, साबून बनाना और दीगर सन्आते घरेलू पर मुश्तमिल किताब और जिस किताब को वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के मुत्तबईन थानवी साहब का अज़ीम तज्दीद कारनामा बताते हैं. उस किताब "**बहिश्ती ज़ेवर**" के लिये ख़ुद थानवी साहब ने ए'तराफ किया है कि इस किताब के इब्तिदाई हिस्से मैंने एक मौलवी साहब से लिखवाए हैं. अलावा अज़ीं माज़ी में तबअ शुदा कुछ कुतुब के नाम बदल कर उनके मुसन्निफीन के नाम की जगह थानवी साहब का नाम चस्पाँ कर दिया गया है. मिसाल के तौर पर मौलवी ज़हूरुल हसन कसौलवी की किताब "**अरवाहे सलासह**" जो काफी शोहरत याफ्ता किताब है, इस किताब का नाम अब बदल दिया गया है और पुराना नाम "**अरवाहे सलासह**" हज़्फ करके नया नाम "**हिकायाते औलिया**" कर दिया गया है और सरे वरक़ या'नी टाइटल पर अस्ल मुसन्निफ के नाम की जगह थानवी साहब का नाम तबअ कर दिया गया है.

अलावा अज़ीं थानवी साहब के इन्तक़ाल के बाद से अब तक सेंकडों की ता'दाद में देवबन्दी मक्तबए फिक्र के मुतअद्दद मुसन्निफीन की किताबें तबअ हुईं. इन किताबों के मुसन्निफीन हक़ीक़त में कोई

और ही थे लैकिन दुनिया को धोका और फरेब देने के लिये बहुत सी किताबों के मुसन्निफ की हैसियत से आनजहानी थानवी साहब का नाम चस्पाँ कर दिया गया है और थानवी साहब को आलमी पैमाने पर ''**मुजद्दिद**'' की हैसियत से मश्हूर और मा'रूफ कराने की एक मुनज़्ज़म और मुसम्मम साज़िश के तहत वसीअ तहरीक चलाई गई है. दीगर मुसन्निफीन की तस्नीफ कर्दा तसानीफ को थानवी साहब की तसानीफ में शुमार कर के दौरे हाज़िर के मुनाफिक़ीन देवबन्दी मुल्ला अवामुन्नास को आलमी पैमाने पर धोका और फरेब देते हैं और थानवी साहब को ''**साहिबे तसानीफे कसीरा**'' और ''**मुजद्दिद**'' साबित करने के लिये सेमीनार का इन्इक़ाद करते हैं और जाअली तसानीफ की नुमाइश करके थानवी साहब को एक हज़ार से ज़ाइद कुतुब के मुसन्निफ और कसीर उलूम व फुनून के माहिर की हैसियत देते हैं. अख़्बारों और दीगर ज़राए के तवस्सुत से ख़ूब तशहीर करते हैं. सरासर झूट, दरोग, किज़्ब, धोका, मक्र, अय्यारी, छल और फरेबदही का भरपूर सहारा ले कर थानवी साहब जैसे जाहिल मुल्ला को मिल्लते इस्लामिया का अज़ीम मुफक्किर, मुस्लहे क़ौम, हादिये मुस्लिमीन, हकीमुल उम्मत और मुजद्दिदे आ'ज़म साबित करने की शर्मनाक हरकत की जाती है.

अलबत्ता ! इस हक़ीक़त का ए'तराफ करने में हम हक़ पसन्दी और ए'तदाल रवी का दामन मज़बूती से थामे हुए हैं कि बेशक ! थानवी साहब ने फतावा भी लिखे हैं, कुछ किताबें भी तस्नीफ फरमाई हैं. लैकिन थानवी साहब के फतावा में तफक्क़ोह का सरासर फुक़्दान पाया जाता है. बल्कि यूँ कहना ज़ियादा मुनासिब होगा कि इस्तिफ्ता के जवाब में थानवी साहब किताब व सुन्नत के बराहीन और फिक़्ही कुतुब के जुज़्इयात व हवालाजात को नज़र अन्दाज़ फरमा कर अपनी आराअ

व मश्वरों और मोहमल हिकायात व रिवायात को ज़ियादा अहमिय्यत देते थे. इस हक़ीक़त का सहीह अन्दाज़ा इन अम्साल से होगा जो हम थानवी साहब के फतावा के ज़िम्न में पैश करेंगे.

थानवी साहब ने एक चन्द वरक़ी किताब्चा ब नाम ''**हिफ्ज़ुल ईमान**'' तस्नीफ फरमाया है और इस किताबचे में हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम, आलिमे मा कान वमा यकून के मुक़द्दस इल्म को आम इन्सानों, बच्चों, पागलों और जानवरों से तश्बीह दे कर ऐसी सख़्त घिनौनी तौहीन की है कि वोह ता क़यामत अहले ईमान तब्क़े के माबैन ''**गुस्ताख़े रसूल**'' के मज़्मूम लक़ब से याद किये जाएँगे.

इस वक़्त हम कुछ हवाले थानवी साहब के बयान फरमूदा या इरक़ाम कर्दा फिक़्ही मसाइल के तअल्लुक़ से पैश कर रहे हैं. जिनके मुतालए से थानवी साहब की फिक़्ही बे बज़ाअती, इल्मी बे माएगी और जहालत की पुख़्तगी का यक़ीन के दरजे में एहसास व ए'तमाद हो जाएगा.

"अगर हनफी मज़हब में जाइज़ नही, तो शाफई मज़हब पर जाइज़ होने का फत्वा !!!"

क़ुरआन व हदीस से मसाइल निकालना और तय करना हर शख़्स के बस की बात नहीं बल्कि हर आलिम के लिये भी रवा नहीं. लिहाज़ा मिल्लते इस्लामिया के मुत्तबईन चार अज़ीम मुज्तहिदीने किराम की तक़्लीद में मुन्क़सिम हो कर (1) **हनफी** (2) **शाफई** (3) **हम्बली** और (4) **मालिकी** के नाम से पहचाने जाते हैं. हर मुक़ल्लिद शख़्स

पर अपने इमाम की तक़्लीद वाजिब है. अपने इमाम के मज़्हब में जो काम या चीज़ हराम है, उसको दूसरे इमाम के मज़्हब के हुक्म की बिना पर जाइज़ व हलाल क़रार नहीं दे सकते. मिसाल के तौर पर कोई ऐसी चीज़ जिसका खाना हनफी मज़्हब में हराम है लैकिन शाफई मज़्हब में जाइज़ है. अब कोई हनफी शख़्स ऐसी चीज़ खाना चाहता है, जो हनफी मज़्हब में उसका खाना हराम है, तो उस चीज़ को हलाल क़रार देने के लिये वोह हनफी शख़्स शाफई मज़्हब का सहारा नहीं ले सकता. क्यूँ कि हनफी शख़्स पर हनफी मज़्हब के मसाइल व क़ानून नाफिज़ होंगे. उस पर वाजिब है कि वोह कामिल तौर पर हनफी मज़्हब की रिआयत व पाबन्दी करे. बाज़ मसाइल में हनफी मज़्हब पर अमल और बाज़ मसाइल में दीगर मज़ाहिब पर अमल करना, येह किसी भी हनफी शख़्स के लिये जाइज़ नहीं. लैकिन वहाबी, देवबन्दी, और तब्लीगी जमाअत के मुजद्दिद थानवी साहब अपने को हनफी मज़्हब का मुक़ल्लिद कहने के बा वजूद किसी काम या चीज़ को जाइज़ साबित करने के लिये कैसे हीले और कैसे एच पेच करते थे, वोह मुलाहेज़ा फरमाएँ :-

اگر کسی مسئلہ میں امام ابوحنیفہ کے مذہب پر جواز نہ نکلتا، تو میں نے یہ
طے کیا تھا کہ امام شافعی کے مذہب پر فتوی دیدوں گا اور ان سے بھی
کوئی صورت نہ نکلے گی، تو ان کی سہل تدابیر بتلاؤں گا کہ یوں کرلیا
کرو، جس صورت سے جواز نکل آتا اور اگر کوئی بات سمجھ ہی سے باہر
ہوتی، تو اس کا علاج نہیں معذوری ہے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی،
ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد ۳، قسط ۴، صفحہ ۴۱۳، ملفوظ ۶۴۲
(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید
ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی)
حصہ ۶، صفحہ ۱۸۰، ملفوظ ۲۲۶ (۴ر جمادی الاولی ۱۳۵۱ھ - سہ شنبہ، صبح کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

अगर किसी मस्अले में इमाम अबू हनीफा के मज़्हब पर जवाज़ न निकलता, तो मैंने येह तय किया था कि इमाम शाफई के मज़्हब पर फत्वा दे दूँगा और उन से भी कोई सूरत न निकलेगी, तो उनकी सहल तदाबीर बतलाऊँगा कि यूँ कर लिया करो, जिस सूरत से जवाज़ निकल आता और अगर कोई बात समझ ही से बाहर होती, तो उसका इलाज नहीं मा'ज़ूरी है.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) **जिल्द 3, क़िस्त 4, सफहा:413, मल्फ़ूज़ 642**

: हवाला :

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) **हिस्सा 6, सफहा 180, मल्फ़ूज़ 226** (4 / जमादिल ऊला 1351 हि. सेह शम्बा, सुब्ह की मजलिस)

मुलाहेज़ा फरमाएँ ! थानवी साहब को अगर इमामे आ'ज़म अबू हनीफा रदियल्लाहु तआला अन्हु के मज़हब पर जाइज़ होने की कोई सूरत न मिलती, तो वोह इमाम शाफई रदियल्लाहु तआला अन्हु के मज़हब पर उसे जाइज़ क़रार देते. और अगर इमाम शाफई रदियल्लाहु तआला अन्हु के मज़हब पर भी जाइज़ होने की कोई सूरत न निकलती, तो फिर थानवी साहब अपने ज़हेनी इख़्तिराअ का फैज़ जारी फरमाते हुए किसी न किसी तरह उस काम को जाइज़ क़रार देने की तदबीर बता देते और वोह तदबीर सिर्फ और सिर्फ अपने मफाद और नफा के हुसूल के तहत ही होती, चाहे वोह तदबीर का क़ुरआनो हदीस या फिक़्ह की मोअतबर कुतुब से सुबूत न हो या ख़िलाफे शरीअत हो. थानवी साहब खींच तान कर भी उसे जाइज़ क़रार देते.

“उम्र कम दिखा कर नौकरी हासिल करने के लिये ख़िज़ाब लगा कर धोका देना जाइज़ है !!!”

सियाह ख़िज़ाब (Black Dye) का इस्तेमाल मर्द के लिये सख़्त हराम है. सियाह ख़िज़ाब लगा कर अपने सफेद बालों को काला करने वाले मर्द पर अहादीसे करीमा में सख़्त वईद वारिद है.

हदीस : तिबरानी ने मोअज्जम कबीर में और इब्ने अबी आसिम ने ''**किताबुस्सुन्नह**'' में हज़रत अबू दर्दा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया कि **हुज़ूरे अक़्दस** सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि : –

''مَنْ خَضَبَ بِالسَّوَادِ سَوَّدَ اللّٰہُ وَجْھَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ''

तर्जमा : **''जो सियाह ख़िज़ाब करेगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसका मुँह काला करेगा''**

हदीस : इब्ने सअद हज़रत आमिर रदियल्लाहु तआला अन्हु से मुरसलन रावी कि **हुज़ूरे अक़्दस सय्यदे आलम** सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि : –

''اِنَّ اللّٰہَ لَا يَنْظُرُ اِلٰی مَنْ يَّخْضِبُ بِالسَّوَادِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ''

तर्जमा : **''जो सियाह ख़िज़ाब करेगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी तरफ नज़रे रहमत नहीं फरमाएगा.''**

मुतअद्दिद अहादीसे करीमा और फिक़्ह की तक़रीबन तमाम मशहूर कुतुब में साफ इर्शाद है कि मर्द के लिये सियाह ख़िज़ाब लगा

कर बालों को काला (Black) करना सख़्त हराम है. ऐसे हराम काम को थानवी साहब जाइज़ क़रार दे रहे हैं. एक हवाला पेशे ख़िदमत है :-

سوال: جب کہ نوکری کے لیے حاکم نے قید لگادی ہے کہ مثلا بائیس سال سے کم نہ ہو اور پچپن سال سے زیادہ نہ ہو اور نوکری عقد اجارہ ہے جس میں تراضی طرفین شرط ہے۔ تو ابتداء عمر زیادہ بتانا۔ یا انتہاء خضاب وغیرہ کر کے دھوکہ دینا جائز ہے یا نا جائز؟

جواب: فرمایا: یوں معلوم ہوتا ہے کہ آدمی کام کرنے کے قابل ہو، لہذا جب کام کر سکے تو نوکری کرنے میں کچھ حرج نہیں اور عمر کی قید بلا لحاظ کام کر سکنے کے ایسی ہے جیسے کوئی کہے میں ایسے آدمی کو نوکر رکھوں گا جس کا بال کالا ہو، لہٰذا خضاب کرنا جائز معلوم ہوتا ہے۔

''حسن العزیز'' (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتب: مولوی محمد یوسف و مولوی محمد مصطفیٰ، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفر نگر (یوپی) جلد: ۴، حصہ: ۱، قسط: ۱۰، ص: ۴۲

हिन्दी अनुवाद

सवाल : जब कि नोकरी के लिये हाकिम ने क़ैद लगा दी है कि मस्लन बाईस साल से कम न हो और पचपन साल से ज़ियादा न हो और नोकरी अक़्दे इजारा है जिस में तराज़ी तरफ़ैन शर्त है. तो इब्तिदा उम्र ज़ियादा बताना. या इन्तिहा ख़िज़ाब वगैरा करके धोका देना जाइज़ है या ना जाइज़ ?

जवाब : फरमाया: यूँ मा'लूम होता है कि आदमी काम करने के क़ाबिल हो, लिहाज़ा जब काम कर सके तो नोकरी करने में कुछ हर्ज नहीं और उम्र की क़ैद बिला लिहाज़ काम कर सकने के ऐसी है जैसे कोई कहे कि मैं ऐसे आदमी को नोकर रखूँगा जिसका बाल काला हो, लिहाज़ा ख़िज़ाब करना जाइज़ मा'लूम होता है.

: हवाला :

''**हुसनुल अज़ीज़**'' (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ) मुरत्तब : मौलवी मुहम्मद यूसुफ व मौलवी मुहम्मद मुस्तफा, नाशिर : मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फर नगर (यू.पी) **जिल्द:4, हिस्सा:1, क़िस्त:10, स:42**

मुन्दरजए बाला इबारत को बगौर मुतालेआ फरमाएँ. वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत और मुजद्दिद एक साथ दो दो गुनाह करने की ता'लीम व इजाज़त दे रहे हैं. सवाल पूछने वाला साफ लफ्ज़ों में पूछ रहा है कि नोकरी में रहने के लिये अपनी उम्र कम बताने के लिये अपने बालों को ख़िज़ाब लगा कर सियाह करके धोका देना जाइज़ है या ना जाइज़ ? इस सवाल का सिर्फ और सिर्फ एक ही जवाब था कि ''**धोका देना जाइज़ नहीं**'' क्यूँ कि दीने इस्लाम

ऐसा मुहज़्ज़ब और सादिक़ दीन है कि **पैगम्बरे इस्लाम हुज़ूरे अक़्दस** सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने धोका, फरेब, झाँसा, मक्र, दगा, अय्यारी, छल, रिया, निफाक़, झूट वगैरा रज़ीला व शनीआ अफ्आल की सख़्त लफ्ज़ों में मज़म्मत फरमाई है और सिद्क़, सदाक़त, दयानतदारी, ख़ुलूस, रास्ती, सच्चाई और इख़्लास की ता'लीम व तल्क़ीन फरमाई है. लेकिन इस्लाम के मुजद्दिद होने का दावा करने वाले थानवी साहब इस्लामी अख़्लाक़ व अत्वार को बर सरे आम बे दर्दी से और **उल्टी छुरी से ज़ब्ह कर रहे हैं.**

सवाल करने वाले को मन चाहा जवाब दे कर ख़ुश करके अपना गरवीदा बनाने की फासिद निय्यत से थानवी साहब खुल्लम खुल्ला ख़िलाफे शरीअत हुक्म सुना रहे हैं. बल्कि धोका बाज़ी और अय्यारी की ता'लीम दे रहे हैं. धोका देना और वोह भी ख़िज़ाब लगा कर धोका देना ''**करेला और नीम चढा**'' का मुतरादिफ है. क्यूँ कि अगर धोका न भी देना हो, तब भी ख़िज़ाब लगा कर बालों को सियाह करना गैरे मुजाहिद के लिये हराम है. या'नी जो काम हराम था, उस हराम काम को दूसरे हराम काम के लिये अमल में लाना मज़ीद हुरमत का बाइस है.

धोका देने की ता'लीम देने में भी थानवी साहब धोका दे रहे हैं. साफ लफ्ज़ों में ''**धोका देने के लिये ख़िज़ाब करना जाइज़ है**'' कहने के बजाए, येह फरमा रहे हैं कि ''**ख़िज़ाब करना जाइज़ मा'लूम हो रहा है**'' इस जुम्ले से थानवी साहब की इल्मी बे बज़ाअती और तफक्क़ोह में बे माएगी का पता चलता है. थानवी साहब को यक़ीन के दरजे में मा'लूम नहीं था कि धोका देने के लिये ख़िज़ाब करना जाइज़ है, लैकिन साइल को ख़ुश करना था, साइल की हस्बे मन्शा और मन

चाहा व भाता जवाब देना था. शरीअत के अहकाम की कोई परवाह नहीं थी. सिर्फ साइल को ख़ुश करना था. लिहाज़ा गप मार दी कि जाइज़ मा'लूम होता है. एक आलिमे दीन और मुफ्ती की येह शान नहीं होती कि वोह दीनी मसाइल ऐसे तज़बज़ुब के अन्दाज़ में बयान करे. बल्कि वोह यक़ीन के साथ कहता है कि येह काम जाइज़ है या ना जाइज़ है. तरद्दुद और शशो पन्ज की कैफियत में मुब्तला हो कर कभी येह नहीं कहता कि जाइज़ मा'लूम होता है या ना जाइज़ मा'लूम होता है.

"हालते नमाज़ में उगालदान उठा कर थूकना"

नमाज़ इस्लाम का अहम रुक्न है. दीन का वोह इल्म जिसको सीखना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फर्ज़ है, उस में नमाज़ के मसाइल का इल्म शामिल है. नमाज़ अफ्ज़लुल इबादात या'नी तमाम इबादतों से अफ्ज़ल इबादत है. नमाज़ की आ'ला व अफ्ज़ल इबादत कामिल और सहीह तौर से अदा करने की क़ुरआनो हदीस में ताकीद फरमाई गई है. नमाज़ के फराइज़ व वाजिबात सुनन व मुस्तहब्बात की अदाएगी के साथ साथ नमाज़ के मुफ्सिदात व मकरूहात व नक़ाइस से बचने की भी सख़्त ज़रूरत होती है. लिहाज़ा मिल्लते इस्लामिया के ख़ैर अन्देश उलमा ने नमाज़ के मसाइल पर बे शुमार कुतुब तस्नीफ फरमाई हैं. हर सूबे और इलाक़े की मक़ामी ज़बान में नमाज़ की किताब ज़रूर दस्तयाब होती है. उन किताबों को पढ कर आम्मतुल मुस्लिमीन नमाज़ के मसाइल की वाक़फियत हासिल करते हैं और सहीह तरीक़े से नमाज़ अदा करने की हत्तल इम्कान कोशिश करते हैं. नमाज़ के मसाइल की मा'लूमात रखना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी

है, लैकिन उलमा के लिये अशद्द ज़रूरी है. क्यूँ कि इन उलमा से अवाम गाहे गाहे नमाज़ के मसाइल दरयाफ्त करते हैं. नमाज़ में एक ऐसी गलती का सादिर होना कि जिस से नमाज़ फासिद हो जाती है, उस गलती के इर्तिकाब से नमाज़ टूट जाती है और नमाज़ अज़ सरे नौ पढनी लाज़मी हो जाती है. अगर नमाज़ को नहीं दोहराएगा या'नी दोबारा नहीं पढेगा, तो नमाज़ी गुनहगार होगा.

मुफ्सिदाते नमाज़ या'नी नमाज़ को फासिद या'नी तोड देने वाले कामों में **''फे'ले कसीर''** आता है. या'नी ऐसा काम हालते नमाज़ में करना कि देखने वाले को येह गुमान हो कि येह शख़्स गैरे हालते नमाज़ में है. इसको आसानी से यूँ समझे कि ''फे'ले कसीर या'नी ज़ियादा काम. मिसाल के तौर पर किसी नमाज़ी को नमाज़ पढने की हालत में खुजली आई. बाज़ू पर खुजली आई थी और उसने एक दो दफा बाज़ू को खुजाया. तो येह फे'ले क़लील या'नी कम काम है. उसकी नमाज़ हो जाएगी और अगर उसको हाथ पर, पीठ पर, सर में वग़ैरा मुतअद्दिद मक़ाम पर खुजली आई और वोह हाथ पर, पीठ पर, पेट पर, सर पर मुसलसल खुजलाता है और देखने वाले को येह वहम हो कि येह शख़्स नमाज़ पढता है या खुजलाता है ? उस नमाज़ी की नमाज़ फासिद हो जाएगी. ऐसे आसान मस्अले में भी वहाबियों के जाहिल और नाम निहाद मुजद्दिद थानवी साहब कैसे शगूफे खिला रहे हैं. वोह मुलाहेज़ा फरमाएँ :-

واقعہ: ایک صاحب نے پوچھا کہ اگالدان مسجد میں رکھا ہے، نماز میں اس کو اٹھا کر تھوکنے سے نماز ہوجائے گی یا نہیں ہوجائے گی؟

ارشاد: یہ دیکھا جائے کہ یہ فعل کثیر ہے یا نہیں، اگر آپ کے نزدیک نہیں تو آپ کی نماز ہوجائے گی، مگر میں تو اپنی نماز لوٹاؤں گا۔ کیوں کہ میرے نزدیک یہ فعل کثیر ہے، فعل کثیر کی اقرب تعریف میرے نزدیک یہ ہے کہ جس کو کرتے ہوئے دیکھ کر دوسرا آدمی سمجھے کہ یہ شخص نماز میں نہیں ہے، چناں چہ اگالدان اٹھانے کی حالت میں دوسرا شخص نہیں کہہ سکتا کہ یہ نماز پڑھ رہا ہے، بلکہ یوں کہے گا کہ یہ نماز نہیں پڑھ رہا ہے۔

حسن العزیز (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتب: مولوی محمد یوسف بجنوری، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفرنگر (یوپی) جلد:۳، حصہ:۲، قسط:۱۳، ص:۹۷، مسلسل: صفحہ ۳۲۳

हिन्दी अनुवाद

वाक़ेआ: **एक साहब ने पूछा कि उगालदान मस्जिद में रखा है, नमाज़ में उसको उठा कर थूकने से नमाज़ हो जाएगी या नहीं हो जाएगी ?**

इर्शाद: **येह देखा जाए कि येह फे'ले कसीर है या नहीं, अगर आपके नज़्दीक नहीं तो आपकी नमाज़ हो जाएगी, मगर मैं तो अपनी नमाज़ लौटाऊँगा. क्यूँ कि मेरे नज़्दीक येह फे'ले कसीर है, फे'ले कसीर की अक़्रब ता'रीफ मेरे नज़्दीक येह है कि जिसको करते हुए देख कर दूसरा आदमी**

समझे कि येह शख़्स नमाज़ में नहीं है, चुनान्चे उगालदान उठाने की हालत में दूसरा शख़्स नहीं कह सकता कि येह नमाज़ पढ रहा है, बल्कि यूँ कहेगा कि येह नमाज़ नहीं पढ़ रहा है.

: हवाला :

हुस्नुल अज़ीज़ (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ) मुरत्तब: मौलवी मुहम्मद यूसुफ बिजनौरी, नाशिर: मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला: मुज़फ्फर नगर (यू.पी) **जिल्द:3, हिस्सा:2, क़िस्त:13, सफहा:97, मुसलसल: सफहा 33**

साइल का पूछने का अन्दाज़ ही इस बात की शहादत दे रहा है कि वोह फिक्ही मसाइल की गहरी मा'लूमात नहीं रखता. फे'ले कसीर और फे'ले क़लील की फिक्ही इस्तेलाह से ना वाक़िफ है. बेचारा सीधा सादा सवाल पूछ रहा है कि हालते नमाज़ में मस्जिद में रखा हुवा उगालदान उठा कर रखने से नमाज़ हो जाएगी या नहीं होगी. इस सवाल का साफ और आसान जवाब यही था कि नमाज़ हो जाएगी या नहीं होगी. लैकिन थानवी साहब जिन का नाम ठहरा !!! अपनी आदत से मजबूर और इल्मी सलाहियत से मा'ज़ूर होने के बाइस ऐसे आसान मस्अले के जवाब में गुथ्थी सुल्झाने के बजाए उल्झा रहे हैं. जवाब ऐसा मोहमल दिया कि मस्अला हल होने के बजाए पेचीदा हो गया. और

पेचीदा भी ऐसा हो गया कि एक नए मुजतहिद का दा'वा भी हो गया.

फिक्ही मसाइल में मुजतहिदीने अरबआ या'नी (1) **सय्यदना इमामे आ'ज़म अबू हनीफा** (2) **सय्यदना इमाम शाफई** (3) **सय्यदना इमाम मालिक** और (4) **सय्यदना इमाम अहमद बिन हम्बल** के दरमियान इख़्तिलाफात हैं और वोह तमाम इख़्तिलाफात कुरआन व हदीस से मसाइले इस्तम्बात या'नी अख़्ज़ करने की वजह से हक़ व सवाब हैं. कई मसाइल के ज़िम्न में फिक्ह की मशहूर व मा'रूफ और मोतमद व मुस्तनद कुतुब में मज़कूर है कि इस मस्अले में इमामे आ'ज़म के नज़दीक येह हुक्म है और इमाम शाफई के नज़दीक येह हुक्म है. अल मुख़्तसर ! किसी, किसी मस्अले में इन चारों इमामों के नज़दीक अलग अलग हुक्म हैं : येह चारों इमाम मुजतहिद थे. कुरआनो हदीस, व इज्माअ से क़यास से मसाइल इस्तम्बात फरमाते थे. इन्हें इज्तिहाद का हक़ हासिल था.

इज्तिहाद का हक़ सिर्फ मुजतहिद को होता है. यहाँ तक कि वोह मुजद्दिद जो मरतबए इज्तिहाद को न पहुँचा हो, उसे भी इजतिहाद का हक़ हासिल नहीं. मुजतहिद का मरतबा मुजद्दिद से भी आ'ला होता है. दीने इस्लाम के चार मज़ाहिब (1) हनफी (2) शाफई (3) मालिकी और (4) हम्बली तय हो चुके हैं. इन चारों मज़ाहिब में से किसी एक की तक़्लीद हर मो'मिन पर वाजिब है. जो मो'मिन मुसलमान इन चारों मज़ाहिब में से किसी एक की तक़्लीद करता है उसके लिये येह ज़रूरी है कि वोह अब उस मज़हब के इमाम के क़ौल पर ही अमल करे जिसकी वोह तक़्लीद करता हो. अब वोह दूसरे इमाम के क़ौल को सनद बनाकर किसी फिक्ही मस्अले का हुक्म नाफिज़ नहीं करेगा. अलावा अज़ीं अब उसके लिये येह भी रवा नहीं कि वोह हर कसो

नाकस के क़ौल या राय या नज़रिये को अपने इमाम (कि जिसकी वोह तक़्लीद कर रहा है) के क़ौल के मुक़ाबिल अहम्मियत दे. उसे तो अपने क़ौल या राय को दख़ल देने की क़त्अन रुख़्सत ही नहीं. अगर हनफी है तो फिक़्हे हनफी की किताबों में जो हुक्म लिखा है, वोह क़बूल व मन्ज़ूर होना चाहिये. आमन्ना, सदक़्ना कह कर सरे तस्लीम ख़म करना ही उस पर लाज़िम है. अब किसी मस्अले में मेरे नज़्दीक येह हुक्म है. फलाँ के नज़्दीक या आपके नज़्दीक येह हुक्म है कह कर मस्अले के जवाज़ या अदमे जवाज़ की नई सूरत ईजाद करने का उसे क़त्अन और लाज़िमन कोई हक़ नहीं. लैकिन थानवी साहब एक आसान और मुत्तफिक़ अलैह मस्अले में भी अपनी ख़र दिमागी का मुज़ाहेरा फरमा रहे हैं और दर पर्दा अब मुजद्दिद के मरतबे से आगे बढ कर अपनी शाने इज्तिहाद का इज़्हार फरमा रहे हैं. **''मेरे नज़्दीक येह फे'ले कसीर है''** कह कर थानवी साहब ख़ुद ही अपनी शाने इज्तिहाद का ए'लान कर रहे हैं.

बल्कि !!!

सवाल करने वाले को जवाब में येह कहना कि **''येह देखा जाए कि येह फे'ले कसीर है या नहीं ? अगर आपके नज़्दीक नहीं तो आपकी नमाज़ हो जाएगी.''** येह जुम्ला ऐसा ख़तरनाक है कि एक साथ बे शुमार फित्नों के दरवाज़े खोल रहा है. अगर इसी तरह हर शख़्स को येह इजाज़त दी जाएगी कि उसके नज़्दीक येह फे'ल कैसा है ? तो इस्लामी उसूल और क़ानून की कोई अहम्मियत ही बाक़ी न रहेगी. हर शख़्स यही क़यास करेगा कि येह फे'ल मेरे नज़्दीक ऐसा है या वैसा है. और

''फे'ल मेरे नज़्दीक ऐसा है'' की आड में हर मस्अले का अपने तौर पर जाइज़ या ना जाइज़ होने का हुक्म लगाएगा. नतीजतन इस्लामी फिक़्ह अपनी सूरत पर बाक़ी ही न रहेगा और शरीअत का क़ानून हर शख़्स अपनी मरज़ी और मन्शा के मुताबिक़ तय करेगा. इल्हाद, बे दीनी, आवारगी, बद चलनी, सर गर्दानी, ला उबालीपन, बे परवाही, बद इन्तज़ामी और क़ानूने शरीअत की ख़िलाफ वर्ज़ी में दिलैरी का माहौल पैदा होगा. इस्लामी तहज़ीब व तमद्दुन नेस्तो नाबूद हो कर रह जाएँगे. मिसाल के तौर पर नमाज़ में कोई ऐसा फे'ल हो गया जिसकी वजह से सजदए सह्व वाजिब हो गया और सजदए सह्व न करने की वजह से नमाज़ वाजिबुल इआदा या'नी अज़ सरे नौ पढना वाजिब होगी, ऐसे मस्अले में हर शख़्स अब यही कहेगा कि **''मेरे नज़्दीक सजदए सह्व वाजिब नहीं''** बस हो गया काम तमाम, अब नमाज़ के फिक़्ही मसाइल की कोई अहम्मियत या ज़रूरत बाक़ी न रहेगी. बल्कि गुमराहियत का बाज़ार गर्म होगा. हर जाहिल बल्कि अजहल शख़्स इस्लामी क़ानून में दख़ल देने की जुरअत करते हुए थानवी साहब की ता'लीम के मुताबिक़ यही कहेगा कि इस मस्अले का मेरे नज़्दीक येह हुक्म है.

(वल अयाज़ बिल्लाहि तआला)

“यहाँ के मर्द तुम्हारी औरतों पर नज़रे बद नहीं करेंगे” लिहाज़ा - तुम्हारी औरतें बे-पर्दा आ सकती हैं”

इस्लाम में पर्दे की बहुत ही अहम्मियत है. मुसलमान ख़्वातीन का बे पर्दा घर से बाहर निकलना या घर में रह कर भी बे पर्दगी करना सख़्त माअ्यूब और लाइके़ सद मलामत है. मगरिबी तहज़ीब ने बे पर्दगी को फरोग दे कर बे शुमार जराइम की बुनियादें डालीं हैं यहाँ तक कि उरयानी, बे हयाई और बे शर्मी को मगरिबी तेहज़ीब के दिलदादह और मोडर्न और हाई सोसायटी (High Society) के लोग फैशन और तरक्क़ी में शुमार करते हैं. लैकिन इस्लाम एक ऐसा मुहज्जब दीन है कि इस्लाम ने अपने मुत्तबईन को तेहज़ीब और अख़्लाक़ के दाइरे में महफ़ूज़ रख कर बे हयाई, बे शर्मी और उर्यानियत के किरदार सोज़ अख़्लाक़ व अफ्आले रज़ीला व शनीआ से सख़्त इजतिनाब की ताकीद फरमाई है. तजुरबे से साबित शुदा येह हक़ीक़त है कि बे पर्दगी बे हयाई की सीडी का पहला ज़ीना है.

कु़रआने मजीद में पारह 22, सूरए अहज़ाब, आयत नम्बर 59 में पर्दे के तअल्लुक़ से इर्शादे रब तबारक व तआला है कि :

يَآ اَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِاَزْوَاجِكَ وَ بَنٰتِكَ وَ نِسَآءَ الْمُوْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَا بِيْبِهِنَّ

‘‘ऐ नबी ! अपनी बीबियों और साहबज़ादियों और मुसलमानों की औरतों से फरमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा

अपने मुँह पर डाले रहें.’’ (कन्ज़ुल ईमान)

येह आयते करीमा ‘‘**आयते हिजाब**’’ से मशहूर है और येह आयते करीमा स. 5 हिजरी में नाज़िल हुई है. इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बाद मुसलमान औरतों पर पर्दा फर्ज़ हुवा है. इस आयत की तफ्सीर व तशरीह में पर्दे के तअल्लुक़ से बहुत कुछ लिखा जा सकता है. लैकिन हम इख़्तिसारे तहरीर को इख़्तियार करते हुए ज़ैल में एक हदीस पैश करके सुबूकदोश होते हैं :

उम्मुल मो’मिनीन सय्यदना हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि वोह फरमाती हैं कि मैं और उम्मुल मो’मिनीन हज़रते मैमूना रदियल्लाहु तआला अन्हा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थीं कि:

‘‘اَقْبَلَ عَبْدُاللّٰهِ بن اُمِّ مَكْتُوم رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالىٰ عَنْهُ فَدَخَلَ عَلَيْهِ، وَ ذٰلِكَ بَعْدَ مَا اُمِرْنَا بِالْحِجَابِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اِحْتَجِبَامِنْهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَلَيْسَ هُوَ اَعْمٰى لَا يُبْصِرُنَا وَ لَا يَعْرِضُنَا: فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَفَعَمْيَاوَاِنْ اَنْتُمَا اَلَسْتُمَا تُبْصِرَانِهُ‘‘

तर्जमा : ‘‘अचानक हज़रते अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रदियल्लाहु तआला अन्हु बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए, येह उस वक़्त की बात है जब पर्दे का हुक्म आ चुका था. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया: ‘‘**इन से पर्दा करो**’’ मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! क्या येह नाबीना नहीं है ? हमें न येह देख रहे हैं और न कोई हम कलामी है. येह सुन कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया: क्या तुम दोनों भी नाबीना हो ? क्या तुम इन को नहीं देख रही हो ?’’

हवाला: (1) अल जामेउत्तिरमिज़ी, जिल्द:2, स:102

(2) अस्सुननुल अबी दावूद, जिल्द:2, स:296

(3) अल मस्नद–ले–अहमद बिन हम्बल, जिल्द:6, स.91.

(4) तबक़ातुल कुब्रा इब्ने सअद, जि.8, स.126

मुन्दरजा बाला आयते कुरआनिया और हदीस शरीफ पर कोई तबसेरा न करते हुए सिर्फ इतना ही अर्ज़ करना है कि दीने इस्लाम में पर्दे की सख़्त ताकीद फरमाई गई है. लैकिन वहाबी, तब्लीगी जमाअत के नाम निहाद जाहिल मुजद्दिद ने इस्लामी पर्दे की ताकीद और अहम्मियत को किस बेदर्दी और बे रहमी से मजरूह किया है, वोह मुलाहेज़ा फरमाएँ :

لندن سے ایک انگریز نے سوال کیا تھا۔ یہ مع اپنی اہلیہ کے مسلمان ہو گیا تھا کہ ہم ہندوستان آنا چاہتے ہیں اور ہماری میم بھی ہمراہ ہوگی، اور وہ پردہ نہ کر سکے گی۔ کیا ہم کو ذلیل تو نہ سمجھا جاوے گا۔ اب خیال یہ ہوا کہ شریعت میں تو بے پردگی کی اجازت نہیں، اگر اجازت دی تو اس پر یہ خدشہ کہ اس کو سند بنا کر عام آزادی کی لہر نہ پھیل جائے اور اگر منع کیا جاتا ہے، تو واجب لغیرہ پر جبر کا کیا حق ہے۔ پھر شریعت پر تنگی کا شبہ ہوگا، اللہ نے مدد فرمائی اور دل میں یہ ڈالا کہ گو شریعت میں اجازت نہیں مگر علّت کیا ہے؟ وہ فتنہ ہے۔ تو اتنا گہرا پردہ فتنہ کے سبب ہے اور یہ تجربہ سے ثابت ہو گیا ہے کہ مفتوح قوم فاتح قوم پر نظر بد نہیں کر سکتی، جیسا کہ مشاہد ہے۔ میں نے لکھ دیا کہ آپ کے لیے اجازت ہے۔ جو قید ہے اس اجازت میں وہ اس قدر اہم اور سخت ہے کہ اس کا ہر شخص کو میسر آنا قریب محال کے ہے یعنی یہ کہ وہ قوم فاتح ہو۔ یہ سوال اور جگہ جاتا، تو نہ معلوم اس کی کیا گت بنتی۔ لیکن وہ انگریز ہندوستان آیا نہیں۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد ۴، قسط ۵، صفحہ ۴۸۶، ملفوظ ۹۲۳

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ ۸، صفحہ ۳۰۹، ملفوظ ۳۹۴

(۱۲/شعبان المعظم ۱۳۵۱ھ - پنج شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

लन्दन से एक अंग्रेज़ ने सवाल किया येह मअ अपनी अहलिया के मुसलमान हो गया था कि हम हिन्दुस्तान आना चाहते हैं और हमारी मेम भी हमराह होगी, और वोह पर्दा न कर सकेगी. क्या हमको ज़लील तो न समझा जाएगा. अब ख़याल येह हुवा कि शरीअत में तो बे पर्दगी की इजाज़त नहीं अगर इजाज़त दी तो उस पर येह ख़दशा कि इसको सनद बना कर आम आज़ादी की लहर न फैल जाए और अगर मना किया जाता है तो वाजिब ले–गैरिही पर जबर का क्या हक़ है. फिर शरीअत पर तंगी का शुबह होगा, अल्लाह ने मदद फरमाई और दिल में डाला कि गो शरीअत में इजाज़त नहीं मगर इल्लत क्या है ? वोह फित्ना है. तो इतना गहेरा पर्दा फित्ने के सबब है और येह तजुरबे से साबित हो गया है कि मफ्तूह क़ौम फातेह क़ौम पर नज़रे बद नहीं कर सकती, जैसा कि

मुशाहिद है. मैंने लिख दिया है कि आपके लिये इजाज़त है. जो कै़द है इस इजाज़त में वोह इस क़दर अहम और सख़्त है कि उसका हर शख़्स को मयस्सर आना क़रीब मुहाल के है या'नी येह कि वोह क़ौमे फातेह हो. येह सवाल और जगह जाता तो न मा'लूम इसकी क्या गत बनती लैकिन वोह अंग्रेज़ हिन्दुस्तान आया नहीं.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़ः अशरफ अली थानवी, नाशिरः मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 4, क़िस्त 5 सफहा 486, मल्फूज़ 923
(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिरः मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 8, सफहा 309, मल्फूज़ 394
(12/ शाबानुल मुअज़्ज़म स.1351 हि. पंज शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

मुन्दरजए बाला इबारत पर किसी क़िस्म की तन्क़ीद से पहले एक और हवाला मुलाहेज़ा हो :

ایک دوسرے انگریز نے ان ہی صاحب کے ذریعہ سے ایک خط مجھ کو لکھوایا کہ میں تھانہ بھون آنا چاہتا ہوں۔ مع اپنی بیوی کے ہندوستان دیکھنے کو بیحد جی چاہتا ہے۔ آپ کے یہاں پردہ ہے، ہمارے یہاں پردہ نہیں۔ تو کیا ایسی حالت میں آپ لوگ ہم کو حقیر نہ سمجھیں گے؟ اب مجھ کو سوچ ہوئی اگر لکھتا ہوں کہ پردہ کی ضرورت نہیں، تو وہ نصوص سے ثابت ہے، نفی کیسے ہوسکتی ہے۔ اور اگر پردہ کرنے کو لکھتا ہوں، تو ان کو بوجہ عادت نہ ہونے کے وحشت ہوگی۔ بس اسی حفظ حدود کی اصل پر یہ سمجھ میں آیا کہ اور اعضاء تو مستور ہوں گے ہی صرف چہرہ کھلا ہوگا۔ تو چہرہ چھپانے سے اصل مقصود ہے دفع فتنہ اور فاتح قوم کی ایک ہیبت ہوئی ہے، مفتوح قوم پر۔ اس لیے مفتوح قوم کی ہمت نہیں پڑتی فاتح قوم کے متعلق خیالات فاسدہ کی۔ اس لیے ہم آپ لوگوں کو اس کی گنجائش دیں گے بخلاف ہمارے ہندوستان میں ہم آپس میں سب برابر ہیں۔ ایک کا دوسرے پر کوئی ہیبت کا اثر نہیں۔ اس لیے ہم اپنے لیے یہ گنجائش نہ دیں گے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۱، قسط۲، صفحہ۲۹، ملفوظ۵۱
(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۳، صفحہ۹۲، ملفوظ۱۱۷
(۲۲/ ذی الحجہ ۱۳۵۰ھ - بعد نماز جمعہ کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

एक दूसरे अंग्रेज़ ने उन्हीं साहब के ज़रीए से मुझ को लिखवाया कि मैं थाना भवन आना चाहता हूँ. मअ अपनी बीवी के हिन्दुस्तान देखने को बेहद जी चाहता है. आपके यहाँ पर्दा है, हमारे यहाँ पर्दा नहीं. तो क्या ऐसी हालत में आप लोग हम को हक़ीर न समझेंगे ? अब मुझ को सोच हुई अगर लिखता हूँ कि पर्दे की ज़रूरत नहीं तो वोह नुसूस से साबित है, नफी कैसे हो सकती है. और अगर पर्दा करने को लिखता हूँ तो उनको ब वज्हे आदत न होनेके वहशत होगी. बस इसी हिफ्ज़े हुदूद की अस्ल पर येह समझ में आया कि और आ'ज़ा तो मस्तूर होंगे ही, सिर्फ चहरा खुला होगा. तो चहरा छुपाने से अस्ल मक़्सूद है दफ्ए फित्ना और फातेह क़ौम की एक हैबत होती है, मफ्तूह क़ौम पर. इस लिये मफ्तूह क़ौम की हिम्मत नहीं पडती फातेह क़ौम के मुतअल्लिक़ ख़यालाते फासिदा की. इस लिये हम आप लोगों को इसकी गुन्जाइश देंगे ब ख़िलाफ हमारे हिन्दुस्तान में हम आपस में सब बराबर है. एक का दूसरे पर कोई हैबत का असर नहीं. इस लिये हम अपने लिये येह गुन्जाइस न देंगे.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 1, क़िस्त 2 सफहा 29, मल्फूज़ 51

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, (जदीद एडीशन) अज़ : अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 3, सफहा 92, मल्फूज़ 117

(22/ ज़िल हिज्जा सि.1350 हि. , बाद नमाज़े जुम्आ की मजलिस)

मुन्दरजए बाला दोनों इबारतें बगौर मुतालआ करने से क़ारईन को एहसास तो हो गया ही होगा कि थानवी साहब बे पर्दगी की इजाज़त देने के लिये अटसट मन्तिक़ छाँट कर मक्रो फरेब की कैसी अटखीली चाल चल रहे हैं. ख़ैर ! इन दोनों इबारतों में पोशीदा और अयाँ इस्लामी क़वानीन की तज़्हीक और इस्लामी पर्दे की अहम्मियत की तज़्लील पर थानवी साहब के फासिद नज़रियात की उक़्दा कुशाई करने से पहले हम एक मज़ीद हवाला क़ारईने किराम की ख़िदमत में पैश कर रहे हैं. फिर इन तीनों इबारत पर मजमूई तौर पर तन्क़ीद व तरदीद करेंगे.

ان میں سے کسی کا بواسطہ بابو صاحب مذکور کے ایک خط آیا کہ ہمیں حاضری کا اشتیاق ہے، مگر یہ اندیشہ ہے کہ ہماری عورتیں پردہ کی عادی نہیں، وہ پابند نہ ہوسکیں گی، شاید آپ حضرات ناراض ہوں، حضرت اقدس نے تحریر فرمایا کہ وجہ اور کفین کا ستر فی نفسہ واجب نہیں بلکہ فتنہ کے سبب مامور بہ ہے اور آپ کی عورتوں کی طرف یہاں کے لوگوں کو رعب کی وجہ سے کسی قسم کا نفسانی خیال ہونا بعید ہے، لہٰذا انتفاء علت کے سبب ان کو اس کی اجازت مل سکتی ہے۔

اشرف السوانح، مصنف: خواجہ عزیز الحسن غوری، جلد۳، ص۲۳۲، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ تھانہ بھون، ضلع: مظفر نگر (یوپی)

हिन्दी अनुवाद

इन में से किसी का ब वास्ता बाबू साहब मज़्कूर के एक ख़त आया कि हमें हाज़री का इश्तियाक़ है, मगर येह अन्देशा है कि हमारी औरतें पर्दे की आदी नहीं, वोह पाबन्द न हो सकेंगी, शायद आप हज़रात नाराज़ हों, हज़रते अक्दस ने तहरीर फरमाया कि वजह और कफ्फैन का सत्र फी नफ्सिही वाजिब नहीं बल्कि फित्ने के सबब मामूर बेहि है और आपकी औरतों की तरफ यहाँ के लोगों को रोअब की वजह से किसी क़िस्म का नफ्सानी ख़याल होना बईद है, लिहाज़ा इन्तेफा-ए- इल्लत के सबब उनको इस की इजाज़त मिल सकती है.

: हवाला :

अशरफुस्सवानेह, मुसन्निफ: ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन गौरी, जिल्द:3, सफहा:232, नाशिर : मक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िला:मुज़फ्फर नगर (यू.पी)

अब आइये ! मुन्दरजए बाला तीनों इबारात के ज़िम्न में गुफ्तगू करें.

- लन्दन से एक नौ मुस्लिम ने ब ज़रीए ख़त थानवी साहब से अपनी बेगम के हमराह थाना भवन आने की इजाज़त माँगी थी और इस में अहम बात येह थी कि लन्दन से आने वाले नौ मुस्लिम की बीवी थानवी साहब के सामने बे पर्दा आएगी. थानवी साहब जो अपने ज़अम में मुजद्दिद ठहरे. शरीअत के अटल क़वानीन में अपनी फासिद राय से दख़ल अन्दाज़ी करके मन चाहे क़ानून घडने के पूराने मरीज़ और आदी थे. पर्दे जैसे अहम और अटल क़ानून में भी मुज़हका ख़ैज़ इस्तदलाल कर रहे हैं.
- साफ साफ जवाब दे देना था कि इस्लाम में पर्दे की सख़्त अहम्मियत है. क़ुरआनो हदीस में पर्दे की ताकीद फरमाई गई है लिहाज़ा मैं आपकी बेगम को अपने पास बे पर्दा आने की हरगिज़ हरगिज़ इजाज़त नहीं दे सकता. मगर थानवी साहब ने लन्दन के नौ मुस्लिम को अपनी बेगम को बे पर्दा थाना भवन में लाने की इजाज़त दे दी और थानवी साहब ने लन्दन वाली ख़ातून को बे पर्दा आने की इजाज़त देने के लिये कैसे कैसे हीले और बहाने तलाशे और कैसी बे तुकी, बे

महल, बे जोड, बे ढंगी, बे लिहाज़, बे सबात, बेजा, बे हाल, बे सलीक़ा और बे शऊर तावीलात व नुक्कात बयान फरमा कर अपनी ख़र दिमागी, ख़ुराफाती ज़हेनियत और बे राह रवी का मुज़ाहेरा फरमाया है, वोह मुलाहेज़ा फरमाएँ.

- थानवी साहब ने पहले पर्दे का फल्सफा बयान किया कि पर्दे की इल्लत क्या है ? ब क़ौले थानवी साहब **''वोह फित्ना है, तो इतना गहरा पर्दा फित्ने के सबब से है''** या'नी अगर औरतें पर्दा न करेंगी, तो मर्द की नज़रें औरतों के चहरों पर पडेंगी, फिर आँखें दो-चार होंगी, आँखों आँखों में बातें होंगी, आँख मिचोली खेलेंगे, एक दूसरे की आँख में बसना होगा, फिर तअल्लुक़ात आहिस्ता आहिस्ता बढते बढते ना जाइज़ फे'ल और हरामकारी तक पहुँचने का इम्कान है. अक्सर मर्दों की यही फितरत होती है कि वोह औरतों को शहवत की नज़र से देखते हैं. लिहाज़ा औरतों को पर्दा करने का हुक्म दिया गया है.

यहाँ तक पर्दे की अहम्मियत का पस मन्ज़र बयान करने के बाद अब थानवी साहब ख़तरनाक मोड से अपनी बात को घुमाव दे रहे हैं कि **''और येह तजुरबे से साबित हो गया है कि मफ्तूह क़ौम फातेह क़ौम पर नज़रे बद नहीं कर सकती, जैसा कि शाहिद है''** या'नी फत्ह की गई क़ौम या'नी हारने वाली क़ौम के मर्द फातेह क़ौम या'नी जीतने वाली क़ौम की औरतों पर नज़रे बद या'नी बुरी नज़र नहीं करते. येह बात मुशाहेदा और तजुरबे से साबित है. और तुम अंग्रेज़ क़ौम से तअल्लुक़ रखते हो और अंग्रेज़ क़ौम ने हिन्दुस्तान को फत्ह किया है, लिहाज़ा तुम फातेह या'नी जीतने वाली क़ौम हो. और भारत अंग्रेज़ों के हाथों फत्ह हुवा है लिहाज़ा भारत के लोग मफ्तूह क़ौम या'नी हारने वाली क़ौम है. अंग्रेज़ क़ौम फातेह होने की वजह से भारत के

लोगों पर उनका ऐसा रोअब और दबदबा है कि भारत की मफ्तूह क़ौम के मर्द अंग्रेज़ क़ौम की औरतों को बुरी नज़र से देखने की हिम्मत नहीं करते. और जब भारत के मर्द तुम्हारी औरतों को बुरी नज़र से देखेंगे ही नहीं, तो अब आँख से आँख मिलने और मआमला आगे बढ कर कोई फित्ना होने का इम्कान ही नहीं और पर्दे का मक़्सद फित्ना उठने से रोकना है और तुम्हारा रोअब और दबदबा ऐसा तारी है कि पर्दे का मक़्सद पर्दा किये बगैर ही हासिल हो जाता है, लिहाज़ा तुम्हारी बेगम पर हिन्दुस्तान के मर्द नज़रे बद नहीं कर सकते. लिहाज़ा ब क़ौले थानवी साहब **''मैंने लिख दिया कि आपके लिये इजाज़त है, जो क़ैद है इस इजाज़त में वोह इस क़दर अहम और सख़्त है कि इसका हर शख़्स को मयस्सर आना क़रीब मुहाल के है या'नी येह कि वोह क़ौम फातेह हो''**. या'नी थानवी साहब ने इजाज़त तो दे दी लैकिन इजाज़त देते हुए अंग्रेज़ क़ौम की अहम्मियत व ख़ुसूसियत भी वाज़ेह फरमा दी कि तुम ख़ुश नसीब हो. इस्लाम क़बूल करने की वजह से नहीं बल्कि अंग्रेज़ क़ौम से तुम्हारा अस्ली नस्ब है. वैसे तो हिन्दुस्तान के मुस्लिम बाशिन्दे भी इस्लाम के पैरो हैं लैकिन जो शरफ तुम्हें मयस्सर है, वोह हमारे नसीब में कहाँ ? तुम्हारे सामने हमारी हैसियत ही क्या है ? हम ठहरे सिर्फ हिन्दुस्तानी मुसलमान और तुम हो लन्दन के मुसलमान. हमारी क्या मजाल कि हम तुम्हारी मेम की तरफ नज़रे बद करें. तुम फातेह और हम मफ्तूह. और तुम्हारी औरतों को हमारे सामने बे पर्दा आने की जो इजाज़त हमने मर्हमत फरमाई है, उसमें जो क़ैद या'नी शर्त (Condition) है, या'नी क़ौम का फातेह होना वोह तो सिर्फ आपका ही ख़ास्सा है. आम तौर से येह शरफ और ख़ुसूसियत हर शख़्स को मयस्सर होना मुहाल है.

क़ारईने किराम ! गौर फरमाएँ कि क़ुरआने मजीद की साफ आयत या'नी नस्से क़त्ई से पर्दे की फर्ज़ियत साबित है और इसकी फर्ज़ियत थानवी साहब मानते हुए भी अपने बातिल और फासिद क़यास से फातेह क़ौम और मफ्तूह क़ौम के मन्तिक़ में उल्झा रहे हैं. अगर थानवी साहब ने पर्दे के तअल्लुक़ से जो नई अस्ल बनाई है, उसको इख़्तियार किया गया, तो शरीअत के क़ानून में बडी गडबडी पैदा होगी, मिसाल के तौर पर:

(1) ईरान और इराक़ नाम के दो मुल्कों में जंग हुई. इस जंग में इराक़ को फत्ह हासिल हुई और ईरान की शिकस्त हुई. लिहाज़ा इराक़ की क़ौम फातेह और ईरान की क़ौम मफ्तूह हुई. लिहाज़ा थानवी साहब के ख़ुदसाख़्ता नए क़ानून के मुताबिक़ अब इराक़ की औरतों को ईरान के मर्दों के सामने बे पर्दा आने की इजाज़त हासिल हो गई.

(2) किसी गाँव में पठान और शैख़ क़ौम मे झगड़ा हो गया और इस झगड़े में पठान क़ौम को फत्ह और शैख़ क़ौम को शिकस्त हासिल हुई. लिहाज़ा पठान क़ौम फातेह हुई और शैख़ क़ौम मफ्तूह हुई. लिहाज़ा थानवी साहब के क़ौल के मुताबिक़ पठान क़ौम की औरतें शैख़ क़ौम के मर्दों के सामने बे पर्दा आ सकती हैं.

(3) फातेह क़ौम की ख़वातीन मफ्तूह क़ौम के मर्दों के सामने बे पर्दा आ सकती हैं. येह नया क़ानून थानवी साहब ने क़ुरआन की किसी आयत या किस हदीस से इस्तिदलाल किया है ? या फिक़्ह की कौन सी मो'तमद व मुस्तनद किताब से जुज़्इया अख़्ज़ किया है ? इस सवाल का जवाब थानवी साहब के मो'तक़िदीन व मुतवस्सिलीन इन्शाअल्लाह क़यामत तक न दे सकेंगे. बल्कि थानवी साहब का ख़ुदसाख़्ता येह नया क़ानून सरासर क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ है, इस हक़ीक़त को हर

मो'मिन आसानी से समझ सकता है. अल हासिल !

थानवी साहब अपने आपको "**मुजद्दिद**" समझने की गलत फहमी में बल्कि मुजद्दिद से भी दो क़दम आगे "**मुजतहिद**" होने के गुमान में अपनी ख़र दिमागी की ईजाद और मुल्हिदाना ज़हनियत की वजह से शरीअते मुतह्हरा के कसीरुत्ता'दाद अटल और मुस्तहकम क़वानीन में चोंच मारकर गाहे गाहे चौंदलापन का मुज़ाहेरा करने की आदते बद से मजबूर थे. बल्कि यहाँ तक कहने में भी कोई मुबालगा नहीं कि थानवी साहब अपने आपको साहिबे शरीअत गरदान ने के वहम में मुबतला थे. इसी लिये तो शरीअत के अटल क़वानीन में अपनी मरज़ी से रद्दो बदल करते थे. हैरत की बात तो येह है कि शरीअत के राइज अटल क़वानीन में तरमीम और तगय्युर व तबद्दुल को थानवी साहब "**मिन जानिबिल्लाह**" या'नी "**अल्लाह की तरफ से**" साबित करने की भी सई ला हासिल करते थे.

लन्दन से मुलाक़ात के लिये थाना भवन आने वाले "**नौ मुस्लिम**" की बेगम को बे पर्दा आने की इजाज़त देने के मआमले में थानवी साहब ने अपनी इस मज़्मूम हरकत को भी अल्लाह की तरफ से साबित करने के लिये यहाँ तक कि फरमाया कि "**अल्लाह ने मदद फरमाई और दिल में डाला.**" वाह साहब ! वाह ! क़ुरआन और हदीस के मुक़द्दस अहकाम की खुल्लम खुल्ला मुख़ालफत और ख़िलाफ वर्ज़ी की बात को मुनासिब और मौज़ूं साबित करने के लिये कैसी धोके बाज़ी और फरेबकारी का जाल बिछा रहे हैं. बल्कि बे शुमार फित्नों का दरवाज़ा खोल रहे हैं. अगर थानवी साहब की ख़िलाफे शरीअत बात को सिर्फ इस लिये तस्लीम कर लिया जाए कि "**अल्लाह ने मदद फरमाई और दिल में डाला.**" तो फिर हर शख़्स इसी तरह ढूँढ करके

शरीअत के किसी भी क़ानून की ख़िलाफ वर्ज़ी करने के लिये थानवी साहब की तरह यही बहाना पैश करेगा कि **''अल्लाह ने मदद फरमाई और दिल में डाला.''** नतीजा येह होगा कि शरीअत के अटल क़वानीन की कोई अहम्मियत व हैसियत ही बाक़ी न रहेगी. क़ानूने शरीअत की लाखों किताबें बे मानी और बे मस्रफ हो कर सिर्फ अल्मारियों की ज़ीनत बन कर रह जाएँगी. हर मस्अला हर कसो नाकस यही कह कर हल करेगा कि इस मस्अले का शरीअत में जो भी हुक्म है, जो चाहे हो, लैकिन इस मस्अले में मेरा अमल येह होगा क्यूँ कि इस तरह अमल करने के मआमले में **''अल्लाह ने मेरी मदद फरमाई और दिल में येह बात डाल दी''**. थानवी साहब को **''हकीमुल उम्मत''** और **''मुजद्दिद''** के लकब से मुलक्क़ब करने वाला गिरोह इन्साफ और गैर जानिब दाराना रवैया इख़्तियार फरमा कर फैसला करें कि थानवी साहब दीने इस्लाम की तज्दीद करते थे या तज़्लील ? इस्लामी क़वानीन की तहकीम करते थे या तज़्हीक ?

''चोरी और सीना ज़ोरी'' का वस्फ थानवी साहब की अदाए ख़ास थी. तजुरबे से साबित है कि रज़ील और औबाश तबीअत के लोगों में कमीनापन के साथ साथ बे हयाई और बे शर्मी भी भरपूर होती है. ऐसे लोग अपनी किसी ना ज़ैबा हरकत पर नादिम और शर्मिन्दा होने के बजाए और इतराते हैं और अपनी मज़्मूम हरकत पर फख़्र करते हैं, बल्कि होशयारी समझ कर शैख़ी मारते हुए दूसरों के सामने फख़्रिया बयान करते हैं. लन्दन के नौ मुस्लिम की बेगम को बे पर्दा आने की इजाज़त मर्हमत फरमाने के वाक़िए में थानवी साहब शरीअत की ख़िलाफ वर्ज़ी के इर्तिकाब पर नादिम होने के बजाए शैख़ी मारते हुए फरमाते हैं कि **''येह सवाल और जगह जाता तो न मा'लूम उस की क्या गत बनती''** बेशक ! सच फरमाया थानवी साहब ने आपके अलावा किसी और में ऐसी हिम्मत ही कहाँ जो क़ुरआनो हदीस के हुक्म के ख़िलाफ इस तरह बेबाक और आवारा हो कर ऐसा बेहूदा जवाब दे सके. हर मौलवी आप जैसी मुल्हिदाना ज़हनियत का हामिल कहाँ ? जो अपने फासिद तख़य्युलात को क़ुरआनो हदीस के हुक्म पर तरजीह देने की जुरअत कर सके. अपने आपको **''साहिबे शरीअत''** समझने के वहम व ज़न में इस तरह के ख़िलाफे शरअ हुक्म जारी करना और किसी के बस में कहाँ ? किस में इतनी हिम्मत है जो क़ुरआनो हदीस के ख़िलाफ इस तरह के फासिद क़यास पर अमल करे ? वाह साहब ! वाह ! इसी को कहते हैं **''बे हयाई का जामा पहनना''**. अपनी बे सुरत व बे शऊर बात पर नदामत और पशेमानी का मुज़ाहेरा करना तो दूर की बात रही, उल्टा बेनंगो नामूस बनकर इतराना और नाज़ां होना, अपने औबाशी का सुबूत देने के मुतरादिफ है. थानवी साहब का जुम्ला **''येह सवाल और जगह जाता तो न मा'लूम इस की क्या गत बनती''** से सरासर गुरूर और तकब्बुर ही टपकता है. और जगह तो इस सवाल का सहीह जवाब मिलता कि इस्लाम में बे पर्दगी की इजाज़त नहीं लैकिन आपने ही इस सवाल की **''गत बिगाड कर रख दी.''** आपकी **''मत''** ऐसी बिगडी हुई है कि इस्लामी अहकाम की **''गत''** बिगाड कर उसे मस्ख़ करने की आपको **''लत''** लगी हुई है. बल्कि यूँ कहिये कि आपकी अक़्ल पर पर्दे पड गए हैं.

इस मौक़े पर अकबर इलाहाबादी का वोह वाक़ेआ और शे'र याद आ गया कि एक मरतबा अकबर ने चन्द मुस्लिम ख़वातीन को बर सरे आम घूमती हुई देख कर उनकी बे पर्दगी का सबब पूछा तो उन ख़वातीन ने जो जवाब दिया उस को अकबर इलाहाबादी ने इस तरह

क़लमबन्द किया है:

बे पर्दा कल जो आईं नज़र चन्द बीबियां
अकबर ज़मीं में गैरते क़ौमी से गड गया
पूछा जो उनसे आपका पर्दा कहाँ गया
बोलीं कि वोह तो अक़्ल पे मर्दों की पड गया

लैकिन थानवी साहब ने लन्दन की नौ मुस्लिम ख़ातून को बे पर्दा आने की इजाज़त देने पर मुनासिब हो गया कि अकबर इलाहाबादी के मुन्दरजए बाला क़त्ए के आख़री बन्द **''बोलीं कि वोह तो अक़्ल पे मर्दों की पड गया''** की तरमीम करते हुए, इस बन्द को इस तरह लिखा जाए कि **''बोलीं कि वोह तो अक़्ल पे थानवी की पड गया''** क्यूँ कि...

थानवी साहब ने एक ना मुम्किन और ना मरबूत बात कह दी कि **''मफ्तूह क़ौम के मर्द फातेह क़ौम की औरतों पर नज़रे बद नहीं करते.''** येह बिल्कुल ना मुम्किन बात है. अगर मान भी लो कि लन्दन वाले फातेह क़ौम हैं और हिन्दुस्तान वाले मफ्तूह क़ौम है तो क्या हिन्दुस्तान में बसने वाले करोडों मर्दों की नज़रों पर थानवी साहब रोक लगा सकते हैं कि वोह लन्दन से तशरीफ लाने वाली हुस्न की परी और नज़ाकत की पुतली की तरफ नज़र उठा कर भी न देंखे. और अगर किसी दिल फेंक आशिक़ ने शौख़ नज़रों से देख लिया, तो उसका ज़िम्मेदार कौन होगा ? फातेह और मफ्तूह क़ौम का तुर्रए इम्तियाज़ हबाअम मन्सूरा हो कर हवा में उड जाएगा.

वज़ीर ज़ादी को बे पर्दा आने दो मैं अपनी आँखें नीची रखूँगा

एक वाक़ेआ थानवी साहब की सवानेह हयात में इस तरह का भी मौजूद है कि एक बडी रियासत की वज़ीर ज़ादी ने थानवी साहब की छोटी बेगम के तवस्सुत से थानवी साहब से बे पर्दा सामने आने की इजाज़त माँगी. इजाज़त माँगने वाली ख़ातून मालदार ख़ानदान की थी लिहाज़ा शरीअत का हुक्म बता कर मिलने का इन्कार करने की थानवी साहब हिम्मत न कर सके और येह कह कर इजाज़त दी कि अगर कुछ कहना सुनना न हो तो इजाज़त है, मैं अपनी आँखें नीची रखूँगा.

اسی طرح ایک بڑی ریاست کی وزیر زادی صاحبہ اپنے شوہر کے ساتھ خود تھانہ بھون حاضر خدمت ہوئیں، انھوں نے بھی بے پردہ سامنے آنا چاہا، اور چھوٹی پیرانی صاحبہ کے ذریعہ سے اس کی اجازت چاہی، حضرت والا نے صریح انکار کرنا تو مصلحت کے خلاف سمجھا، کیوں کہ آزاد لوگوں کے سامنے اگر حکم شرعی بتایا جاتا ہے، تو وہ اس کی بے قدری کرتے ہیں اور ان کے جی کو نہیں لگتا، بلکہ شریعت کا نام سن کر عجب نہیں کہ شریعت کے متعلق کچھ طعن یا استخفاف کا کلمہ کہہ بیٹھیں۔ اس لیے نہایت لطیف تدبیر کی، فرمایا کہ اگر ان کو کچھ کہنا سننا نہ ہو تو خیر اجازت ہے، کیوں کہ حضرت والا کو قرائن سے معلوم تھا کہ کہنا سننا ضرور ہے، اس لیے سامنے نہ آویں گی، نیز اس جواب میں یہ سوچا کہ میں خود اپنی آنکھیں نیچی رکھوں گا، پھر میرا کیا حرج ہے؟ لیکن انھوں نے کہا کہ نہیں حضرت، مجھے تو کچھ عرض بھی کرنا ہے، اس پر فرمایا کہ یہ میری طبعی بات ہے کہ میں کسی عورت سے دوبدو گفتگو کرتے ہوئے شرماتا ہوں، اگر تم مجھ سے چہرہ کھول کر گفتگو کروگی، تو میں گفتگو کر ہی نہ سکوں گا، میں اپنی طبیعت سے مجبور ہوں، لہٰذا اگر گفتگو کرنی ہے، تو پردہ کی آڑ سے کرو، چنانچہ مجبوراً انھیں اسی پر راضی ہونا پڑا۔

اشرف السوانح، مصنف: خواجہ عزیز الحسن غوری، جلد ١، ص ١٠٥، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ تھانہ بھون، ضلع: مظفرنگر (یوپی)

हिन्दी अनुवाद

इसी तरह बडी रियासत की वज़ीरज़ादी साहिबा अपने शौहर के साथ ख़ुद थाना भवन हाज़िरे ख़िदमत हुईं. उन्होंने भी बे पर्दा सामने आना चाहा और छोटी पीरानी साहिबा के ज़रीए से इसकी इजाज़त चाही. हज़रते वाला ने सरीह इन्कार करना तो मस्लेहत के ख़िलाफ समझा, क्यूँ कि आज़ाद लोगों के सामने अगर हुक्मे शरअ बताया जाता है तो वोह उसकी बे क़दरी करते हैं और उनके जी को नहीं लगता, बल्कि शरीअत का नाम सुनकर अजब नहीं कि शरीअत के मुतअल्लिक़ कुछ तअन या इस्तिख़्फ़ाफ का कलमा कह बैठे. इस लिये निहायत लतीफ तदबीर की, फरमाया कि अगर उनको कुछ कहना सुनना न हो तो ख़ैर इजाज़त है, क्यूँ कि हज़रते वाला को कराइन से मा'लूम था कि कहना सुनना ज़रूरी है, इस लिये सामने न आएँगी. नीज़ इस जवाब में येह सोचा कि मैं ख़ुद अपनी आँखें नीची रखूँगा फिर मेरा क्या हरज है ? लैकिन उन्होंने कहा कि नहीं हज़रत मुझे तो कुछ अर्ज़ करना है, इस पर फरमाया कि येह मेरी

तबई बात है कि अगर मैं किसी औरत से दू ब दू गुफ्तगू करते हुए शरमाता हूँ, अगर तुम मुझ से चहरा खोल कर गुफ्तगू करोगी, तो मैं गुफ्तगू कर ही न सकूँगा मैं अपनी तबीअत से मजबूर हूँ, लिहाज़ा अगर गुफ्तगू करनी है तो पर्दे की आड से करो, चुनान्चे मजबूरन उन्हें इसी पर राज़ी होना पडा.

: हवाला :

अशरफुस्सवानेह, मुसन्निफ़ः ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन गोरी, जिल्द 1, सफहा 105, नाशिरः मक्तबए तालीफाते अशरफिया थाना भवन, ज़िला मुज़फ्फरनगर (यू.पी)

"अगर ज़रूरत समझो तो रिश्वत ले लो, इजाज़त है"

रिश्वत एक ऐसा गुनाह है, जो इसके करने वाले को शरई गुनाह होने की वजह से अज़ाब व इताब का नुक़्सान पहुँचाने के साथ साथ समाज और मुल्क को भी अज़ीम नुक़्सान पहुँचाता है. इस्लाम में रिश्वत की सख़्त हुर्मत वारिद है. क़ुरआन व हदीस से इसका हराम होना साबित है. क़ुरआने मजीद में इर्शादे बारी तआला है कि:

आयत :

وَتَرٰی کَثِیۡرًا مِّنۡہُمۡ یُسَارِعُوۡنَ فِی الۡاِثۡمِ وَ الۡعُدۡوَانِ وَ اَکۡلِہِمُ السُّحۡتَ ط لَبِئۡسَ مَا کَانُوۡا یَعۡمَلُوۡنَ

(पारह 6, सूरए माइदह, आयत:62)

तर्जमा :

''और उनमें तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती और हरामख़ोरी पर दौडते हैं, बेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं.'' (कन्ज़ुल ईमान)

तफसीर : ''और हरामख़ोरी से रिश्वतें वगैरा मुरादें हैं (ख़ाज़िन)''

(हवाला: तफ्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफान, सफहा:189)

हदीस :

हुज़ूरे अक्दस, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रिश्वते लेने, रिश्वते देने और रिश्वत का मआमला तय कराने वाले दलाल की मज़म्मत और तौबीख़ फरमाते हुए इर्शाद फरमाते हैं.

''لَعَنَ اللّٰہُ الرَّاشِیَ وَ الۡمُرۡتَشِیَ وَ الرَّائِشَ الَّذِیۡ یَمۡشِیۡ بَیۡنَہُمَا''

(हवाला: मुस्नदे इमाम अहमद, तर्जमा: हज़रत सौबान रदियल्लाहु तआला अन्हु, नाशिर:दारुल फिक्र, बैरूत, लबनान, जिल्द:5, सफ्हा:470)

तर्जमा :

''अल्लाह की ला'नत रिश्वत देने वाले और लेने वाले और

उनके दलाल पर''

(माख़ूज़ अज़: फतावा रज़विया (मुतर्जिम) जिल्द:18, सफ्हा:470)

हदीस : हुज़ूरे अक्दस, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि

''اَلرَّاشِیۡ وَ الۡمُرۡتَشِیۡ کِلَاھُمَا فِی النَّارِ''

(हवाला: कन्ज़ुल उम्माल, अल फस्लुस्सालिस फिल हदिया वर्रिश्वह, नाशिर:मुअस्ससतुर्रिसालह, बैरूत, जिल्द:6, सफ्हा:113)

तर्जमा : ''रिश्वत लेने वाला और देने वाला दोनों दोज़ख़ी हैं.''

(माख़ूज़ अज़ : फतावा रज़विया (मुतर्जिम), जिल्द:6, सफ्हा:551)

अल मुख़्तसर ! रिश्वत एक ऐसा घिनौना जुर्म है कि जिसको मज़हब और कोई भी मुल्क रवाँ नहीं रखता. रिश्वत की वजह से मुल्क का क़ानून तहस नहस हो जाता है और जराइम को तक़वियत मिलती है. नतीजतन गुनाह की मिक्दार में काफी इज़ाफा होता है और सँगीन गुनाह करने वाले ख़तरनाक मुजरिम रिश्वत के तुफैल बेक़ुसूर साबित होकर सज़ा पाने से नजात हासिल कर लेते हैं. लैकिन वहाबी, देवबन्दी और तबलीगी जमाअत के नाम निहाद मुजद्दिद और हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली साहब थानवी रिश्वत जैसे सख़्त गुनाह की अपनी तक़रीर में इजाज़त देते हैं. हवाला पेशे ख़िदमत है:

میں نے ایک جگہ بیان کیا تھا کہ رشوت لینا گناہ ہے۔ خیر اگر کم ہمتی سے ضرورت ہی سمجھتے ہو تو لو، مگر بُرا تو سمجھو اور اکلِ حلال کی فکر کرو۔ کوشش میں رہو، اس پر بعضوں نے کہا کہ یہ کیسے مولوی ہیں جو رشوت کی اجازت دیتے ہیں۔ یہ حال رہ گیا ہے اس زمانہ میں فہم کا۔ اسیوجہ سے میں فتوی نہیں دیتا، ایک رائے بیان کردی، جو میرے نزدیک تھی، فقط۔

حسن العزیز (تھانوی صاحب کے ملفوظات کا مجموعہ) مرتب: مولوی محمد یوسف بجنوری، جلد۳، حصہ۳، قسط۱۴، ص ۱۵۸، مسلسل صفحہ ۶۳۸، ناشر: مکتبہ تالیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفرنگر (یوپی)

हिन्दी अनुवाद

मैंने एक जगह बयान किया था कि रिश्वत लेना गुनाह है. ख़ैर अगर कम हिम्मती से ज़रूरत ही समझते हो तो लो, मगर बुरा तो समझो और अक्ले हलाल की फिक्र करो. कोशिश में रहो, इस पर बाज़ों ने कहा कि येह कैसे मौलवी हैं जो रिश्वत की इजाज़त देते हैं. येह हाल रह गया है इस ज़माने में फहम का. इसी वजह से में फत्वा नहीं देता, एक राए बयान करदी, जो मेरे नज़्दीक थी, फक़त.

: हवाला :

हुस्नुल अज़ीज़ (थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का

मजमूआ) मुरत्तिबः मौलवी मुहम्मद यूसुफ बिजनौरी, जिल्द 3, हिस्सा 3, क़िस्त 14, स.158, मुसल्सल सफ्हा 638, नाशिरः मकतबए तालिफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िलाः मुज़फ्फर नगर (यू.पी)

मुन्दरजए बाला इबारत को ब नज़रे अमीक़ पढें और फिर हस्बे ज़ैल तबसेरा मुलाहेज़ा फरमाएँ :

(1) थानवी साहब ने किसी मजलिसे ख़ास में या अपने चन्द अहबाब के सामने निजी महफिल में नहीं बल्कि बर सरे आम अपने वअज़ में अवामुल मुस्लिमीन के सामने येह बात कही है. ख़ुद थानवी साहब फरमाते हैं ''**मैंने एक जगह बयान किया था**'' या'नी किसी मक़ाम पर दौराने तक़रीर थानवी साहब ने कहा था.

(2) क्या कहा था ? पहले तो रिश्वत लेना गुनाह बताया. रिश्वत को गुनाह बताए बगैर कोई चारा भी न था. क्यूँ कि क़ुरआन व हदीस से रिश्वत का गुनाह होना साबित है. हर समाज, हर मुल्क और हर मज़्हब रिश्वत लेना गुनाह समझता है और रिश्वत लेने पर पकडे जाने वाले को सख़्त से सख़्त सज़ा देने के क़वानीन हर मुल्क में नाफिज़ हैं. लिहाज़ा थानवी साहब में इतनी हिम्मत न थी कि वोह खुल्लम खुल्ला बयान करें कि रिश्वत लेना गुनाह नहीं. अलबत्ता ! गुनाह के इस मज़्मूम काम को रोकने के बजाए बन्द लफ्ज़ों में इजाज़त देते हैं और रिश्वत लेने के लिये बहाना बताते हैं किः

(3) ''**ख़ैर- अगर कम हिम्मती से ज़रूरत ही समझते हो तो लो.**'' क़ारइने किराम गौर फरमाएँ कि इस जुम्ले कि इब्तिदा में थानवी

साहब लफ्ज़े "**ख़ैर**" का इस्तमाल कर रहे हैं. इस जुम्ले के पहले का जुम्ला "**रिश्वत लेना गुनाह है**" का है. या'नी थानवी साहब रिश्वत लेने को गुनाह कहने के बाद फौरन लफ्ज़ "**ख़ैर**" का इस्तमाल करके येह कहना चाहते हैं कि रिश्वत का गुनाह होना मुसल्लम है. इसके जाइज़ होने की बज़ाहिर कोई सूरत नहीं. रिश्वत के जाइज़ होने या गुनाह न होने की उम्मीद नहीं. इस उम्मीद से मायूस हो चुके हैं और मायूसी का इज़्हार करने के लिये अक्सर लफ्ज़ "**ख़ैर**" इस्तमाल होता है. लैकिन थानवी साहब बिल्कुल मायूस हो कर बे दीनी के मआमले में पीछे हटने वालों में से नहीं थे. बल्कि शरीअत के अटल क़ानून तोडने वाले गिरोह में सब से आगे चलने वालों में से थे. रिश्वत लेना इस्लामी क़ानून में चाहे गुनाह हो, मगर थानवी साहब हर गुनाह को मुनासिब साबित करके इसके इरतिकाब की सबील ढूँढ निकालने में महारते ताम्मा रखते थे. रिश्वत को गुनाह कहने के फौरन बाद इसको ले लेने को मुनासिब बताने के लिये थानवी साहब कैसी फरेबकारी और मक्कारी सिखाते हैं कि :

(4) "**अगर कम हिम्मती से ज़रूरत ही समझते हो, तो लो**" या'नी अगर रिश्वत लेने से इन्कार करने की तुम्हारे अन्दर हिम्मत नहीं. ऐसे कम हिम्मत हो कि रिश्वत की नौटों की गड्डी देख कर मुँह में पानी भर गया और इतनी हिम्मत नहीं कि ठुकरा दो, बल्कि ज़रूरत महसूस करते हो. बीवी के लिये सोने के ज़ेवर ख़रीदने हैं. बच्चों की स्कूल की फीस अदा करनी है. मकान को रंग व रोगन करा कर चमकाना है. ऐसी तो बहोत सारी ज़रूरियात हैं. तो जनाब ! डरो मत ! रिश्वत ले लो ! वाह थानवी साहब वाह ! गुनाह का दरवाज़ा कितनी आसानी से खोल दिया. रिश्वत लेने के लिये थानवी साहब ने दो (2) वजह बताई हैं (1) अगर

कम हिम्मती हो और (2) ज़रूरत हो. अगर येह दो (2) सबब (Reason) हैं, तो थानवी साहब रिश्वत लेने के तअल्लुक़ से फरमाते हैं कि "**ले लो.**" आज के पुर फितन दौर में शायद ही अल्लाह का ऐसा दयानतदार बन्दा मिलेगा, जिस में रिश्वत की रक़म को ठुकरा ने की हिम्मत और हौसला हो. बल्कि आज कै दौर में अच्छे अच्छों को रिश्वत लेने के मआमले में पिगलते और फिसलते देखा जाता है. बल्कि शायद व बायद ही ऐसा कोई मो'मिन मर्दे मुजाहिद मिलेगा जो नाजाइज़ और हराम की कमाई की रक़म को पाऊँ की ठोकर मारने का हौसला और हिम्मत रखता हो. जिसको देखो वोह रिश्वत लेने के फन्दे और चक्कर में फँसा पडा हैं. सब के सब रिश्वत की हसीन ज़ुल्फों के असीर हैं. ऐसी "**कम हिम्मती**" के माहौल में इस्लाम के अटल क़ानून और उसूल पर मज़बूती से क़ाइम रहना और शरीअते मुतहर्रा की पाबन्दी में साबित क़दम रहना, एक सच्चे मो'मिन की शान है. लैकिन थानवी साहब रिश्वत जैसे मोहलिक जुर्म को जो नासूर बन कर समाज, सोसाइटी, मुल्क, क़ानून, तहज़ीब, अख़्लाक़, अम्नो अमान, और दयानतदारी को तबाह और बरबाद करदे, ऐसे जुर्म की कितनी आसानी से इजाज़त इनायत फरमा रहे हैं. और वोह भी सिर्फ "**कम हिम्मती**" की वजह से.

(5) अगर थानवी साहब के "**कम हिम्मती**" के हीले और बहाने को रवा रख कर रिश्वत लेना मुनासिब क़रार दिया जाए, तो येह "**कम हिम्मती**" का बहाना और सबब सिर्फ रिश्वत लेने तक ही महदूद न रहेगा बल्कि हर शख़्स मआज़ल्लाह कम हिम्मती का बहाना आगे करके ज़िना, शराब नोशी और दिगर गुनाह के इर्तिकाब को मुनासिब क़रार देने की जुरअत करेगा. हसीन लड़की ने अपना ख़ूब सूरत जिस्म हवाले कर दिया और इन्कार करने की हिम्मत न थी लिहाज़ा ज़िना कर दिया

या अंग्रेज़ी शराब की क़ीमती और नायाब बोतल दोस्त ने खोली और पियाली में भर कर पैश की और इन्कार करने की हिम्मत न थी लिहाज़ा कम हिम्मती से पी गया. ऐसे तो कई जराइम आम हो जाएँगे. और येह सब वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के जाहिल नाम निहाद मुजद्दिद थानवी साहब की बदौलत और तुफ़ैल में आम होंगे. पता नहीं थानवी साहब की क्या **"मत"** मर गई थी कि वोह ऐसे हराम काम की जिसका हराम होना कुरआनो हदीस से साबित हो, इन हराम काम करने की सिर्फ **"कम हिम्मती"** के बहाने से इजाज़त दे रहे हैं. थानवी साहब इस्लामी क़वानीन की हिफाज़त और तजदीद के लिये मुजद्दिद बनकर तशरीफ नहीं लाए थे बल्कि इस्लामी क़वानीन की तज़लील और तहलीक करने वाले **"मुजद्दिदुज़्ज़लालात"** या'नी **"गुमराही के मुजद्दिद"** ज़रूर थे.

(6) रिश्वत लेने के लिये थानवी साहब ने दूसरी वजह **"ज़रूरत ही समझते हो"** बताई है. या'नी बडी बे हयाई और बे शर्मी से शरीअते मुतह्हरा के क़ानून की धज्जियां उडाई हैं. वाह साहब ! वाह ! गुनाह का दरवाज़ा कितनी आसानी से खोल दिया. **"ज़रूरत हो"** का आसान बहाना ढूँढ निकाला. चोरी करने वाला यही बहाना पेश करेगा कि यार ! क्या करूँ ! ज़रूरत ऐसी पड गई कि चोरी करनी पडी. मकान का पांच महीने का किराया अदा करना था, क़र्ज़दारों ने शिद्दत से तक़ाज़े शुरू कर दिये थे, घर में खाने पीने की अश्या ख़त्म थीं, बीवी रोज़ सुबह बेदार होते ही याद दिलाती थी कि घर में आटा नहीं, तेल नहीं, चावल नहीं वगैरा. ज़ेब में दस रूपिये तक नहीं थे. ज़रूरियात ने चारों तरफ से घेर लिया था. क्या करूँ और क्या न करूँ ? समझ में नहीं आता था कि क्या तरीक़ा अपनाऊँ. भला हो थानवी साहब का कि उन्होंने **"ज़रूरत ही समझते हो तो, रिश्वत ले लो"** फरमा कर जब रिश्वत लेने की इजाज़त इनायत फरमादी है, तो रिश्वत भी गुनाह है और चोरी भी गुनाह है. जब ज़रूरत हो तो बक़ौले थानवी साहब रिश्वत ले सकते हैं, तो ज़रूरत हो तो चोरी भी कर सकते हैं. लिहाज़ा पडौस वाले हाजी साहब बीवी बच्चों के साथ उमरा करने गए हुए थे. मकान बन्द पडा था रात में इत्मिनान से ताला तोड कर अन्दर घुस गया, और चोरी कर ली. मैंने चोरी सिर्फ और सिर्फ **"ज़रूरत ही समझते हुए"** की है. वरना मैं भी एक शरीफ और नेक आदमी हूँ. भला हो, थानवी साहब का कि उन्होंने **"ज़रूरत हो तो"** की वजह बता कर हमारी मुसीबत आसान कर दी.

सिर्फ चोरी करने वाला ही नहीं बल्कि हर डकैत, पाकिटमार, जेब काटने वाला, धोका और फरेब दे कर किसीका माल हासिल करने वाला हर मुजरिम यही बहाना पेश करेगा कि येह काम मैंने **"ज़रूरत ही समझते हुए"** किया है.

(7) लगता है कि थानवी साहब ने **"बे हयाई का जामा पहन रखा था."** ऐसे बे हया लोगों की एक फितरत येह भी होती है कि अपने किसी बे हयाई के काम पर शर्मिन्दा और नादिम होने के बजाए अपने बे हयाई के काम को मतानत, सन्जीदगी, और तहज़ीब में शुमार करते हैं और अपने इस फे'ल पर ए'तराज़ करने वाले को बे हया, बे वक़ूफ, कम फहम, और ना सन्जीदा बताते हैं. थानवी साहब ने बर सरे आम अपने वाअज़ में कम हिम्मती और ज़रूरत की बिना पर रिश्वत ले लेने को कहा. थानवी साहब की येह बात अवामुल मुस्लिमीन के लिये ना क़ाबिले क़बूल थी. बचपन से अभी तक यही सुनते आए थे कि रिश्वत हराम है. लैकिन येह मौलवी साहब हैं कि सिर्फ ज़रूरत की वजह से रिश्वत लेने की अपने बयान में इजाज़त देते हैं. जब थानवी साहब को

मा'लूम हुवा कि मेरी तक़रीर पर लोग ए'तराज़ करते हैं. तो थानवी साहब पर लाज़िम था कि वोह अवाम की नुक्ताचीनी और अवाम में फैलने वाली गलत फहमी का माकूल जवाब देते और अपनी बात के मुनासिब होने के सबूत में कुरआन व हदीस से कोई दलील पेश करते और अवाम को मुत्मइन करते लैकिन थानवी साहब ने ऐसा कोई भी मुसबत पहलू इख़्तियार न किया बल्कि अपनी बे हूदा बात पर तकब्बुर और तफाख़ुर करते हुए और वाक़ई मुनासिब तन्क़ीद करने वालों को ना फहम क़रार देते हैं. ख़ुद थानवी साहब ने ही ए'तराफ करते हुए कहा कि **''इस पर बाज़ों ने कहा कि येह कैसे मौलवी हैं जो रिश्वत की इजाज़त देते हैं, येह हाल रह गया है इस ज़माने में फहम का''** या'नी थानवी साहब की इनायत फरमूदा रिश्वत खोरी की इजाज़त पर दीन का शऊर रखने वाले बाज़ हज़रात ने तअज्जुब और हैरत का इज़्हार किया कि ऐसी अनसूनी और ख़िलाफे शरीअत बात करने वाला ऐसा कौन सा मौलवी है ? इस पर थानवी साहब ने उन लोगों की तज़्लील व तहकीर करते हुए फरमाया कि **''येह हाल रह गया है, इस ज़माने में फहम का''** या'नी मुझ पर ए'तराज़ करने वालों में फहम, समझ, अक्ल, शऊर और वकूफ नहीं, इसी लिये मुझ जैसे अज़ीमुश्शान आलिम पर ए'तराज़ कर रहे हैं. अल मुख़्तसर ! थानवी साहब इन मोअतरिज़ीन को नासमझ, ना फहम, बे अक्ल और बे वकूफ कह रहे हैं कि इन में अक्ल व फहम नहीं, इसी लिये येह मुझ पर ए'तराज़ करते हैं. **''उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे''** वाली मिस्ल के थानवी साहब कामिल मिस्दाक़ बन रहे हैं. येह तो ऐसी बात हुई कि किसी शहर के ख़ास और बडे बाज़ार में कोई शख़्स मादरज़ाद उर्या या'नी बिल्कुल नंगा आए और उसकी इस ना ज़ेबा और बे हयाई की हरकत को तअज्जुब भरी नज़रों

से देखने वाले मुहज़्ज़ब हज़रात के मुतअल्लिक़ वोह नंगा येह कहे कि इस शहर के लोग बड़े बेहया और बे शर्म हैं. मैं नंगा हो कर निकला, तो बे हया लोग मुझ को देखते हैं.

वाह साहब ! वाह ! ख़ुद नंगा हो बर सरे बाज़ार निकल कर बे हयाई का मुज़ाहेरा करने पर अपने आपको शर्मो हया का पुतला और देखने वालों को बे हया कहने वाले शख़्स के मुतअल्लिक़ यही कहा जाएगा कि जनाब की **अक्ल के तोते उड़ गए हैं.** यही हाल थानवी साहब का है कि रिश्वत की बर सरे आम इजाज़त दे कर ख़िलाफे शरीअत बात कहने की बे वकूफी करने पर नादिम होने के बजाए दूसरों को बे वकूफ कहने की मज़ीद बे वकूफी कर रहे हैं.

(8) थानवी साहब मोअ्तरिज़ हज़रात को ना फहम कहने के बाद अपनी **''ना फहमी''** का दिफा करते हुए आ'ला से आ'ला ना फहमी का मुज़ाहेरा करते हुए फरमाते हैं कि **''इसी वजह से मैं फत्वा नहीं देता, एक राय बयान करदी जो मेरे नज़दीक थी.''** इसी को कहते हैं **''नंगा सब से चँगा''**. बेहया शख़्स को किसी बात का लिहाज़ नहीं होता. वोह अपने आपको बडा अक्लमन्द और सलीक़ा शिआर समझता है. उस पर अपने आपको हद से ज़ियादा दाना होने का ख़ब्त सवार होता है और इसी ख़ब्त की वजह से वोह मज़ीद बे वकूफी का मुज़ाहेरा करता है. थानवी साहब ने भरी मजलिस में दौराने बयान रिश्वत लेने की इजाज़त दी और ए'तराज़ होने पर अपना दिफा करते हुए येह कहा कि मैं फत्वा नहीं देता, अपनी राय बयान कर दी. जिसका मतलब येह हुवा कि बतौरे फत्वा नहीं बल्कि ब तौरे ख़ुद की राय ख़िलाफे शरीअत बात वाअज़ की महफिल में कहने में कोई हरज नहीं. थानवी साहब की येह उल्टी मन्तिक़ पर अमल करते हुए कोई सरफिरा मौलवी जुम्आ के

दिन ख़ुत्बा से पहले बयान करे और भरी मस्जिद में दौराने तक़रीर येह कहे कि अगर बहोत ख़्वाहिश हो, तो शराब पी लो. उसकी इस बात पर लोग गिरफ्त करें कि क्या बकते हो ? और जवाब में वोह मौलवी येह कहे कि फत्वा नहीं दिया, मैंने अपनी राय बयान की है.

(9) "**हुस्नुल अज़ीज़**" की मुन्दरजए बाला और ज़ेरे बहस पूरी इबारत में सब से ज़ियादा ख़तरनाक जुम्ला थानवी साहब ने येह कहा है कि "**एक राय बयान कर दी, जो मेरे नज़दीक थी**". इस जुम्ले का साफ मतलब यही होता है कि थानवी साहब ने रिश्वत लेने की जो इजाज़त दी है, वोह अज़् रूए फत्वा ख़िलाफे शरीअत है. इसी लिये तो थानवी साहब सफाई दे रहे हैं कि रिश्वत लेने की मैंने जो इजाज़त दी है वोह अज़् रूए फत्वा थोडी दी है ? अरे येह इजाज़त तो मेरी अपनी ज़ाती राए की बिना पर दी है और येह राय चाहे इस्लाम के क़ानून के ख़िलाफ है, लैकिन मेरे नज़दीक मुनासिब है. थानवी साहब का "**मेरे नज़दीक**" कहना इस बात की दलील है कि थानवी साहब शरीअत के क़ानून के ख़िलाफ और शरीअत के अटल उसूल के मुक़ाबले में अपनी ज़ाती राय को अहम्मिय्यत दे कर क़ानूने शरीअत में दख़ल अन्दाज़ी बल्कि रख़ना अन्दाज़ी कर रहे हैं. "**मेरे नज़दीक**" का जुम्ला फरमा कर थानवी साहब दर पर्दा मुजद्दिदियत के मन्सब से भी आ'ला **दरजए इज्तिहाद** का दावा कर रहे हैं. जैसा कि इमामे आ'ज़म व इमामे शाफई व इमाम मालिक व इमाम अहमद बिन हम्बल के दरमियान फिक़्ही मसाइल में इख़्तिलाफात हैं. लिहाज़ा आम तौर से फुक़्हाए किराम, मुफ्तियाने इज़ाम और उलमाए ज़ी एहतराम कई फिक़्ही मसाइल में फरमाते हैं कि इस मस्अले में इमामे आ'ज़म के नज़दीक येह हुक्म है और इमामे शाफई के नज़दीक फलाँ हुक्म है. लैकिन इन अज़ीमुश्शान

अइम्मए इज़ाम ने कभी भी अपनी ज़ाती राय को दख़्ल नहीं दिया, बल्कि हर हर मस्अले के जवाज़ या अद्मे जवाज़ या दीगर हुक्म के मुतअल्लिक़ उन्होंने हमेशा क़ुरआनो हदीस की दलील पेश फरमाई है और क़ुरआनो हदीस की ही रोशनी में इज्तिहाद व इस्तिम्बात फरमाया है.

लैकिन थानवी साहब ने कई मसाइल में अपनी ज़ाती राय को दख़्ल दिया है. बल्कि क़ुरआनो हदीस के साफ और सरीह हुक्म के ख़िलाफ अपनी ज़ाती राय से काम लिया है. थानवी साहब दर पर्दा मुजतहिद व मुजद्दिद का दावा बडी दिलेरी और आसानी से करते हैं. मुजतहिदीने किराम की सफ में घुसने के लिये काफी **हाथ पाँव मारते हैं** लैकिन इल्म के मआमले में एक आम मौलवी जितनी भी सलाहियत नहीं रखते.

(10) "**मेरे नज़दीक**" कह कर थानवी साहब एक तीर से दो शिकार करते हैं. एक तो येह ख़ुद अपनी अज़्मतो शान बयान करते हैं कि या'नी कि येह बावर कराना चाहते हैं कि इल्म के मआमले में अब थानवी साहब ऐसे बुलन्द मक़ाम पर फाइज़ हैं कि उन को फिक़्ही मसाइल में "**मेरे नज़दीक**" कह कर मसाइल तय करने का हक़ हासिल है. दूसरे येह कि ख़िलाफे शरीअत बात बता कर शरई गिरफ्त से बचने की नाकाम कोशिश करते हैं. और इस कोशिश में वोह अपने आपको मज़ीद उल्झा रहे हैं. झूट के दलदल से बाहर निकलने के बजाए ज़ियादा फँस रहे हैं बल्कि मूरिदे ताअ्नो मलामत बनते हैं. मश्हूर मस्ल "**जाहिल फक़ीर शैतान का टट्टू**" में थोडी तरमीम करके "**जाहिल नाम निहाद मुजद्दिद इब्लीस का गधा**" थानवी साहब पर आसानी से चस्पाँ की जा सकती है. क्यूँ कि जब जाहिल के दिमाग में हवा भर जाती है, तो वोह शैतान का आलए

कार बनकर दीन में बडी गडबडी फैलाता है. दीन को फाइदा पहुँचाने के बजाए नुक़्सान पहुँचाता है. अवामुल मुस्लिमीन की इस्लाह करके उनको शरीअत का पाबन्द बनाने के बजाए बिगाडता है और शरीअत की ख़िलाफ वर्ज़ी करने में दिलैर और जरी बनाता है. यही हाल वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत के हकीमुल उम्मत थानवी साहब का है. क्यूँ कि उनकी सवानेह हयात और मल्फ़ूज़ात पर मुश्तमिल कसीरुत्ता'दाद कुतुब में ऐसे सेंक्ड़ों वाके़आत व अक़्वाल मौजूद हैं कि थानवी साहब शरीअत के क़ानून के ख़िलाफ अपनी ज़ाती राय और नीजी अमल को अहम्मियत दे कर मुज़्हिका ख़ैज़ अहकाम घड लेते थे. यहाँ इतनी गुन्जाइश नहीं कि उन तमाम वाके़आत व अक़्वाल को पैश करके उसके ज़िम्न में तफ्सीली तब्सेरा लिखा जाए. ता हम ज़ैल में चन्द वाके़आत बहुत मुख़्तसर तब्सरे के साथ पैशे ख़िदमत हैं:

ज़रर या'नी नुक़्सान से बचने के लिये झूट बोलना जाइज़ है !!!

सच बोलना और झूट बोलने से बचना, येह इस्लाम का ऐसा नफीस क़ानून है कि कुरआन शरीफ और अहादीसे करीमा में इसकी बडी ताकीद फरमाई गई है. बुज़ुर्गाने दीन ने हमेशा सिद्क़ का दामन थामा और झूट से इज्तिनाब फरमाया. **सुल्ताने औलिया, शैख़ुल मशाइख़, कुत्बुल अक़्ताब, हुज़ूर सय्यदना मुहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी गौसुल आ'ज़म दस्तगीर बगदादी रदियल्लाहु तआला अन्हु**

का मशहूर वाके़आ है कि आप बचपन में एक क़ाफले के हमराह अपने घर से बगदाद शरीफ तहसीले इल्म के लिये जा रहे थे. अस्नाए राह डाकूओं ने काफले को घेर लिया और लूट लिया. हुज़ूर गौसे पाक को छोटा बच्चा समझ कर उनकी तलाशी भी न ली. सिर्फ पूछा बच्चे ! तुम्हारे पास कुछ माल है ? आपने फरमाया कि हाँ ! मेरे पास चालीस दीनार हैं, जो मेरी वालिदा माजिदा ने कमीस के अन्दर वाली जेब में सी दिये हैं. इतना फरमाने के बाद आपने फौरन वोह रक़म निकाल दी और सच बोल कर एक मिसाल क़ाइम फरमा दी. ऐसी भारी रक़म के चले जाने के नुक़्सान से बचने के लिये भी झूट न बोला बल्कि सच बोलने का परचम लहेराया.

मगर वहाबी, देवबन्दी और तब्लिगी जमाअत के नाम निहाद मुजद्दिद जनाब थानवी साहब का फत्वा बर अक्स है. मुलाहेज़ा फरमाएँ.

فرمایا کہ ایک بی بی کا خط آیا ہے۔لکھا ہے کہ بعض عورتیں ایسی ہیں کہ وہ قرض لیجاتی ہیں اور پھر واپس نہیں دیتیں۔اب میں یہ کرتی ہوں کہ جب کوئی قرض مانگنے آتی ہے، کہہ دیتی ہوں کہ میرے پاس نہیں۔اس جھوٹ سے بچنے کا علاج فرمایا جاوے، میں نے لکھ دیا کہ اس جھوٹ سے گناہ ہی نہیں ہوتا، اسی سلسلہ میں فرمایا کہ ضرر سے بچنے کے لیے جھوٹ بولنا جائز ہے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۴، قسط۵، صفحہ۵۰۰، ملفوظ۹۶۰

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۸، صفحہ۳۳۴، ملفوظ۴۳۰

(۱۷/شعبان المعظم ۱۳۵۱ھ-بعد نماز جمعہ کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

फरमाया कि एक बीबीका ख़त आया है. लिखा है कि बाज़ औरतें है कि वोह क़र्ज़ ले जाती हैं और फिर वापस नहीं देतीं. अब मैं येह करती हूँ कि जब कोई क़र्ज़ मांगती है, कह देती हूँ कि मेरे पास नहीं. इस झूठ से बचने का इलाज फरमाया जाए, मैंने लिख दिया कि इस झूट से गुनाह ही नहीं होता, इसी सिल्सिले में फरमाया कि ज़रर से बचने के लिये झूट बोलना जाइज़ है.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर:मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द:4, क़िस्त:5, सफ्हा:500, मल्फूज़:960

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन), अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर:मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 8, सफ्हा 334, मल्फूज़ 430

(17 / शाबानुल मुअज़्ज़म स.1351 हि. बाद नमाज़े जुम्आ की मजलिस)

थानवी साहब ने आम हुक्म नाफिज़ कर दिया कि **''ज़रर से बचने के लिये झूट बोलना जाइज़ है.''** अब हर शख़्स झूट बोलना शुरू कर देगा. बहाना मिल गया कि अगर सच बोलता हूँ, तो नुक़्सान होता है. तिजारत में ख़सारा होता है. नक़्ली माल कोई नहीं ख़रीदेगा, नक़्ली माल को झूट बोल कर अस्ली कहता हूँ फौरन बिकता है. भला हो थानवी साहब का ! कैसा मीठा और नफा बख़्श फत्वा सादिर फरमा दिया. नुक़्सान से बचने के लिये झूट बोलना जाइज़ क़रार दे कर छोटे लोगों पर एहसान और करम फरमाया. काज़िबीन की दस्तगीरी फरमाई. अब थानवी साहब के तुफैल ख़ूब झूट बोलेंगे और ख़ूब तिजारत चमकाएंगे. अब तो झूट बोलने का लाइसन्स(Licence) मिल गया. क़यामत तक की हमारी नस्लें इस लाइसन्स के तुफैल ख़ूब झूट बोलें और ख़ूब कारोबार फैलाएँ, चोरी करें, गबन करे, ख़यानत करें, जो जी में आये वोह खुर्द बुर्द करें, सब थानवी साहब के सदक़े और वसीले से रवा है.

सूद लो, फिर आ कर मस्अला पूछो

उर्दू ज़बान का मशहूर महावरा है कि **''पानी पी कर ज़ात पूछना''** बे अक़्ल व बे फहम लोग ही ऐसा करते हैं. पहले काम कर लेते हैं, फिर पूछते हैं कि मैंने जो काम किया है, वोह जाइज़ है या ना जाइज़ ? लिहाज़ा अक़्लमन्द हज़रात हमेशा उर्दू ज़बान की इस मिस्ल पर अमल करते हैं कि **''पानी पीजीये छानकर, गुरू पकडिये पहचान कर,''** मगर थानवी साहब पानी पूछ कर ज़ात पुछने का मश्वरा दे रहे

हैं. एक शख़्स ने सूद की रक़म के तअल्लुक़ से इस्तिफ्सार किया, जवाब में थानवी साहब ने लिखा कि क्या करूँ ? येह बाद में पूछना. पहले ले लो और ले कर मेरे पास चले आओ और फिर आ कर मस्अला पूछना. मुलाहेज़ा फरमाएँ:

فرمایا کہ ایک صاحب کا خط آئرلینڈ سے آیا ہے۔ لکھا ہے کہ میں عنقریب ہندوستان آنے والا ہوں اور میرا روپیہ بنک میں جمع ہے۔ اس کے سود کو لے کر کہاں خرچ کرنا چاہیے؟ میں نے جواب میں لکھ دیا ہے کہ اس کو لے کر ہندوستان آجاؤ اور پھر آکر مسئلہ پوچھو۔ ایسا جواب اس لیے لکھا کہ نازک مسئلہ ہے، معلوم نہیں تحریر سے کچھ غلط فہمی ہوجاوے۔

(۱) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ، از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) جلد۳، قسط۵، صفحہ۴۶۶، ملفوظ۷۵۴

(۲) الافاضات الیومیہ من الافادات القومیہ (جدید ایڈیشن) از: اشرف علی تھانوی، ناشر: مکتبہ دانش دیوبند (یوپی) حصہ۶، صفحہ۲۵۰، ملفوظ۳۳۷

(۱۵/ جمادی الاولیٰ ۱۳۵۱ھ - پنج شنبہ، بعد نماز ظہر کی مجلس)

हिन्दी अनुवाद

फरमाया कि एक साहब का ख़त आयरलेन्ड से आया है. लिखा है कि मैं अन्क़रीब हिन्दुस्तान आने वाला हूँ और मेरा रूपिया बेन्क में जमा है. उसके सूद को ले कर कहाँ ख़र्च करना चाहिये? मैंने जवाब दिया है कि उसको ले कर हिन्दुस्तान आ जाओ और फिर आ कर मस्अला पूछो. ऐसा जवाब इस लिये

लिखा कि नाज़ुक मस्अला है, मालूम नहीं तहरीर से कुछ गलत फहमी हो जावे.

: हवाला :

(1) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया, अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) जिल्द 3, क़िस्त 5, सफहा 466, मल्फ़ूज़ 754

(2) अल इफाज़ातिल यौमिया मिनल इफादातिल क़ौमिया (जदीद एडीशन) अज़: अशरफ अली थानवी, नाशिर: मक्तबए दानिश देवबन्द (यू.पी) हिस्सा 6, सफहा 250, मल्फ़ूज़ 337

(15/ जमादिल उला 1351 हि., पन्ज शम्बा, बाद नमाज़े ज़ोहर की मजलिस)

वाह ! क्या हीला है, क्या बहाना है ! नाज़ुक मस्अला है, तहरीर से गलत फहमी हो जाने का बहाना ढूँढ निकाला और सूद जैसे मस्अले में भी अपनी ला इल्मी का ऐब छुपाने के लिये **''गलत फहमी हो जाने का''** बहाना पैश करके साइल को कैसा झाँसा दिया जा रहा है. साइल बेन्क के सूद की रक़म को हलाल नहीं समझ रहा है. उसके हलाल होने में साइल को तरद्दुद है. येह रक़म हलाल है. या हराम ? इसका इल्म नहीं बल्कि गालिब गुमान हलाल न होने पर है. इसी लिये तो आयरलेन्ड (Ireland) जैसे मुल्क से थानवी साहब को ब ज़रीए ख़त पूछ रहा है.

लैकिन देवबन्दी जमाअत का जाहिल नाम निहाद मुजद्दिद ऐसा आसान मस्अला बताने में भी अपनी तख़रीबी ज़हनियत का मुज़ाहेरा कर रहा है. बल्कि एक ख़तरनाक अन्दाज़ में मस्अला बता रहा है.

● **''सूद ले कर हिन्दुस्तान आ जाओ, फिर आ कर मस्अला पूछो''** येह जवाब कितना मोहलिक और गुमराही का दरवाज़ा खोलने वाला है, वोह मुलाहेज़ा फरमाएँ:

(1) अगर येह सूद की रक़म लेनी हराम है, तो फिर ले लेने से हराम काम का इर्तिकाब तो हो गया. फिर आ कर मस्अला पूछने से क्या फाइदा ?

(2) अगर यही तरीक़ा आम कर दिया जाएगा, तो फिर किसी भी मस्अले में अवाम फे'ल के हराम या हलाल होने की मालूमात हासिल करने की दरकार न करेंगे, बल्कि बे धडक उस फे'ल को कर डालेंगे और बाद में मालूम करेंगे कि हमने जो काम किया है वोह हराम है या हलाल ?

(3) अगर कोई शख़्स किसी ऐसी औरत से निकाह करना चाहता है, जिस से उसका निकाह हराम है. मस्लन बीवी को तलाक़ दी है और बीवी अभी इद्दत में है और वोह शख़्स अपनी साली से निकाह करना चाहता है, जो शरअन हराम है. तो क्या ऐसे शख़्स को भी यही जवाब दिया जाएगा कि पहले निकाह करलो, फिर आ कर मस्अला पूछना.

(4) इसी तरह शरीअते मुतह्हरा के बे शुमार फिक़्ही मसाइल जो फे'ल के हलाल या हराम होने के तअल्लुक़ से हैं. इन मसाइल की कोई शख़्स रिआयत ही न करेगा बल्कि बे ख़ौफ हो कर उस फे'ल का इर्तिकाब कर डालेगा. बाद में पूछेगा कि जो काम मैंने किया है, उसका शरअन क्या हुक्म है ?

(5) अगर थानवी साहब को साइल का पूछा हुवा मस्अला याद नहीं था, तो साफ जवाब लिख देना था कि मुझे मस्अला याद नहीं, वहाँ किसी आलिम से पूछ लो. या कम अज़ कम इतना जवाब में लिख देना था कि अभी सूद की रक़म मत लेना, यहाँ आ कर गुफ्तगू करने के बाद फैसला करना. मगर वाह रे थानवी साहब ! साइल को बराबरका फँसा दिया. **''सूद ले लो फिर आ कर मस्अला पूछो''** में शायद थानवी साहब की येह सियासत भी हो सकती है कि सूद ले लेने के बाद वोह जब यहाँ आएगा और मैं उसके हराम होने का मस्अला बताऊँगा, तो मस्अला मालूम करने के बाद मेरे सामने वोह शख़्स हरगिज़ येह इक़रार नहीं करेगा कि सूद की हराम की रक़म मैं अपने इस्तमाल में लाऊँगा, बल्कि मुझ से पूछेगा कि अब इस रक़म का मैं क्या करूँ ? तब मैं उसे येह रक़म अपने मद्रसे में देने का मश्वरा बल्कि हुक्म दे कर वोह रक़म उस से ले लूँगा. या फिर उसको समझा बुझा कर अपने लिये ही वोह रक़म ले लूँगा.

क्यूँकि........!!!!

थानवी साहब दूसरे को दी हुई रक़म को अपने लिये हिबा करा लेने के लिये ऐसी मन्तिक़ छाँटते थे कि देने वाला मजबूर हो जाता था और जिसको रक़म दी हुई होती थी, उस से रक़म वापस ले लेता था और थानवी साहब को दे देता था. थानवी साहब से हुस्ने ज़न रखने वाले किसी क़ारी को शायद येह बात ना गवार हो बल्कि येह बात थानवी साहब पर बोहतान, इफ्तिरा महसूस हो. लैकिन अल्हम्दुलिल्लाह! हम बगैर सुबूत व हवाला कोई इल्ज़ाम आइद नहीं करते बल्कि दलाइल व शवाहिद के बलबूते पर ही मीनारे तन्क़ीद तामीर करते हैं. एक हवाला क़ारईने किराम के ज़ेवर गोश व ज़ियाफते तब्अ की ख़ातिर

ऐसा पैश करते हैं कि जिसको मुलाहेज़ा फरमा कर थानवी साहब के अक़ीदे का क़स्रे उल्फत भी मुतज़ल्ज़िल हो कर मुन्हदिम हो जाएगा. इस हवाले से येह भी साबित होगा कि मक्रो फरेब के फन में थानवी साहब अपनी मिसाल आप थे. थानवी साहब की पैदाइश 1280 हि. है. थानवी साहब ने ख़ुद फरमाया है कि मेरा माद्दए तारीख़े विलादत **''करमे अज़ीम''** है और उसे **''मकरे अज़ीम''** भी कहिये. ख़ुद थानवी साहब ने माद्दए तारीख़ **''मकरे अज़ीम''** (Great fraud) के कई वाक़ेआत बयान फरमाए हैं. इन तमाम वाक़ेआत का ज़िक्र यहाँ मुम्किन नहीं. सिर्फ एक वाक़ेआ पैशे ख़िदमत है:

فرمایا کہ میں ایک مرتبہ گلاوٹھی جاتے ہوئے ہاپوڑ اُترا۔، وہاں کے سب انسپکٹر صاحب کو سپاہی نے اطلاع کردی۔ انھوں نے اپنے مکان پر ٹھہرایا اور شبیر علی کو پانچ روپیہ دینے لگے۔ انھوں نے کہا کہ میں بے اجازت نہیں لے سکتا۔ اس پر انھوں نے مجھ سے کہا کہ اجازت دے دیجیئے۔ میں نے کہا کہ آپ ان کے باپ کو دیتے ہیں یا مجھے یا ان کو۔ اگر آپ ان کو دیتے ہیں تو ان کے کام اس لئے نہیں آسکتا کہ ان کا نان ونفقہ ان کے والد کے ذمہ ہے۔ بس اب یہ دینا ان کے والد کو ہوا۔ ان کا نفع پانچ روپیہ کا ہو جاوے گا کہ پانچ روپیہ خرچ کے بچ جاوینگے۔ غرض ان کے کام تو نہ آیا۔ اور اگر ان کے والد کو دینا ہے، تو ان کو خبر بھی نہیں۔ تو جو مقصود ہے ہدیہ کا یعنی باہمی تعلقات کا بڑھنا، وہ حاصل نہ ہوا۔ اور اگر مجھ کو دینا ہے تو میرے ہوتے ہوئے ان کے ہاتھ میں دینا کیا معنی۔ تب انھوں نے بے تکلف کہہ دیا کہ مجھے تو آپ کو دینا مقصود ہے۔ میں نے کہا میرے ہاتھ میں دو۔ چنانچہ انھوں نے مجھے دیئے۔ میں نے لے لیئے۔

حسن العزیز، مرتبہ: منشی رشید احمد سنبھلی وغیرہ۔ جلد: ۲ کا حصہ: ۳، ۲۱/ رجب المرجب ۱۳۳۵ھ بروز یکشنبہ کی مجلس، ملفوظ نمبر: ۶۴۲، صفحہ: ۶۰، مسلسل صفحہ نمبر: ۳۴۸، ناشر: مکتبہ تألیفات اشرفیہ، تھانہ بھون، ضلع: مظفر نگر، (یوپی) اشاعت باردوم، ۱۳۸۶ھ مطابق ۱۹۶۷ھ)

हिन्दी अनुवाद

फरमाया कि मैं एक मरतबा गलाउठी जाते हुए हापूड उतरा, वहाँ के सब इन्सपेक्टर साहब को सिपाही ने इत्तेला करदी. उन्होंने अपने मकान पर ठहराया और शब्बीर अली को पांच रूपिये देने लगे. उन्होंने कहा कि मैं बे इजाज़त नहीं ले सकता. इस पर उन्होंने मुझ से कहा कि इजाज़त दे दीजिये. मैंने कहा कि आप इनके बाप को देते हैं या मुझे या इन को. अगर आप इन को देते हैं तो उनके काम इस लिये नहीं आ सकता कि इनका नानो नफ्क़ा इनके वालिद के ज़िम्मे है. बस ! अब येह देना उनके वालिद को हुवा. उनका नफा पांच रूपिये का हो जावेगा कि पांच रूपिया ख़र्च के बच जावेंगे. गरज़ उनके काम तो न आया. और अगर उनके वालिद को देना है, तो उनको ख़बर भी नहीं. तो जो मक़्सूद है हदिये का या'नी बाहमी तअल्लुक़ात बढना, वोह हासिल न हुवा. और अगर मुझ को देना है तो मेरे होते हुए उनके हाथ में

देना क्या मअना ? तब उन्होंने बे तकल्लुफ कह दिया कि मुझे तो आपको देना मक़्सूद है. मैंने कहा मेरे हाथ में दो. चुनान्चे उन्होंने मुझे दिये. मैंने ले लिये.

: हवाला :

हुस्नुल अज़ीज़, मुरत्तिबहुःमुन्शी रसीद अहमद सँभली वगैरा, जिल्दः2 का हिस्साः3, 21 /रजबुल मुरज्जब 1335 हि. बरोज़ यक शम्बा की मजलिस, मल्फूज़ नम्बरः642, सफहाः60, मुसल्सल सफहा नम्बरः348, नाशिरःमक्तबए तालीफाते अशरफिया, थाना भवन, ज़िलाः मुज़फ्फर नगर, (यू.पी) इशाअत बार दौम, 1386 हि. मुताबिक़ 1967 इ.)

मुन्दरजा बाला वाक़िए में थानवी साहब का मक्रो फरेब का फन ब कमाल अयाँ हो रहा है. थानवी साहब शब्बीर अली नाम के लडके को ब हैसियते खा़दिम साथ ले कर गलाउठी का सफर कर रहे थे. राह में हापूर (Hapur) नामी मक़ाम पर एक पोलीस इन्सपेक्टर के मकान पर ठहरे. खा़दिम शब्बीर अली को इन्सपेक्टर साहब ने पांच रूपिया ब तौरे हदिया दिये, लैकिन खा़दिम ने उसे क़बूल करने को थानवी साहब की इजाज़त पर मौक़ूफ किया. लिहाज़ा थानवी साहब से इन्सपेक्टर साहब ने इजाज़त तलब की.

येह वाक़ेआ 1335 हि. से पहले का है. क्यूँकि इस वाक़िए को

थानवी साहब ने अपनी 21/रजबुल मुरज्जब 1335 हि. की मजलिस में बयान फरमाया है. या'नी आज से तक़रीबन 95/ साल पहले का येह वाक़ेआ है. उस वक़्त पांच रूपिये की क़ीमत आज के हिसाब से तक़रीबन तीन हज़ार रूपिया थी. रूपिये की क़ीमत (Value) सोने (Gold) की क़ीमत पर मुन्हसिर होती. आज सोने का दाम एक तोले का बारह हज़ार (**Rs_12,000/=**) है लैकिन 1335 हि. में एक तोले का दाम सिर्फ बीस रूपिये थी. इस हिसाब से आज सोने का दाम छे सौ (600) गुना ज़ियादा है. लिहाज़ा उस ज़माने के पांच रूपिये की कुव्वते ख़रीदारी (Purchase strenth) इस ज़माने के ए'तबार से तीन हज़ार (3000) रूपिया है. अल मुख़्तसर ! 1335 हि. के पाचं रूपिये 1429 हि. (2008 इ.) के तीन हज़ार के बराबर थे.

अब मुन्दरजा वाक़ेआ के ज़िम्न में तब्सेरा मुलाहेज़ा फरमाएँ:

● पोलिस इन्सपेक्टर ने थानवी साहब के खा़दिम शब्बीर अली को पांच रूपिया हदिया दिया. थानवी साहब को ना गवार गुज़रा कि इतनी बडी रक़म मेरे बजाए मेरा खा़दिम क्यूँ ले ले. लिहाज़ा थानवी साहब ने वोह पांच रूपिये हासिल करने के लिये हाथ पांव मारने शुरू कर दिये. क्यूँकि पांच रूपिये की भारी रक़म देख कर थानवी साहब के मुँह में पानी भर आया था, लिहाज़ा वोह रक़म खुद के लिये हासिल करने के लिये बे तुकी मन्तिक़ के दाव खेलने शुरू किये.

● थानवी साहब ने इन्सपेक्टर साहब से पूछा कि येह रक़म **''आप इनके बाप को देते हैं या मुझे या इनको''**. या'नी थानवी साहब ने लेने वाले तीन फरीक़ बताए. (1) खा़दिम शब्बीर अली के वालिद

(2) ख़ुद थानवी साहब और (3) ख़ादिम शब्बीर अली. लैकिन थानवी साहब ने इन्सपेक्टर साहब को सवाल का जवाब देने की मोहलत ही नहीं दी, बल्कि सवाल करने के बाद तीनों फरीक़ की हैसियत व कैफियत बयान करनी शुरू कर दी.

● सब से पहले ख़ादिम शब्बीर अली की कैफियत बयान करते हुए फरमाया कि **''अगर आप इनको देते हैं, तो इनके काम इस लिये नहीं आ सकता कि इनका नानो नफ्क़ा इनके वालिद के ज़िम्मे है. बस अब येह देना इनके वालिद को हुवा.''** या'नी थानवी साहब ख़ादिम शब्बीर अली को बीच से बिल्कुल हटा रहे हैं कि शब्बीर अली हदिया लेने का अहल ही नहीं. क्यूँकि शब्बीर अली का नानो नफ्क़ा या'नी रोटी कपडा व दीगर मसारिफ शब्बीर अली के वालिद के ज़िम्मे हैं. इसका मतलब येह हुवा कि जिसका नानो नफ्क़ा उसके वालिद के ज़िम्मे हो, उसको हदिया बे सूद और बे माना होने की वजह से नहीं देना चाहिये. थानवी साहब ने अपने ख़र दिमागी से येह क़ानून इख़्तिराअ किया. शरीअत में इसकी कोई अस्ल नहीं, बल्कि येह क़ानून तो शरई व समाजी ए'तबार से भी क़ाबिले मुज़म्मत है. थानवी साहब के इस क़ानून के हिसाब से तो किसी भी बच्चे को तोहफा नहीं दिया जाएगा. क्यूँकि आम तौर से बच्चों का नानो नफ्क़ा उनके वालिदैन के ज़िम्मे होता है, बल्कि तजुरबा और मुशाहेदा है कि बच्चों को तहाइफ और हिदाया दे कर उनके वालिदैन को ख़ुश किया जाता है. लैकिन थानवी साहब की मन घडत और इख़्तिराई शरीअत में इन बच्चों को तहाइफ और हदिया नहीं देना चाहिये, जिनका नानो नफ्क़ा उनके वालिदैन के ज़िम्मे है.

● थानवी साहब ने तीन फरीक़ से पहले फरीक़ या'नी ख़ादिम

शब्बीर अली को हदियाा लेने का ना अहल साबित करके कनारे कर दिया. अब दो फरीक़ बचे. एक शब्बीर अली के वालिद और ख़ुद थानवी साहब. अब थानवी साहब की चालबाज़ी मुलाहेज़ा फरमाएँ कि वोह फरीक़ नम्बर :2 या'नी शब्बीर अली के वालिद को भी किस तरह रास्ते से हटा कर अपने लिये राह हमवार कर रहे हैं. थानवी साहब ने ख़ादिम शब्बीर अली का नानो नफ्क़ा शब्बीर अली के वालिद के ज़िम्मे होने का बहाना पैश करके कहा कि **''बस अब येह देना इनके वालिद को हुवा''** या'नी हदिया देने वाले पोलिस इन्सपेक्टर साहब से थानवी साहब ने फरमाया कि आप पांच रूपिये का जो हदिया शब्बीर अली को दे रहे हो, वोह हदिया शब्बीर अली के बजाए इनके वालिद को देना हुवा. आप तो अपने गुमान में येह समझ रहे हैं कि आप ख़ादिम शब्बीर अली को हदिया दे रहे हैं लैकिन शब्बीर अली का नानो नफ्क़ा शब्बीर अली के वालिद के ज़िम्मे होने की वजह से आपका हदिया शब्बीर अली के बजाए शब्बीर अली के वालिद को पहुँच रहा है. और शब्बीर अली के वालिद भी इस वक़्त आपका हदिया लेने के अहल नहीं. क्यूँकि इस वक़्त शब्बीर अली के वालिद यहाँ मौजूद नहीं. अब थानवी साहब की चालबाज़ी और धोका बाज़ी मुलाहेज़ा फरमाएँ.

● शब्बीर अली के वालिद यहाँ मौजूद नहीं लिहाज़ा उनको हदिया देना बे माना है. क्यूँकि ब क़ौल थानवी साहब **''और अगर इनके वालिद को देना है, तो उनको ख़बर भी नहीं. तो जो मक़्सूद है हदिये का या'नी बाहमी तअल्लुक़ात का बढना, वोह हासिल न हुवा''** या'नी थानवी साहब ने सोची समझी तरकीब के तहत ख़ुद साख़्ता नया क़ानून घड लिया कि जिसको हदिया देना हो, उसका मौजूद होना ज़रूरी है क्यूँकि अगर वोह मौजूद नहीं, तो हदिया देने का मक़्सद ही

फौत हो जाएगा. और हदिये का मक़्सूद आपस में तअल्लुक़ात बढाना है और वोह गैर मौजूदगी में हासिल न होगा.

थानवी साहब की येह ख़ुद साख़्ता अस्ल सरासर उसूले शरीअत और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सीरत के ख़िलाफ है. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमते आलिया में मक़ामाते गैर बल्कि ममालिके गैर से ब ज़रीए क़ासिद और नुमाइन्दा के हदाया व तहाइफ भेजे गए और उन हदाया व तहाइफ को हुज़ूर ने शरफे क़बूलियत से नवाज़ा. मस्लन:

(1) इसकन्दरिया के बादशाह मिक़ूक़स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के क़ासिद हज़रते हातिब बिन अबी बल्तआ रदियल्लाहु तआला अन्हु के ज़रीए तहाइफ भेजे.

(हवाला: **ख़साइसुल कुब्रा** अज़: अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती, उर्दू तर्जमा, जिल्द:2, सफ्हा:34)

(2) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शाहे इसकन्दरिया व मिस्र मिक़ूक़स के तहाइफ को क़बूल फरमाया.

(हवाला: **मदारिजुन्नुबुव्वत**, अज़: शैख़ मोहक़्क़िक़ शाह अब्दुल हक़ मोहद्दिसे दहेल्वी, उर्दू तर्जमा, जिल्द:2, सफ्हा:389)

जब इसकन्दरिया के बादशाह मिक़ूक़स ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिये तहाइफ हज़रते हातिब रदियल्लाहु तआला अन्हु को दिये, तब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तो मदीनए मुनव्वरा में रौनक़ अफरोज़ थे. हज़रते हातिब ने मिक़ूक़स से येह न फरमाया कि जिनको आप तोहफे दे रहे हो, वोह इस वक़्त यहाँ मौजूद नहीं और न ही हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते हातिब से येह फरमाया कि जब मैं वहाँ मौजूद नहीं था, तो तुमने मेरे

लिये तोहफे क्यूँ क़बूल किये ? बल्कि उन तोहफों को क़बूल फरमाया. साबित हुवा कि जिसको तोहफा देना हो, उसका मौजूद होना ज़रूरी नहीं.

लैकिन ! थानवी साहब ने जब देखा कि इन्सपेक्टर साहब ने शब्बीर अली को पांच रूपिया बतौरे हदिया दिये हैं. तो थानवी साहब की आँखें चौंधिया गईं. वोह रक़म अपने लिये हासिल करने के लिये हाथ पाँव मारने लगे. अपने माद्दए तारीख़े विलादत "**मकरेअज़ीम**" के फन की महारत और तजुरबे को काम में लाए और पहले शब्बीर अली को और फिर शब्बीर अली के वालिद को हदिया लेने के लिये ना अहल साबित करने के लिये बे तुकी और बे सरोपा बल्कि अहमक़ाना मन्तिक़ छाँटी और सीरते नबवी के ख़िलाफ ख़ुद साख़्ता ज़ाब्ता इख़्तिराअ किया.

● फरीक़े अव्वल व सानी या'नी शब्बीर अली और उनके वालिद को बीच से हटा देने के बाद अब फरीक़े सालिस की हैसियत से थानवी साहब ही बाक़ी रहे. जब थानवी साहब का कोई हरीफ ही बाक़ी न रहा, तब थानवी साहब इन्सपेक्टर साहब से पूछते हैं कि आपका मक़्सद किसको देना है ? हालाँ कि इस इबारत के शुरू में थानवी साहब ने इन्सपेक्टर साहब से पहले भी पूछा कि "**आप इनके बाप को देते हैं या मुझे या इनको ?**" लैकिन येह पूछने के बाद थानवी साहब ने इन्सपेक्टर साहब को जवाब देने का मौक़ा ही न दिया. सवाल पूछने के बाद ख़ामोश ही न हुए ताकि इन्सपेक्टर साहब कुछ जवाब दें बल्कि बक बक जारी रखी. "**अगर आप इनको देते हैं..... इलख़**" (आख़िर तक. पूरी इबारत गौर से पढ़ें) और जब अपनी बे तुकी मन्तिक़ के ज़रीए इन्सपेक्टर साहब को येह बावर करा दिया कि शब्बीर अली और

इनके वालिद आपका हदिया लेने की सलाहियत ही नहीं रखते, लिहाज़ा आपका इनको हदिया देना बे माना है. तब जवाब का मौक़ा दिया. अगर पहली मरतबा पूछते वक़्त इन्सपेक्टर साहब को जवाब देने का मौक़ा देते, तो ज़रूर इन्सपेक्टर साहब यही जवाब देते कि मैं शब्बीर अली को हदिया देना चाहता हूँ. क्यूँकि इबारत की इब्तिदा में ज़िक्र है कि इन्सपेक्टर साहब ने शब्बीर अली को ही हदिया दिया था और शब्बीर अली ने हदिया क़बूल करना थानवी साहब की इजाज़त पर मौक़ूफ रखा था और इसी लिये इन्सपेक्टर साहब ने थानवी साहब से इजाज़त माँगी थी. ख़ादिम शब्बीर अली बेचारे को क्या मालूम था कि इन्सपेक्टर साहब ने मुझे जो हदिया दिया है, उसको क़बूल करने को थानवी साहब की इजाज़त पर मौक़ूफ करने में **''लेने के देने पड जाना''** जैसा मआमला पैश आएगा.

ख़ैर ! थानवी साहब ने ज़हेनी तौर पर पूरी तरह से इन्सपेक्टर साहब को बावर करवा दिया कि (1) शब्बीर अली (2) शब्बीर अली के वालिद और (3) मैं या'नी थानवी साहब, इन तीनों में से पहले दो[2] फरीक़ आपका हदिया लेने के अहल ही नहीं और इनको हदिया देना बे माना है, तब पूछा कि **''किसको देना है ?''** लैकिन इस सवाल के पहले **''और अगर मुझ को देना है तो मेरे होते हुए इनके हाथ में देना क्या माना ?''** भी फरमा दिया और इस तरह अब थानवी साहब **''मुँह से बात उचकने''** वाले महावरे पर अमल पैरा होकर इन्सपेक्टर साहब से अपने लिये फिज़ा हमवार कर रहे हैं. बेचारे इन्सपेक्टर साहब ! कहे तो क्या कहे ? तीन फरीक़ में से दो फरीक़ या'नी शब्बीर अली और उनके वालिद तो मोअ्तिल हो गए और ले दे कर सिर्फ थानवी साहब ही बचे. अब उनके लिये येह कहे बगैर कोई चारा ही न था कि मैं

आपको देना चाहता हूँ. थानवी साहब को हुसूले हदिया की मन्ज़िल नज़र आने लगी. लिहाज़ा फौरन फरमाया कि **''मेरे हाथ में दो''**. फिर आगे फरमाते हैं कि **''चुनान्चे उन्होंने मुझे दिये. मैंने ले लिये''**. वाह ! थानवी साहब वाह ! महनत बराबर ठिकाने लगी. इन्सपेक्टर साहब को उल्टा पुल्टा समझा बुझा कर ऐसा मजबूर कर दिया कि उसने शब्बीर अली से पांच रूपिये वापस ले कर थानवी साहब को दे ही दिये और थानवी साहब **''माले मुफ्त दिले बे रहम''** वाली मस्ल के मिस्दाक़ बनकर शब्बीर अली की जेब में जाने वाले इन्सपेक्टर के हदिये को अपनी जेब की तरफ मोड कर **''मकरे अज़ीम''** के फन की अपनी महारत साबित कर दी.

अब हम फिर अस्ल उन्वान की तरफ लौटें:

(6) इसी लिये ही आयरलेन्ड से बेंन्क के सूद के मस्रफ के तअल्लुक़ से इस्तिफ्सार करने वाले शख़्स को थानवी साहब ने जवाब में लिखा कि **''उसको ले कर हिन्दुस्तान आ जाओ और फिर आ कर मस्अला पूछो''** मछली को फँसाने के लिये थानवी साहब जाल फेंक रहे हैं. सूद की रक़म ले कर मेरे पास आ जाओ, फिर मुझ से मस्अला पूछो. आ जा, फँसा जा के दामे फरेब और दामे तज़्वीर में फँसा न लूँ तो मेरा नाम भी थानवी नहीं. बस एक मरतबा मेरे पास आ जाओ. फिर देखो, मैं क्या क्या गुल खिलाता हूँ.

बक़ौल गंगोही साहब थानवी साहब को बिदअत का मफ्हूम ही मालूम नही.

थानवी साहब की इल्मी सलाहियत की तारीफ के पुल बाँधने में दौरे हाज़िर के मुनाफिक़ीन ज़मीन आस्मान के कुलाबे मिला देने में कोई कसर नहीं छोडते और थानवी साहब को **''मुजद्दिदे मिल्लत''** और **''हकीमुल उम्मत''** कह कर हर जगह उनकी इल्मी लियाक़त का बडे ज़ोरो शोर से ढोल पीटते रहते हैं. हमने यहाँ तक के बयान से अच्छी तरह साबित कर दिया कि वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत का मुजद्दिद और हकीमुल उम्मत सिर्फ जाहिल ही नहीं बल्कि **''अजहल''** या'नी बडा जाहिल और निहायत बे वक़ूफ था. अब हम एक शहादत ऐसी पैश कर रहे हैं कि इसको क़बूल करने से किसीको इन्कार की गुन्जाइश ही नहीं.

वहाबी देवबन्दी जमाअत के इमामे रब्बानी **मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहब** कि जिनको उलमाए देवबन्द ● क़दवतुल उलमा ● ज़ुब्दतुल फुक़्हा ● फख़्रुल मोहद्दिसीन ● क़ुत्बुल आलम ● गौसुल आ'ज़म ● उस्वतुल फुक़्हा ● जामेउल फज़ाइल ● मुजद्दिदे ज़मान ● वसीलतना इलल्लाह ● शैख़ुल मशाइख़ ● बे मिस्ल ● बे नज़ीर ● मुजस्सम नूर ● सर ता पा कमाल वगैरा अल्क़ाब से नवाज़ने में फख़्र महसूस करते हैं और जिनकी शख़्सियत देवबन्दी मक्तबए फिक्र के हर फर्द के लिये मुसल्लम है, वोह मौलवी रशीद अहमद गंगोही साहब थानवी साहब को एक ख़त में लिखते हैं कि:

''اس آپ کے قیاس کو اس پر حمل کیا جائے کہ آپ نے بدعت کے مفہوم کو ہنوز سمجھا ہی نہیں۔ کاش ایضاح الحق الصریح آپ دیکھ لیتے یا براھین قاطعہ کو ملاحظہ فرماتے یا یہ کہ تسویل نفس و شیطان ہوئی۔ اس پر آپ بدون غور عامل ہو گئے۔ اب امید کرتا ہوں کہ اگر آپ غور فرمائیں گے، تو اپنی غلطی پر مطلع و متنبہ ہو جاویں گے۔''

تذکرۃ الرشید، مصنف: مولوی عاشق الٰہی میرٹھی، ناشر: مکتبہ الشیخ، محلّہ مفتی، سہارنپور (یو) جلد: ۱، صفحہ: ۱۲۲

हिन्दी अनुवाद

''इस आपके क़यास को उस पर हमल किया जाए कि आपने बिदअत के मफ्हूम को हुनूज़ समझा ही नहीं. काश ईज़ाहुल हक्कुस्सरीह आप देख लेते या बराहीने क़ातेआ को मुलाहेज़ा फरमाते या येह कि तस्वीलुन्नफ्सो शैतान हुई. इस पर आप बदूने गौर आमिल हो गए. अब उम्मीद करता हूँ कि अगर आप गौर फरमाएंगे, तो अपनी गलती पर मुत्तलअ व मुतनब्बेह हो जावेंगे.''

: हवाला :

तज़्किरतुर्रशीद, मुसन्निफ : मौलवी आशिक इलाही मेरठी, नाशिर: मक्तबतुश्शैख़, महोल्ला मुफ्ती, सहारनपूर (यू.पी) जिल्द:1, सफ्हा:122

थानवी साहब और गंगोही साहब के दरमियान मीलाद शरीफ और मीलाद में क़याम करने के तअल्लुक़ से इख़्तिलाफ हुवा और उस में शिर्कत करना बिदअत है या नहीं ? इस सिल्सिले में दोनों के दरमियान एक अरसा तक ख़तो किताबत होती रही. ख़तो किताबत का येह सिल्सिला 1314 हि. से 1325 हि. या'नी तक़रीबन ग्यारह साल तक जारी रहा. इन दोनों या'नी गंगोही साहब और थानवी साहब के ख़ुतूत को गंगोही साहब के सवानेह निगार मौलवी आशिक़े इलाही मेरठी ने "**तज़्किरतुर्रशीद**" की जिल्द अव्वल के सफ्हा:114 से सफ्हा 136 तक नक़्ल किये हैं और उन ख़ुतूत में से सफ्हा:122 की गंगोही साहब की तहरीर मुन्दरजए बाला हवाला में पैश की गई है. जिसमें गंगोही साहब ने साफ लफ्ज़ों में थानवी साहब को लिखा है कि "**आपने बिदअत के मफ्हूम को हुनूज़ समझा ही नहीं**" या'नी बक़ौल गंगोही साहब अभी तक थानवी साहब को बिदअत का मफ्हूम ही नहीं मालूम. थानवी साहब के इल्म की क़ल्ई गंगोही साहब ने खोल डाली. दौरे हाज़िर के मुनाफिक़ीन जिन को चौदहवीं सदी का मुजद्दिद और चौदहवीं सदी का सब से बडा आलिम कहने में फख़्र महसूस करते हैं बल्कि बाज़ बे वक़ूफ अन्धे अक़ीदत मन्द तो थानवी साहब को सिर्फ चौदहवीं सदी का ही नहीं बल्कि इस उम्मत का सब से बडा आलिम

कहते हैं, उस थानवी साहब की इल्मी सलाहियत का पर्दा ख़ुद उनकी ही जमाअत के इमामे रब्बानी गंगोही साहब ने चाक बल्कि तार तार कर दिया और **घर का भेदी लँका ढाए** वाली मिस्ल साबित कर दी.

थानवी साहब की इल्मी बे माएगी बल्कि नरी जहालत के सबूत में सेंकडों इबारात पैश की जा सकती हैं, लैकिन तूले तहरीर के ख़ौफ से हमने चन्द इबारात ज़ियाफते तबअे क़ारईन की ख़ातिर पैश करके सुबुकदोश होते हैं. अलबत्ता पेशकर्दा इबारात से रोज़े रौशन की तरह साबित हो रहा है कि वहाबी देवबन्दी और तब्लीगी जमाअत का नाम निहाद मुजद्दिद मौलवी अशरफ अली थानवी जाहिल था.

"**मुतालए बरेल्वियत**" नामी रुस्वाए ज़माना किताब के मुसन्निफ **प्रोफेसर ख़ालिद महमूद मान्चेस्टरी साहब** को हम जवाबन येह पहला तोहफा दे रहे हैं. इमामे इश्क़ो मोहब्बत, आशिक़े रसूल, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमामे एहले सुन्नत, **मौलाना शाह अहमद रज़ा मोहक़्क़िक़े बरेल्वी** के ख़िलाफ बे बुनियाद और ख़ुद साख़्ता इल्ज़ामात और इत्तिहामात से लबरेज़ उनकी रुस्वाए ज़माना किताब के जवाब की येह पहली क़िस्त है. कुल आठ जिल्दों पर मुश्तमिल प्रोफेसर की किताब "**मुतालए बरेल्वियत**" का मुकम्मल जवाब इसी तरह क़िस्तवार दिया जाएगा और तक़रीबन साठ (60) से भी ज़ाइद क़िस्तों में तफ्सीली जवाब मुकम्मल होगा (इन्शाअल्लाह तआला व हबीबोहु सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)

नाज़िरीने किराम की ख़िदमत में इत्तेलाअन अर्ज़ है कि "**मुतालए बरेल्वियत**" के जवाब की दूसरी क़िस्त "**उलमाए देवबन्द की महफिलें**" नाम से अन्क़रीब मन्ज़रे आम पर आएगी. इस किताब में थानवी साहब की महफिल में की जाने वाली फहश और बे हयाई पर

मुश्तमिल गुफ्तगू, उलमाए देवबन्द के अकाबिरीन की इश्क़ बाज़ी, शौक़े लवातत और मसाइले दीनिया समझाने के लिये दी जाने वाली फहश मिसालें और दीगर लग्वियात पर मुश्तमिल तक़रीबन एक सौ (100) इबारात व हवाले पैश किये जाएँगे. जिनको पढ कर प्रोफेसर मान्चेस्टरी साहब की हालत यक़ीनन **''चोर की माँ कोठी में सर दे कर रोती है''** जैसी होगी.

न तुम सदमे हमें देते,
न हम फरियाद यूँ करते
न खुलते राज़ सरबस्ता,
न यूँ रुस्वाइयाँ होतीं
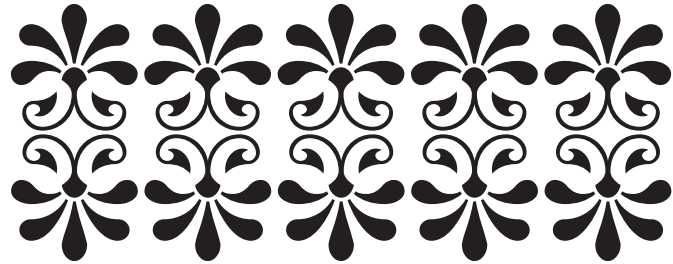
मसादिर व मराजेअ

नम्बर	नामे कुतुब	मुसन्निफीन, मुअल्लिफीन
1	क़ुरआन मजीद	कलामुल्लाह तआला
2	मुतालए बरेल्वियत	डाक्टर ख़ालिद महमूद मान्चेस्टरी
3	कलेमतुल हक़ (मल्फ़ूज़ाते थानवी)	मौलवी अब्दुल हक़ सकनाकोटी
4	अल इफाज़ातिल यौमिया-चार जिल्दें	थानवी साहब के मल्फ़ूज़ात का मजमूआ
5	अल इफाज़ातिल यौमिया-जदीद एडीशन	पान्च जिल्दें
6	हुस्नुल अज़ीज जिल्द - सौम	मौलवी यूसुफ बिजनोरी वगैरा
7	हुस्नुल अज़ीज जिल्द - अव्वल	ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन गौरी मजज़ूब ''गौरी''
8	हुस्नुल अज़ीज जिल्द - चहारुम	मौलवी यूसुफ बिजनोरी व मौलवी मुहम्मद मुस्तफा
9	फुयुज़ुल ख़लाइक़	मौलवी अब्दुल ख़ालिक टान्डवी
10	अशरफुस्सवानेह - जिल्द, 1	ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन गौरी मजज़ूब ''गौरी''
11	मज़ीदुल मज़ीद	मौलवी अब्दुल मजीद बछरायूनी
12	अशरफुस्सवानेह - जिल्द, 3	ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन गौरी मजज़ूब ''गौरी''
13	फतावा रज़विया (मुतरजिम) जिल्द, 18	इमाम अहमद रज़ा मोहक़्क़िक़े बरेल्वी
14	मुस्नदे इमाम अहमद	इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल
15	कन्ज़ुल उम्माल	इमाम अलाउद्दीन अली अल मुत्तक़ी बिन हिस्सामुद्दीन
16	फतावा रज़विया (मुतरजिम) जिल्द, 6	इमाम अहमद रज़ा मोहक़्क़िक़े बरेल्वी
17	हुस्नुल अज़ीज जिल्द - दौम	मुन्शी रशीद अहमद संभली
18	तज़किरतुर्रशीद	मौलवी आशिक़ इलाही मेरठी
19	ख़साइसे कुबरा	अल्लामा जलालुद्दीन सयूती
20	मदारिजुन्नुबुव्वत	शैख़ मोहक़्क़िक़ अब्दुल हक़ मोहद्दिसे दहेलवी